कितने दूर कितने पास

विचारक : आचार्य श्री शम्स नवेद उस्मानी

लेखक : एस० अब्दुल्लाह तारिक़

उस परमेश्वर के नाम से जो अत्यन्त दयावान व कृपावान है

कितने दूर—

वेद और क़ुरआन फ़ैसला करते हैं

कितने पास

विचारक : आचार्य श्री शम्स नवेद उस्मानी

लेखक : एस० अब्दुल्लाह तारिक़

प्रकाशक :

रौशनी पब्लिशिंग हाउस

बाज़ार नस्रुल्लाह खां, रामपूर-२४४ ९०१ (यू०पी०)

प्रकाशन :

रौशनी पब्लिशिंग हाउस

बाज़ार नस्रुल्लाह खां, रामपूर-२४४ ९०१ (यू०पी०)

पहली बार : नवम्बर १९८९

मूल्य : रू० २५/-

मुद्रक जे०आर० आफ़सेट प्रेस, सूईवालन, दिल्ली-६

मार्ग दर्शक शिलाएं

सफ़र से पहले

मेरी संसार-नगरी में आज फिर बलवा हुआ।
कल भी हुआ था।
डर है कल फिर होगा।
मरने वाले मेरे ख़ून के रिश्ते से भाई हैं, मारने वाले भी मेरे ख़ून के रिश्ते से भाई हैं।
इस नगर में सभी का ख़ून एक है, क्योंकि सब के परमपूर्वज एक माँ बाप हैं। सब ख़ून के रिश्ते से आपस में भाई भाई हैं।
फिर भी धर्म के नाम पर कितने ही शव गिर चुके हैं। अभी न जाने कितने और गिरना हैं। यदि सोचें तो यह लड़ाई इन्सान और इन्सान के बीच नहीं है बल्कि इन्सान और भगवान के बीच है। इन्सान का भगवान से युद्ध बन्द कब होगा? कैसे होगा?

सब ने अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार समाधान प्रस्तुत किए।
अधिकतर का विचार है कि–
"उन के मान्य धर्मों के अनुसार यदि सब अपना धर्म-परिवर्तन कर लें तो शान्ति स्थापित हो जाएगी।"
परन्तु यह समाधान नहीं है क्योंकि सभी के तथा कथित धर्मों के अन्दर ही अनेकों उपधर्म तथा समुदाय बने हुए हैं और उन के अपने भीतर उपद्रव जारी है। इस फूट ने इस समाधान की भी जान निकाल दी। फिर कुछ ने यह कहा कि–
"धर्म को ही समाप्त करो। मानवता सब से बड़ा धर्म है"। परन्तु यह भी बनावटी हल है।
ईश्वर से कटकर इन्सान, इन्सान नहीं रह सकता। मानवता के दावेदारों ने मानवता के अपने-अपने आधार निश्चित कर रखे हैं। उन के अपने ही बीच युद्ध हो रहा है।

आचार्य श्री शम्सनवेद उस्मानी ने बताया–

".."१ उन्होंने जो बताया वह आप आगामी पन्नों में देखेंगे।

उन के १६ वर्षों के तुलनात्मक अध्ययन का एक भाग प्रस्तुत है।
विचार उन के हैं, शब्द मेरे।

निश्चय ही दृष्टिगत लेख के अधिकतर भाग आप के मन की गहराइयों में उतर जायेंगे क्योंकि यह ईश्वर के पवित्र ग्रन्थों से निकले सत्य पर आधारित हैं, मान्यवर आचार्य के तपस्वी मन से निकले हैं और इन्हें आप तक पहुँचाने में मेरे बहुत से सहयोगियों का निष्कामी योगदान शामिल है।

हाँ इस में ऐसे भी भाग होंगे जो पूर्णतः स्पष्ट न होंगे। यह मेरे शब्दों का दोष है। आचार्य श्री शम्स नवेद उस्मानी के शोधकार्य पर आधारित जो शृंखला भेंट करने का हम ने निश्चय किया है, वर्तमान लेख उस का प्रथम भाग है।

अपना मत हमें अवश्य भेजिए।
आगामी भाग की प्रतीक्षा कीजिए और इसी बीच–
ईश्वर से अपने और हमारे लिए सद्मार्ग को पाने तथा उस पर जमे रहने की प्रार्थना कीजिए।

आपका हमसफ़र
एस० अब्दुल्लाह तारिक़
विश्व कल्याण आगम संस्थान (विकास)
बाज़ार नस्रुल्लाह खाँ
रामपुर-२४४९०१ (यू० पी०)

२ अक्तुबर १९८९

धर्म परिवर्तन

(आचार्य श्री शम्स नवेद उस्मानी के एक प्रवचन के सम्पादित अंश)

"...... आज इन्सान् को सब से अधिक घृणा इस से है कि उस का धर्म परिवर्तन किया जाए। मुसलमान को गुस्सा आता है इस बात पर कि उस की शुद्धि की जाए और हिन्दू को इस पर गुस्सा आता है कि उस का धर्म परिवर्तन किया जाए। लेकिन मूल धर्म की रूपरेखा ही को यदि माँ-बाप ने बदल दिया हो तो क्यों स्वीकार किया जाता है? स्वयं धर्म ही को यदि पूर्वजों ने परिवर्तित कर दिया हो तो क्यों गुस्सा नहीं आता? गुरु खो जाने के कारण धर्म में परिवर्तन हुआ। वास्तविक गुरु कोई नहीं है। वास्तविक गुरु केवल ईश्वर है। इस लिए कहा गया था भारतवर्ष के धर्म में कि "गुरुदेव", अर्थात गुरु तो केवल देव ही है। दानव आया। उसने कहा, "हाँ ठीक है। इस का अर्थ यह है कि जो गुरु है वह ही देव है। वह ही ईश्वर है।" अर्थ ही बदला गया।

उस गुरुदेव ने पृथ्वी पर अपने प्रतिनिधि भेजे। वह भी गुरु थे। गुरुओं की शिक्षा जब भी समझ में न आएगी, शुद्ध धर्म में परिवर्तन हो जाएगा।

गौतम बुद्ध के विषय में लिखा है कि तमाम ब्राह्मण उन के पीछे मारने को फिरते थे। धर्म को निकाल दिया गया यहीं से। चीन में शरण ले रहा है कहीं जापान में शरण ले रहा है। उस का दोष यह था कि उस ने यह सत्य कह दिया था कि, "लोगो! परमात्मा और आत्मा के रहस्य को सोच रहे हो बैठे हुए और जिस काम के लिए पैदा किया था वह करते नहीं हो।" उन्हों ने कहा था कि, "जीवन किस लिए बनाया इसका ठीक से प्रयोग करो, कैसे बनाया यह सोचना तुम्हारा काम अभी नहीं है।" तो कहा कि "यह परमात्मा ही को नहीं मानता। यह आत्मा ही को नहीं मानता, यह तो मौन रहता है ईश्वर के विषय में। चुप रहता है।"

जब ब्राह्मण गौतम बुद्ध पर चढ़कर आए और उन से कहा कि, "ईश्वर को नहीं मानते? आत्मा को नहीं मानते?" तो उन्होंने कहा कि, "भाई बैठ जाओ।"

पहली बात उन्होंने यह पूछी कि, "जंगल में पड़ा हुआ हूं राज पाट छोड़कर हर समय मानव के लिए चिन्तित हूं। यह मेरा हाल जीवन का है। यह किसी ऐसे व्यक्ति का हाल हो सकता है जो ईश्वर को न मानता हो?"
कहा कि, "ऐसा तो नहीं होना चाहिए, किन्तु गुरुओं ने यह कहा है कि तुम मानते ही नहीं।"
उन्होंने कहा, "अब आप पधारें, आप के गुरु कौन हैं?" गुरु का नाम बताया। पूछा, "उनके गुरु कौन थे?" उन्होंने दूसरे गुरु का नाम लिया। पूछा, "उन का गुरु कौन था?"

देखा आपने? यह बुरा लगता है आदमी को जब यहां पोल खुलने लगती है ना। तीसरे पर जाकर रुक गए, तीसरा गुरु याद नहीं आ रहा।

"क्या भूल गए उन को? तो गुरु की शिक्षा क्या याद रखोगे"। कहा, "अच्छा एक बात बताओ। क्या तुम्हारे गुरु ये जो तीनों हैं, क्या उन्होंने ईश्वर को देखा था?"

अब तो बेचारा हिन्दू इस दशा में पहुँच गया है कि यह समस्या ही न रही कि ईश्वर को सोचना है। वास्तविक ईश्वर को तो बिल्कुल निकाल दिया मस्तिष्क से। आवश्यकता ही नहीं महसूस होती कि कैसा ईश्वर। जितना गुरु बता रहा है काफ़ी है। उस समय ऐसा नहीं था। वेद के इतने क़रीब तो थे उस काल के लोग कि तुरन्त उन्होंन कहा, "असली परमात्मा ब्रह्म को उन्होंने नहीं देखा।" किसी ने यह नहीं कहा कि देखा। वरना आज तो कहते कि "हर चीज़ में ब्रह्म है। यह बैठा है ब्रह्म।" नहीं कहा उन्होंने।

कैसी विचित्र शिक्षा होती थी। ज़रा सी देर में सारे भ्रम समाप्त। यह है गुरु की पहचान। उन्होंने तुरन्त बात का रुख़ बदला–
"तुम्हारे गुरु ने सूरज भी देखा कभी? सूर्य?"
गुस्सा आ गया उन्हें। सोचा अपमान कर रहा है। बुद्ध ने फिर पूछा कि "कभी सूर्य देखा उन्होंने?" कहा "और क्या नहीं?"
पूछा, "क्या वे तुम्हें सूर्य तक जाने का साधन बता सकते हैं?"
उन्होंने कहा, "वाह! सूर्य तक कैसे पहुँचा देगा कोई!"
उन्होंने कहा–"जो उन्हें नज़र आ रहा है वह वहां तक नहीं पहुँचा सकते तुम्हें, जो ब्रह्म नज़र नहीं आ रहा उस तक कैसे पहुँचा देंगे?"

अभी आँखें नहीं खुलीं थोड़ा सा गुस्सा और आया। कहा, "क्या तूने देखा है ईश्वर को?"
कहा—"मैंने भी नहीं देखा मगर मैं उस तक पहुंचा दूंगा।"
"कैसे? तू कैसे पहुँचा देगा?"
उन्हों ने कहा—"मैंने सुना है, देखा नहीं है। मैंने सुना है श्रुति से, परमेश्वर की आवाज़ से, कि वह कैसा है, उस के गुण क्या हैं। वह है दया करनेवाला। सर्वदयामान है। रहमान है। रहीम है। सब से प्रेम करता है। सब को क्षमा करता है। ये उस के गुण हैं, मैं उस के गुणों को ग्रहण करना चाहता हूं और तुम से भी यही कहता हूं कि ये गुण ग्रहण करलो, तो जब एक सा स्वभाव होता है, तो उनके बीच में क्या चीज़ पैदा हो जाती है? मोहब्बत, प्रेम। तो जब मेरा और उसका गुण एक हो जाए, स्वभाव एक हो जाए ईश्वर का और आप का तो ईश्वर को आप से मोहब्बत हो जाएगी। ईश्वर आप को अपने पास बुला सकता है, लेकिन तुम अकेले उस से प्रेम का दावा करते रहो तुम ईश्वर तक नहीं जा सकते।"

जब शिक्षा को असली गुरु से सीधे नहीं लोगे, तो शुद्ध धर्म में परिवर्तन हो जाएगा। आज इसी क़ौम के अन्दर हरिजनों की करोड़ों की संख्या ऐसी है जो मनु को नहीं मानते। क्यों नहीं मानते? कहते हैं कि उन्होंने ज़ात पात हमारे ऊपर थोप दी। हमें तो ज़लील कर दिया। यदि कहीं उन्हें पता चल जाए कि ये उन्होंने नहीं सिखाया था, मनु का वृतांत क़ुरआन शरीफ़ में भी है और क़ुरआन शरीफ़ मनु पर इस आरोप का खण्डन करता है तो वह मनु से नफ़रत कैसे करेंगे? यह क़ुरआन मनु की बातें कहाँ से ढूंढ कर ले आया? ईश्वर को यह पता था कि मनु पर क्या आरोप लगेगा? यह आरोप लगेगा कि ज़ात पात क़ायम की। नफ़रत किस से हो रही है? ऋषि से। और वह ऋषि क्या कहता था? क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि बड़ी ज़ात वाले लोग मनु के पास आए और उन्होंने कहा कि "तेरी सभा में हम इस लिए नहीं बैठ सकते कि तेरे पास कुछ नीच लोग बैठे हैं"। यह है मनु जो नीची जाति को सीने से लगाए बैठे हैं। मनु ने कहा—

"इन को निकाल दूं? इन्होंने ईश्वर को अपने मन में जगेह दी है और तुम दौलत, लक्ष्मी के पुजारी, तुम्हें अन्दर बुला लूं? मैं इन्हें कैसे निकाल दूं जिन्होंने अपने मन में से सांसारिक दौलत की सारी भूखें निकाल दी हैं और अपने ईश्वर की बात कर रहे हैं।" यह लिखा है क़ुरआन में।

"कुरआन में एक जगह लिखा हैं कि मनु का धर्म भी तुम्हारे धर्म का एक नाम है।" हिन्दू, मुसलमान दोनों का एक ऋषि। अगर उन्हें यह पता चल जाए कि वह मनु की उम्मत हैं, उन का पन्थ हैं तो धर्म बदलता नहीं है। हम तो उस की हक़ीक़त की तरफ़ तुम्हें लौटा रहे हैं, जो मनु ने तुम्हें सिखाया था। और कौन मनु? यदि वह न होता तो तुम में से एक भी न होता। नौका डूब जाती।

हिन्दुओं की पुस्तकों में लिखा है कि एक नौका थी जिस को मनु का ईश्वर चला रहा था। वह पार हुआ। वह जो उस के भीतर पवित्र लोग बैठे थे वह पार हो गए बाक़ी सब कुटियाएं डूबीं, पहाड़ डूबे, महल डूबे, राजा डूबे, फ़कीर डूबे, एक आदमी भी नहीं बचा। जलमग्न हो गई सारी दुनिया, और जो पार हुआ वह मनु का नौका हुआ। बताओ जब मनु को नहीं जानते तो हम ने तो मनु का बेड़ा डुबो दिया। उसी को बुरा कहने लगे। मनु ने बचाया इन्सान को और उसी को बुरा कह रहे हैं, इस कारण कि शिक्षा बिगड़ कर रह गई मनु की।

यह है असली धर्म परिवर्तन। अपने मूल धर्म की शिक्षाएं पहचान कर उस की ओर लौटना। ऐसे धर्म परिवर्तन की बहुत आवश्यकता है।..................

१
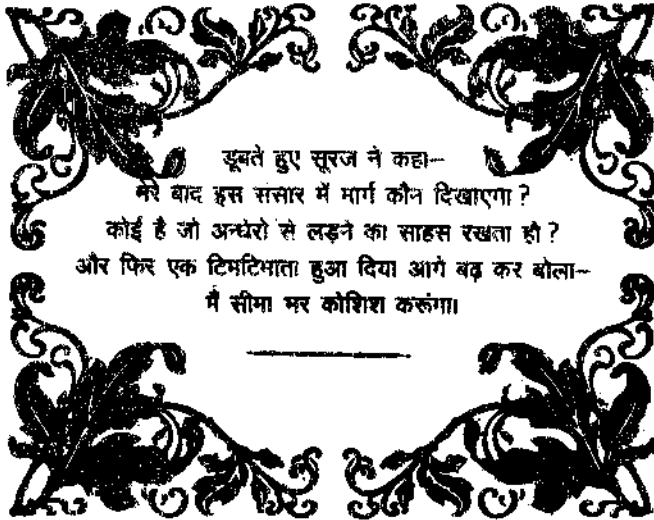
सनातन धर्म–दीन-ए- क़य्यिम

असीमित आतंकवाद:

पंजाब में आतंकवाद, आसाम और डार्जिलिंग में आतंकवाद, कश्मीर में आतंकवाद, श्री-लंका में आतंकवाद, जापान, थाईलैण्ड, कोरिया, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, लेबनान, आइरलैण्ड तथा अमरीका में आतंकवाद। पूरा विश्व जल रहा है। समस्त देशों की आधुनिक सेनाऐं लगी हुई हैं इस आग को बुझाने के लिए पर कमी के चिन्ह नजर आने तो दूर ठहराव भी नज़र नही आता। शोले पहले पृथ्वी तक सीमित थे अब आकाश से बातें कर रहे है। श्रीमती इन्द्रा गाँधी की हत्या पृथ्वी पर भारी सुरक्षा के बीच हुई। श्री ज़िया-उल-हक सैनिक विमान में आकाश में न बच सके। कोई अन्त नजर नहीं आता। कोई शक्ति इस फैलते आतंकवाद को रोकने मे समर्थ नहीं है। कोई उपाय नज़र नहीं आता। ऐसे में हम क्या करें? क्या बेबसी से ताकते रहें और धरती को झुलस जाने दें? आशा की एक ही किरण थी जो कहीं घोर अन्धेरों में खो गयी। धर्म! हम ने उसे पर्याप्त न समझा। उस एक किरण से न जाने कितने दीपक जलाये जा सकते थे। पर विश्वास हो तभी ना? विश्वास क्यों उठा? यह सहारा क्यों टूटा?

यह सहारा क्यों टूटा?

धर्म एक नहीं था। बहुत से धर्मों के ठेकेदार खड़े हो गये थे। हर एक का दावा था कि उसके पास "सत्धर्म" है। शेष सब अधर्म हैं। धर्म की दुहाई देने वाले धर्म के ही नाम पर लड़ पड़े थे। धर्मों ने ऐसी हिंसा भड़काई थी कि सारा भ्रम टूट गया। विश्वास ही जाता रहा था। तब यह तय किया गया कि अपने-अपने धर्म को सभी अपने ही जीवन तक सीमित रखें। यह तर्क भी पेट्रोल प्रमाणित हुआ जो ठण्डी करने के बजाये आग को और भड़का रहा था। ईश्वर ने आकाश से बड़े दुःख के साथ यह दृश्य देखा। उसने तो एक ही धर्म की स्थापना की थी। जब

जब धरती पर धर्म का नाश होता नज़र आया उसने अपने देवदूत भेज कर उसी एक सत्धर्म की पुनः स्थापना की। अब वह भी अपने प्रमाण पूरे कर चुका। अन्तिम देवदूत भी आकर चला गया। अब वह प्रतीक्षा कर रहा है। ईशदूतों के लाये सन्देश मौजूद हैं। इन्सान की समझ में आता है तो ठीक, वरना निर्णय का दिन भी आयेगा।

ईश्वर सभी का एक है लेकिन.......

आइये सिर जोड़ कर बैठें। अपने लिये इस संसार के लिये। ईश्वर के लिये। यदि धर्म से विश्व की आग ठण्डी करनी है तो पहले धर्मों की लड़ाई शान्त करें। संसार में जितने भी आज धर्म हैं वह किसी न किसी रूप में एक अन्तिम सत्ता की बड़ाई मे विश्वास रखते है। अल्लाह,लार्ड, ईश्वर या परब्रह्म के नाम से एक सर्वशक्तिमान अस्तित्व की मान्यता ही से हर धर्म शुरु होता है। हिन्दू से पूछिये– "क्या ईश्वर या परब्रह्म केवल हिन्दुओं का है?"– "नहीं सबका है"। मुसलमान से मालूम करें– "क्या अल्लाह सिर्फ़ मुसलमानों के लिये है?"– "हरगिज़ नहीं। इस संसार से परे दूसरे सभी संसारों के लिये भी है।"–ईसाई और यहूदी भी यही उत्तर देगा।–"लार्ड या गाड सर्वशक्तिमान है तथा सब का वही एक है।" मालूम हुआ कि यह केवल भाषाओं का अन्तर है। एक अन्तिम शक्ति को ही अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है। आप कहेंगे यह तो कोई नई बात न हुयी। यह तो सभी सदा से मानते आ रहे हैं। एक खुदा की खुदाई के बाद भी धर्म के झगड़े समाप्त नहीं होते।

धर्म की स्थापना ईश्वर ने की थी:

बस यहीं पर सारी गड़बड़ है। यदि ईश्वर एक है, परब्रह्म एक है और सदा से है एवं उसी को अलग-अलग भाषाओं में अल्लाह, लार्ड या गाड कहा जाता है तो यह असम्भव है कि वह इतने सारे धर्म संसार को दे। बहुत से धर्म अवश्य ही मानव जाति के अपने बनाये हुये होंगे। उस ने तो एक ही धर्म की स्थापना की थी। यही वेद कहते हैं। यही कुरआन ने बताया है। देख लीजिये–

> जहाँ आकाश और पृथ्वी मिले हुये थे और फिर अलग-अलग हुये वहीं जो धर्म की बुनियाद (मानव नहीं) ईश्वर ने रखी थी, उसी को पुनः

पाकर विश्व के ऋषिगण स्वयं भी शान्त होंगे और विश्व को भी शान्ति प्रदान करेंगे।[1]

क्या (इस अन्तिम ग्रन्थ कुरआन को भी वेद) न मानने वालों ने (अपने सर्वमान्य वेदों में) नहीं देख लिया कि आकाश और पृथ्वी परस्पर मिले हुये थे फिर हमने उन्हें अलग-अलग किया और हम ने वहाँ के अमृत जल से हर चीज़ को जीवन धर्म प्रदान किया? तो क्या अब भी वह लोग इस वेद[2] अर्थात कुरआन पर ईमान नहीं लायेंगे?[3]

वेद और कुरआन का धर्म एक ही है:

एक ईश्वर ने जो धर्म स्थापित किया था उसमें आगे चलकर अनेक कमियाँ आ गयीं अतः उसी प्राचीन व शाश्वत धर्म को स्थापित करने (ह०)[4] मनु (अ०)[5] आये तथा धर्म ग्रन्थ "वेद" संसार को दिये। फिर उसी ईश्वर की इच्छापूर्ति के लिये (ह०) मूसा (अ०) धर्म ग्रन्थ "तौरेत" के साथ आये। (ह०) ईसा (अ०) भी "इन्जील" में वही सन्देश लाये तथा अन्त में (ह०) मौहम्मद (स०)[6] "कुरआन" के साथ उसी एक धर्म को स्थापित करने आये। एक ईश्वर की इच्छा प्रत्येक युग के मनुष्यों के लिये भिन्न नहीं हो सकती। मूल मान्यतायें एक ही होंगी। फिर यह कैसे हुआ कि आदिकाल में (ह०) मनु (अ०) ने मनुष्यों को हिन्दु धर्म सिखाया, (ह०) मूसा (अ०) ने हज़ारों वर्ष बाद आकर उन्हें यहूदी बना दिया, (ह०) ईसा (अ०) ने फिर उन्हें ईसाई बनाया तथा अन्त में (ह०) मौहम्मद (स०) ने मुसलमान बनने को कहा! ऐसा हो नहीं सकता। हम से अवश्य ही भारी भूल हो रही है। यदि यह सभी ईशदूत, यह सभी ऋषिगण सच्चे थे और अवश्य ही सच्चे थे, उनके अपने जीवन इस के साक्षी हैं, उन के लाये हुये ईश्वरीय ग्रन्थ इस के गवाह हैं तो उन सभी ने एक ही धर्म की शिक्षा दी होगी।

---

(१) भावार्थ ऋग्वेद १:६२.६, ७, ११
(२) "वेद" शब्द का अर्थ है "ब्रह्म का निजज्ञान"
(३) भावार्थ कुरआन २१:३०
(४) (ह०) हज़रत
(५) (अ०) अलैहिस्सलाम (अर्थात उन पर शान्ति हो)
(६) स० सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (अर्थात उन पर शान्ति हो)

नाम उस धर्म का भले ही उन्होंने अपनी-अपनी भाषा में बताया हो। कुरआन इसे इस प्रकार स्पष्ट करता है--

> उस (ईश्वर) ने तुम्हारे लिये वही धर्म नियुक्त किया जो उस ने नूह (मनु) पर अवतीर्ण किया था और जो हमने (हे. मोहम्मद) तुम पर अवतीर्ण किया और वही जो हमने इब्राहीम व मूसा व ईसा पर यह कहते हुये उतारा था कि (इसी) धर्म को स्थापित करना तथा इसमें परस्पर टुकड़े-टुकड़े न हो जाना .... [1]

कु. ान बताता है--

> और इन्सान तो एक ही मत के मानने वाले थे फिर (बाद में) उन्होंने (परस्पर) मतभेद किया ...... [2]

इस सदा से एक चले आ रहे धर्म का नाम कुरआन ने अरबी भाषा "इस्लाम" बताया।
इस्लाम धर्म का ही नाम कुरआन "सनातन धर्म" (दीन-ए-क़य्यिम) [3] बताता है।
कुरआन उस का नाम "शाश्वत धर्म" (दीन-ए-कय्यिमा) बताता है। [4] ह० मोहम्मद स० ने कुरआन के धर्म को "स्वधर्म" तथा "स्वभाव नियत कर्म" (दीन-ए-फ़ित्‌रत) बताया।

अब स्वयं देख लें कि मानव जाति के प्रथम सिरे पर जो सनातन धर्म/शाश्वत धर्म/स्वभाव नियत-कर्म/स्व-धर्म ईश्वर ने स्थापित किया था, अन्त तक, कुरआन भेजते समय तक, उसका नाम भी नहीं बदला। और यह बताया कि धर्म तो सदा से यही एक रहा है परन्तु लोगों ने अपनी इच्छा अनुसार परस्पर विरोध करके भिन्न-भिन्न मत बना लिये। सच्चाई जानना ज़रा भी मुश्किल नहीं है। हाँ! इस के लिये अपने आडम्बरों को अवश्य त्यागना होगा। ईश्वरीय ग्रन्थ

---

(१) कु० ४२:१३
(२) कु०१०:१९
(३) कु० ३०:४३
(४) कु० ९८:५

मौजूद हैं। तुलना करके देख लें। वेद उठा कर देखें, क़ुरआन पढ़ कर देखें, मूल मान्यतायें एक ही हैं। मूल धर्म भी एक है। धर्म का नाम भी एक है। जब पहले सिरे तथा अंतिम सिरे पर आने वाले धर्म ग्रन्थ एक ही धर्म प्रस्तुत करते हों तो अवश्य ही बीच के सारे ग्रन्थों ने भी वही एक धर्म दिया होगा।

फिर मतभेद क्यों हुआ?

फिर यह इतनी भारी भूल कैसे हुई? इतने बहुत से धर्म, सब की अलग-अलग मान्यतायें, यह कैसे हुआ? इस का कारण है अपने-अपने मान्य धर्म ग्रन्थों से धर्म को न समझ पाना। मुसलमान केवल १४०० वर्ष पुरानी धार्मिक क़ौम हैं पर इन डेढ़ हजार वर्षों मे ही उन में यह बिगाड़ पैदा हो गया कि वह क़ुरआन पढ़ते तो हैं उसका अर्थ नहीं समझते। कितने ही मुसलमान ऐसे हैं जिन के घर पर क़ुरआन सादर लिपटा हुआ तो रखा होता है परन्तु वह इसे पढ़ते नहीं हैं (हालाँकि बिना समझे पढ़ना, न पढ़ने के बराबर ही है)। हिन्दू सब से पुरानी धार्मिक क़ौम है। कभी उन में भी यही बिगाड़ आया होगा कि वह वेद पढ़ते होंगे परन्तु उसका अर्थ नहीं जानते होंगे। फिर एक समय ऐसा आया होगा जब वेद केवल उन के घर की शोभा बढ़ाने के लिए ही रह गये होंगे। उनका पाठ भी बन्द हो गया होगा और आज हज़ारों साल बाद यह स्थिति है कि करोड़ों हिन्दू संसार में आते हैं और वेदों के एक बार भी दर्शन किये बिना ही चले जाते हैं। प्रत्येक हिन्दू देव वाणी केवल वेद ही को मानता है। रामायण और महाभारत को वह स्वयं ऋषियों मुनियों की कृतियाँ कहता है परन्तु उस के घर में यह पुस्तकें तो होती हैं, वेद नहीं होते। यही कारण है कि धर्म को देवकृत धर्म ग्रन्थों से न प्राप्त करने से इतने बहुत से अलग-अलग धर्म बन गये।

वेद व क़ुरआन एक दूसरे की पुष्टि करते हैं:

यदि ऐसा न हुआ होता तो सारी मानव जाति आज एक धर्म पर होती, क्योंकि सारे धर्म ग्रन्थ एक दूसरे की पुष्टि करते हैं। उदाहरण में हम प्रथम व अन्तिम ईश ग्रन्थों, वेद तथा क़ुरआन को पेश करते हैं।

क़ुरआन सभी देवकृत ग्रन्थों में सबसे अन्त में आया। अपने से पहले सारे ईश्वरीय ग्रन्थों की पुष्टि करते हुये आया। एक मुसलमान के लिये इन सभी में

आस्था रखनी अनिवार्य है, अन्यथा कुरआन (२:२८५) के कथनानुसार वह मुसलमान नहीं रह सकता।कुरआन कहता है--

> और हमने सत्य के साथ (हे मोहम्मद स०) तुम पर किताब (कुरआन) उतारी जो इससे पहले आने वाले सभी ग्रन्थों की पुष्टि करती है और उन पर निगरान है....।[१]

और कुरआन स्पष्ट तौर पर वेदों की तरफ संकेत करते हुये कहता है–

> निश्चय ही यह (कुरआन) आदि ग्रन्थों में है।[२]

आज तक कुरआन के विद्वानों ने यह न सोचा कि "आदि ग्रन्थ" से यहाँ कौन से ग्रन्थों की ओर संकेते है। उन्होंने यह विचार नहीं किया कि संसार में मात्र एक ही धार्मिक कौम ऐसी है जो आदि ग्रन्थ रखने का दावा करती है उन्होंने वेदों को कभी इस दृष्टिकोण से देखने का प्रयत्न नहीं किया कि कुरआन के बताये हुये "आदि ग्रन्थ" यह ही तो नहीं? वह निरन्तर यही मानते चले आ रहे हैं कि आदि ग्रन्थ संसार में कभी थे, लेकिन अब उनका अस्तित्व नहीं है। हिन्दू उन से बड़े अपराधी हैं। उन्होंने कभी मुसलमानों को यह नहीं बताया कि तुम्हारे कुरआन में वर्णित आदि ग्रन्थ हमारे पास हैं। वह यह वेद ही तो हैं। वह बताते भी कैसे। वह तो स्वयं वेदों से पूर्णतः कट चुके हैं। खैर, कुरआन वेदों की पुष्टि करता है और वेद उसके बारे में क्या कहते हैं? स्वयं देख लीजिये–

> ऊर्ध्व मुख वाली अरणी पर नीचे मुख वाली अरणी को रखो तत्काल गर्भ वाली अरणी ने कामनाओं की वर्षा करने वाली अग्नि को प्रकट किया–[३]

"अरणी" वेदों की अलंकृत भाषा में "ज्ञान" को कहा गया है। इस मन्त्र का अर्थ है कि सबसे पहले वाले ज्ञान के ऊपर सब से अन्तिम ज्ञान को रखो अर्थात कुरआन के प्रकाश में वेदों में शोध करोगे तो तुरन्त अग्नि का वह रहस्य पा

(१) कु० ५:४८
(२) कु० २६:१९६
(३) ऋग्वेद ३:२९:३

जाओगे जिस की सदा से कामना थी। यह स्पष्ट रहे कि 'अग्नि', वेदों में ऐसा ज़बरदस्त रहस्य है जिस पर शोध करने पर बहुत ज़ोर दिया गया है और यह बताया है कि जब 'अग्नि' का रहस्य खुल जायेगा तो तुम मनुष्यों का नेतृत्व करोगे। (ऋग्वेद ३:२९:५)

इस प्रकार हमने देखा कि यह दोनों प्रथम और अन्तिम ग्रन्थ एक दूसरे की पुष्टि करते हैं। एक दूसरे की ओर भेजते हैं, **Refer** करते हैं।

यही समाधान है:

निष्कर्ष यह निकलता है कि यह समस्त ईश्वरीय ग्रन्थ जिनके एक सिरे पर वेद हैं, दूसरे सिरे पर कुरआन, एक ही धर्म को लेकर आये थे। यह पूरा एक क्रम ***(Series)*** है। इन सभी में आस्था रखनी सभी के लिए आवश्यक है। इन की सहायता से वह असली सनातन धर्म समझा जा सकता है जो ईश्वर की इच्छा है और जो सदा से चला आ रहा एक ही सत्धर्म है।

जब समस्त ससार का धर्म एक होगा, घृणायें समाप्त हो जायेंगी।
आतंकवाद ख़त्म हो जायेगा।
यही समाधान है।

आइये उस सनातन धर्म की खोज करें जो वेदों में है।
जो कुरआन में है।

आ ग़ैरियत के परदे इक बार फिर मिटा दें
बिछड़ों को फिर मिला दें, नक़्शे द्वी मिटा दें।
सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
आ इक नया शिवाला इस देस में बना दें।

(डॉ. इक़बाल)

आदि ग्रन्थों का देवदूत सर्वमान्य है
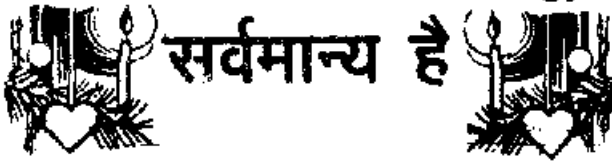
मुसलमानों का तर्क :

१४२२ वर्ष से भी कुछ अधिक पुरानी बात है। ईश्वर के अन्तिम देवदूत ह० मोहम्मद स० पर ईशवाणी अवतीर्ण हुई। फिर २३ वर्ष तक, उनके संसार से जाने के कुछ पूर्व तक, समय समय पर ईश्वर का जो सन्देश उन पर अवतरित होता रहा उसके संग्रह का नाम "कुरआन" है। कुरआन की अन्तिम आयत (अर्थात पंक्ति) जो उन पर उतरी उसमें ईश्वर ने बताया—

> आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे धर्म को पूरा कर दिया और तुम पर अपने वरदान पूरे कर दिये और मैंने तुम्हारे लिये "सम्पूर्ण आत्म समर्पण" (अरबी में "इस्लाम") का धर्म पसन्द किया—(१)

धर्म पूरा हो गया। आज साधारणतः मुसलमानों को यह भ्रम है कि उन २३ वर्षों में ही आधार शिला रखे जाने से पूर्ण होने तक, धर्म का पूरा भवन तैयार हुआ।

इस्लाम का सही अर्थ :

यदि ऐसा होता तो कुरआन बार-बार गत सभी पूर्व ग्रन्थों में आस्था रखने का आदेश क्यों देता? मनुष्य के मार्ग दर्शन के लिए ईश्वर का सन्देश आना तो पृथ्वी पर "आदिमानव" अर्थात "आदिम" या "आदम" के आने से ही शुरु हो गया था। अनादिकाल में पृथ्वी के पहले इन्सान ह० आदम अ० पर जो

---

(१) कु० ५ ३

ईशवाणी अवतरित हुई और समय-समय पर पृथ्वी के प्रत्येक भाग पर जन्म लेने वाले ईशदूतों पर जो वाणी अवतरित होती रही, उस का अन्त ह० मोहम्मद स० पर उतरने वाली उक्त पंक्ति (अर्थात आयत) पर हुआ और इस प्रकार धर्म पूर्ण हुआ। यह पूरी एक शृंखला है जिसका अन्त ह० मोहम्मद स० पर हुआ। कुरआन की उक्त पंक्ति के विषय में श्री मालिक राम लिखते है- (उर्दू से हिन्दी)

> इसका केवल यही अर्थ नहीं था कि "हे मुसलमानों ! मोहम्मद ईशदूत स० का लाया हुआ धर्म इस्लाम आज पूरा हो गया बल्कि इस पंक्ति द्वारा यह घोषणा भी करना थी कि वह "विशेष इस्लाम" जो हजरत आदम अ० के समय से संसार की विभिन्न जातियों को दिया जाता रहा वह आज पूर्ण हो गया। अर्थात मार्ग दर्शक पुस्तक का यह अन्तिम संस्करण (*Edition*) है।[१]

प्रत्येक मुसलमान के लिए सभी पूर्व ग्रन्थों में आस्था रखनी अनिवार्य है तब ही सम्पूर्ण आत्म समर्पण (अरबी भाषा में इस्लाम) के धर्म पर वह होंगे। कुरआन ने "दीन-ए-कय्यिम" (सनातन धर्म, सदा से सीधा चला आ रहा धर्म) उसी को बताया जो समस्त ईश्वरीय ग्रन्थों में है। कुरआन उस का संग्रह है और उसी सनातन धर्म को स्थापित करने का उसने मानव मात्र को आदेश दिया।

धर्म की शाखायें तथा......

ईश्वर ने क्रमशः जिस धर्म को प्रेषित किया मानव जाति ने उस के टुकड़े कर लिये। विभिन्न जातियों ने धर्म के विभिन्न भागों से बने धर्मों को ही सम्पूर्ण मानकर अपने लिये पर्याप्त समझ लिया। इस प्रकार स्वयं मनुष्य टुकड़ों में विभाजित हो गया। हर एक धार्मिक जाति ने किसी एक ईशदूत द्वारा लाये ग्रन्थ को ही धर्म का आधार मान लिया। अन्य सभी ईशदूतों और उनके लाये ग्रन्थों को मानने से इनकार कर दिया। विभाजन की यह दुर्भाग्यपूर्ण कहानी यहीं तक सीमित न रही। हर एक ने जिस जिस ग्रन्थ को अपने धर्म का आधार माना था उससे भी वह हट गये। वैदिक धर्म के मानने वालों ने "वेद" को छोड़ दिया, यहूदी तथा ईसाई "तौरेत" व "इन्जील" से हट गये और कर्मयोग में "कुरआन" को

(१) इस्लामियात, लेखक-मालिक राम, प्रकाशन-मक्तबा जामिया लिमिटेड नई देहली-१९८४ पृष्ट २८, २९

अनुयायियों के जीवन से क़ुरआन निकल गया। मूल धर्म के इन सभी भागों पर भी उनके अनुयायी क़ायम न रह सके।

---- शाखाओं की शाखायें :

जब धर्म ग्रन्थों से सीधे शिक्षायें लेनी छोड़ीं तो ईश्वर को त्याग कर उन गुरओं के पीछे चल पड़े जो इन धर्म ग्रन्थों को जानने के दावेदार थे। इस का कोई अन्त न था। एक धर्म भाग में से सैकड़ो नये धर्मों ने जन्म ले लिया। पहले सम्पूर्ण धर्म को त्याग कर एक भाग को अपनाया फिर ईश्वर के धर्म के उस भाग को भी छोड़ कर मनुष्यों व गुरुओं की मान्यताओं को धर्म बना लिया। इस प्रकार चारों ओर घृणा का राज्य हो गया।

इस अंशांशवाद ने एक ही देवज्ञान, एक ही वेद पर आधारित, एक ही धर्म की अखण्डता को चूर्ण चूर्ण कर डाला। अंतिम सम्पूर्ण वेद (क़ुरआन) वालों ने कर्म क्षेत्र में इस अन्तिम वेद के टुकड़े कर दिए। कुछ माना, बहुत कुछ न माना। क़ुरआन के अनुसार–

"सब ने (अपने वेद) अपने क़ुरआन के टुकड़े टुकड़े कर डाले ...."[१]

वेद और क़ुरआन दोनों की भविष्यवाणी है कि एक दिन सत् धर्म पर, ईश्वर के एक धर्म पर, सारा संसार लौटेगा, एकत्रित होगा। सतयुग फिर आयेगा। वैदिक धर्म व क़ुरानी धर्म दोनों के अनुसार यह क्रान्ति भारत से आरम्भ होगी। कितने भाग्यशाली हैं वह इन्सान, जो सनातन धर्म या इस्लाम को उसके शुद्ध व पूर्ण रूप में समझ कर इस क्रान्ति को आरम्भ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगें। स्पष्ट है कि यह क्रन्ति आदि वेद और अन्तिम वेद में सम्पूर्ण 'एक्य' सिद्ध होकर ही आएगी। जब धर्म ज्ञान के यह दोनों सिरे मिलकर दो ज्ञान गंगाओं पर स्थित विश्व धर्म-तीर्थ बनाएंगे तो उन के करोड़ों अनुयायियों की दोनो पंक्तियों के बीच की सारी शेष मानवता भी इस एकता में लीन हो जाएगी। पूरे विश्व का देव ज्ञान अरब में एकत्रित हुआ, पूरे विश्व का इन्सान हिन्द में एक होगा। यह भविष्यवाणी वेद में ही नहीं, बाइबिल में भी है। क़ुरआन में भी।

---

(१) भावार्थ क़ुरआन (१५:९१)

वेदों का ईशदूत कौन था ?

मूल धर्म के विभिन्न भाग कैसे एक दूसरे की उलझी समस्याओं का समाधान करते हैं और सामंजस्य बैठाते हैं, इस का एक उदाहरण देखें–

संसार की बड़ी-बड़ी धार्मिक जातियों में चार जातियाँ ऐसी है जो ईश्वरीय ग्रन्थ रखने का दावा करती हैं। हिन्दू, यहूदी, ईसाई, और मुसलमान।[१]
मुसलमान की मान्यता है कि "कुरआन देव वाणी है और यह वाणी संसार को एक इन्सान ह० मोहम्मद स० के माध्यम से प्राप्त हुई"।
ईसाई कहते है कि "इन्जील, ह० ईसा अ० पर अवतरित हुई और उन्होंने फिर यह सन्देश विश्व को दिया"।
यहूदी मानते हैं कि–" तौरेत ईश्वरीय ग्रन्थ है जो ह० मूसा अ० के माध्यम से मनुष्यों तक पहुँचा"।
हिन्दू। वेद को देव वाणी मानते हैं। परन्तु "इस देव वाणी को मनुष्यों को पहली बार सुनाने वाला मनुष्य कौन था"? यह एक प्रश्न है जिस के उत्तर में अनुमान बहुत से हैं पर प्रमाणों के साथ किसी एक उत्तर पर सब सहमत हों, ऐसा नहीं है। ईश्वर की इस वाणी को आदि काल में किसी न किसी मनुष्य ने सबसे पहले सुना होगा। उस पर यह वाणी अवतरित हुई होगी और उस महान मनुष्य, ऋषि या ईशदूत द्वारा यह श्रुति अन्य मनुष्यों को सुनाई गई होगी। वेदों का वह ऋषि कौन था? वह ईशदूत कौन था? विद्वानों ने अनुमान लगाये। परंतु अनुमान, अनुमान ही होता है। बहुत से अनुमानों में परस्पर मत्भेद होता है। टकराव होता है। यहाँ भी यही हुआ।

अनुमान की आवश्यकता न थी:

ईश्वरीय धर्म के अन्तिम भाग, कुरआनी धर्म पर यदि वैदिक विद्वानों की दृष्टि होती तो अनुमानों की आवश्यकता न थी। उन्हे मालूम हो जाता कि आदिग्रन्थ ह० नूह अ० पर अवतरित हुये थे। हदीस[२] की पुस्तक "बुख़ारी" में है कि–

---

(१) इन चार के अतिरिक्त एक पाँचवीं जाति "पारसी" भी है, जो जिन्दावस्था को ईश ग्रन्थ मानते हैं लेकिन इस लेख में हम ने उन्हें शामिल नहीं किया है। पारसियों की संख्या उक्त चार जातियों के सामने न होने के बराबर है।
(२) हदीस – अर्थात ह० मोहम्मद स० के कथन

अबू हुरैरा र०[1] ने बताया कि ह० मोहम्मद स० ने फ़रमाया "प्रलय के दिन--- लोग ह० नूह अ० के सामने हाज़िर होकर कहेंगे..... हे नूह, आप पृथ्वी निवासियों की ओर भेजे गये सब से पहले रसूल (अर्थात धर्म नियमावली प्रस्तुत करने वाले ईशदूत) हैं....[2]

क़ुरआन में नूह की कथा:

अब प्रश्न यह है कि ह० नूह अ० कौन थे? क़ुरआन में उनकी कथा बहुत जगह आई है। आप पढ़ेंगे तो आसानी से समझ जायेंगे। इसके लिए विद्वान होने की आवश्यकता भी नहीं है।

क़ुरआन में दरशाई गई इन निम्न पंक्तियों से सहज ही पता चलता है—

और नूह के पास वाणी भेजी गई कि "तुम्हारी जाति में से जो अब तक आस्तिक हो चुके हैं उन के अतिरिक्त अब और कोई आस्था रखने वाला न होगा तो इन नकारने वालों के करतूतों पर तुम उदास न हो और हमारी देख रेख में तथा हमारे निर्देशन में एक नौका बनाओ और तुम मुझ से उनकी सिफ़ारिश न करना जिन्हों ने अत्याचार किया है। वे डूब कर रहेंगे।" और (नूह ने) नौका बनानी शुरु की और जब कभी उन की जाति के मुखिया उन के पास से गुज़रते थे तो उन की हँसी उड़ाते। (नूह ने उन से) कहा-- "अगर तुम हम पर हँसते हो, तो हम भी तुम पर हँसते हैं जैसे तुम हँस रहे हो। शीघ्र ही मालूम हो जाएगा कि किस पर वह प्रकोप आएगा।"..... यहां तक कि जब हमारा आदेश आ पहुँचा और पृथ्वी से पानी उबलने लगा (तो) हम ने कहा—"इस नौका में हर प्रकार के जोड़ों में से दो दो की चढ़ा लो और जिन की बाबत आदेश हो चुका है उन को छोड़कर अपने घर वालों तथा आस्तिकों को भी बैठा लो।" और उन के साथ आस्था रखने वाले बहुत ही कम थे। और नूह ने (नाव में सवार होने वालों से) कहा—"इस में सवार हो जाओ। अल्लाह ही के नाम से इस को चलना और इस को ठहरना है। निस्सन्देह मेरा प्रभु बड़ा क्षमाशील व बहुत दयालु है।" और वह (नौका) उन्हें लेकर पहाड़ जैसी मौजों में चलने लगी....। और

---

(१) र० – रज़ी अल्लाहु अन्हु (अर्थात ईश्वर उन से प्रसन्न हो)

(२) बुख़ारी (किताब-उल्-अंबिया)

आदेश हुआ कि "हे पृथ्वी अपना पानी निगलजा, और हे आकाश! थम जा।" और पानी घट गया और कार्य पूरा हो गया और नौका "जूदी" (नामक पहाड़ी चोटी) पर आ ठहरी और कहा गया कि–"अत्याचार करने वाले दूर हो गए।"..... आदेश हुआ कि "हे नूह! हमारी ओर से सुरक्षा और आशीर्वाद लेकर उतरो। अपने ऊपर भी और उन जातियों पर भी जो तुम्हारे साथियों से (उत्पन्न) होंगी। और (कुछ) जातियाँ तो ऐसी भी होंगी जिन्हें हम कुछ दिन ढील देंगे और फिर उन पर हमारी ओर से प्रकोप होगा।"[1]

क़ुरआन में ह० नूह अ० की यह कथा और भी कई जगह आई है।

बाइबिल में नूह की कथा:

बाइबिल में यह कथा क़रीब क़रीब इसी विस्तार के साथ आई है। वहाँ इस का बयान इन शब्दों में है–

और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है, क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपने अपने चाल चलन बिगाड़ लिए थे। तब परमेश्वर ने नूह से कहा– "सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है क्योंकि उन के कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इस लिए मैं उन का पृथ्वी सहित नाश कर डालूंगा इस लिए तू इंजीर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज़ बनाना, उसमें कोठरियाँ बनाना, और भीतर बाहर उस में राल लगाना और इस ढँग से उस को बनाना कि जहाज़ की लम्बाई ३०० हाथ, चौड़ाई ५० हाथ और ऊँचाई ३० हाथ की हो। जहाज़ में एक खिड़की बनाना और उसके एक हाथ ऊपर उस की छत बनाना और जहाज़ की एक तरफ़ एक द्वार रखना, और जहाज़ में पहला, दूसरा, तीसरा खण्ड बनाना। और सुनो! मैं स्वयं पृथ्वी पर जल प्रलय करके सब प्राणियों को जिन में जीवन की आत्मा है आकाश के नीचे से नाश करने जा रहा हूं। और सब जो पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। परन्तु तेरे संग मैं वचन बाँधता हूँ, इसलिए तू अपने पुत्रों, स्त्री और बहुओं सहित जहाज़ में प्रवेश करना।

---

(१) क़ु० ११:२६ से ४२ ४४, ४८

और सब जीवित प्राणियों में से, तू एक-एक जाति के दो-दो अर्थात एक नर और एक मादा जहाज़ में ले जाकर अपने साथ जीवित रखना। एक-एक जाति के पक्षी, और एक-एक जाति के पशु और एक-एक जाति के भूमि पर रेंगने वाले, सब में से दो-दो तेरे पास आएंगे किन्तु उन को जीवित रखना और भाँति-भाँति का भोजन पदार्थ जो खाया जाता है उन को तू लेकर अपने पास इकट्ठा कर रखना, सो तेरे और उन के भोजन के लिए होगा"। परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया और परमेश्वर ने नूह से कहा तू अपने सारे घराने समेत जहाज़ में जा, क्योंकि मैं ने इस समय के लोगों में से केवल तुझी को अपनी दृष्टि में धर्मी देखा है"। ...... सात दिन के बाद प्रलय का जल प्रथ्वी पर आने लगा...... और पृथ्वी पर ४० दिन तक प्रलय होता रहा, और जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया यहाँ तक कि सारी धरती पर जितने बड़े बड़े पहाड़ थे, सब डूब गये और क्या पक्षी, और क्या घरेलू पशु, क्या जंगली पशु और पृथ्वी पर सब चलने वाले प्राणी और जितने जन्तु पृथ्वी में बहुतात में बढ़ गये थे, और सब मनुष्य मर गये।...... केवल नूह और जितने उसके संग जहाज़ में थे, वे ही बच गये। और जल पृथ्वी पर १५० दिन तक प्रबल रहा। और परमेश्वर ने नूह को और जितने जंगली पशु और घरेलू पशु के संग जहाज़ में थे, और सभी को याद किया और परमेश्वर ने पृथ्वी पर पवन बहाई जल घटने लगा। और गहरे समुद के सोते और आकाश के झरोखे बन्द हो गये, और उस से जो वर्षा होती थी वह भी थम गई। और १५० दिन जल पृथ्वी पर लगातार घटता रहा और...... जहाज 'अरारात' नामक पहाड़ पर टिक गया।...... तब परमेश्वर ने नूह से कहा, "तू अपने पुत्रों, पत्नी और बहुओं समेत जहाज़ से निकल आ"...... तब परमेश्वर ने नूह और उन के पुत्रों को आशीष दी और उन से कहा, "फूलो फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ"।

(उत्पत्ति—अध्याय ६, ७,८ व ९)

नूह, मनु हैं!

आप अब तक निश्चय ही समझ गये होंगे कि कुरआन व बाइबिल में वर्णित नूह कौन थे।

जी हाँ! महा जल प्लावन वाले 'मनु' जिन की कथायें वैदिक धर्म में विस्तार पूर्वक मिलती हैं।

फ्राँस के ड्यूबाइस [१] ने ३६ वर्षों तक भारत में घूम कर हिन्दू संस्कृति व सभ्यता पर अब तक की सब से अधिक प्रमाणित पुस्तक [२] लिखी है। उस ने भी नूह को मनु के रूप में पहचाना था–(अंग्रेज़ी से हिन्दी)

> संक्षिप्त रूप में यह कहा जा सकता है कि एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व जो कि हिन्दुओं के यहाँ बहुत पुनीत माना गया है और जिसे वह 'महानूवू' के नाम से जानते हैं, (सैलाब की) तबाही से एक नौका द्वारा बच निकला जिस में सात प्रसिद्ध ऋषि सवार थे......।[३]
>
> ......महा नूवू दो शब्दों से मिल कर बना है। 'महा' और 'नूवू' जो कि निस्सन्देह 'नूह' है.......।[४]
>
> व्यावहारिक रूप में यह माना जाता है कि भारत इस जल प्रलय के तुरन्त बाद आबाद हुआ था जिस ने सारे संसार को उजाड़ दिया था......[५]
>
> मार्कण्डेय पुराण और भागवत में इस का बहुत स्पष्ट वर्णन है कि इस घटना में सात प्रसिद्ध तपस्वी ऋषियों के अतिरिक्त जिनका मैं ने और भी बहुत से स्थानों पर वर्णन किया है, समस्त मानव जाति का संहार हो गया था। यह सप्त ऋषि एक नौका पर बैठकर सारभौमिक संहार से बच सके थे। इस नौका को स्वयं विष्णु चला रहा था। और एक महान व्यक्तित्व जो बच जाने वालों में था, वह 'मनु' का था, जिस को

---

(१) *Abbe J.A. Dubois*

(२) *Hindu Manners Customs & Ceremonies* (फ्रांसीसी भाषा से अंग्रेज़ी में अनुवाद)

(३) पृ० ८६ (अनुवाद अंग्रेज़ी से हिन्दी) *Hindu Manners, Customs & Ceremonies by Dubois Pub. R. Dayal, Oxford University Press New Delhi—1985*

(४) पृ० ४८ (अनुवाद अंग्रेज़ी से हिन्दी) *Hindu Manners, Customs & Ceremonies by Dubois Pub. R. Dayal, Oxford University Press New Delhi—1985*

(५) पृ १०० (अनुवाद अंग्रेज़ी से हिन्दी) *Hindu Manners, Customs and Ceremonies*

मैं ने दूसरे स्थानों पर सिद्ध किया है कि वह 'नूह' के सिवा कोई नहीं था[१]

मत्स्य पुराण में मनु की कथा :

ड्यूबाइस की गवाही के पश्चात 'मत्स्य पुराण' में भी इसी घटना को देखिए–

> तब भगवान मनु से यूँ बोले, 'ठीक है, ठीक है। तुम ने मुझे भली भाँति पहचान लिया है। हे भूपाल ! थोड़े ही समय में पर्वत वन और उपवन के सहित यह पृथ्वी जल में निमग्न हो जायेगी। इस कारण, हे पृथ्वीपते ! सभी जीव-समूहों की रक्षा करने के लिए समस्त देवगणों द्वारा इस नौका का निर्माण किया गया है। सुव्रत ! जितने पसीने से उत्पन्न, अण्डों से उत्पन्न और पृथ्वी से उत्पन्न जीव हैं तथा जितने गर्भ से उत्पन्न जीव हैं, उन सभी अनाथों को इस नौका में चढ़ाकर तुम उन सब की रक्षा करना। इसके बाद, पृथ्वीपते ! प्रलय की समाप्ति में तुम जगत के समस्त अचल व चल प्राणियों के प्रजापति होओगे'[२]

> तब सातों समुद व्याकुल होकर एकमेव हो जायेंगे और इन तीनों लोकों को पूर्ण रूप से एक ही आकार में रूपांतरित कर देंगे। सुव्रत ! उस समय तुम इस वेद रूपी नौका को ग्रहण करके इस पर समस्त जीवों और बीजों को लाद देना।[३]

भली भाँति देख लीजिए। पहचान लीजिए। क़ुरआन व बाइबिल में वर्णित 'नूह' और वैदिक धर्म के जाने पहचाने महाजल प्रलय वाले 'मनु' एक ही व्यक्तित्व के नाम हैं। उच्चारण ही का अन्तर है।

---

(१) पृ ४१६ (अनुवाद अंग्रेज़ी से हिन्दी) *Hindu Manners, Customs and Ceremonies*

(२) मत्स्य पुराण (१:२९ से ३५)

(३) मत्स्य पुराण (२:१०, ११)

भविष्य पुराण में यह अन्तर भी नहीं :

भविष्य पुराण में तो यह उच्चारण का अन्तर भी क़रीब-क़रीब समाप्त हो गया है। वहाँ इन्हें 'न्यूह' कहा गया है–

> उस से न्यूह नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह नूह ही निर्गत हुआ था। इसके प्राज्ञों के द्वारा कहा गया है। इस ने ५०० वर्ष तक राज किया था, उसके 'सीम', 'शाम' और 'भाव' नामक तीन पुत्र हुए थे। 'न्यूह' विष्णु का भक्त कहा गया है जो कि सोऽहं के ध्यान में मग्न रहा करता था। एक बार भगवान विष्णु उसके स्वप्न में आ गये थे और स्वप्न में ही विष्णु ने कहा–"हे वत्स न्यूह ! यह मेरा वचन ध्यान से सुन लो, आज के सातवें दिन में प्रलय होगा। तुम मनुष्यों के साथ नाव में शीघ्र समारोहण करके जीवन की रक्षा करना। हे भक्तेन्द्र ! तू सर्वश्रेष्ठ हो जायेगा। उस स्वप्न में दी गई आज्ञा को स्वीकार करके उस ने मज़बूत व बड़ी नाव बनवाई थी जो ३०० हाथ लम्बी और ५० हाथ चौड़ी थी। यह ३० हाथ ऊँची एवं बहुत आकर्षक थी कि समस्त जीवों से भरी हुई थी। उस नौका पर अपने कुलों के साथ उसने प्रवेश किया और विष्णु के ध्यान में लीन हो गया था। महेन्द्र के द्वारा संयुक्त योद्ध मेघों के गण ने चालीस दिन में ही वहाँ अति घोर वर्षा कराई थी। यह सम्पूर्ण भारत वर्ष जलों से प्लावित होकर सिन्धु बन गया था। चारों सागर मिल गये और कोई सीमा नज़र नहीं आती थी और ब्रह्मवाद का पालन करने वाले मुनि वहां उपस्थित थे। और न्यूह अपने कुलों के साथ वहाँ था, अन्य सब समाप्त हो गये थे। तब सब मुनिगण ने विष्णु भगवान को याद किया था ... तब न्यूह ने प्रार्थना की और जल की वर्षा शान्त हो गई। एक ही वर्ष के अन्दर (पानी घट गया और) समस्त पृथ्वी स्थली होकर दिखाई देने लगी और शीघ्र ही 'हिमाद्रि' की तट भूमि में शिषिणा नामक स्थल पर अनेक कुलों के साथ नाव पर सवार होकर 'न्यूह' वहाँ पर पहुँच गया। जल के अन्त में वह भूमि पर उतर आया था और निवास करता रहा।"[१]

विद्वान तो जानते ही हैं लेकिन साधारण लोग भी क़ुरआनी व वैदिक धर्म में 'नूह'

---

(१) भविष्य पुराण–प्रतिसर्गपर्व, अध्याय ४, श्लोक ४५ से ६०

व 'मनु' की परम्पराओं पर एक दृष्टि डाल लेने के बाद अवश्य ही समस्त धर्मों में मान्य इस व्यक्तित्व को पहचान गये होंगे।

सभी इन्सान ऋषियों की सन्तान :

यहूदी, ईसाई व मुस्लिम मान्यता के अनुसार पृथ्वी के सभी इन्सान, एक आदमी 'आदम' की सन्तान हैं। इस तरह सभी परस्पर भाई-भाई हुए और सब का खून एक ही हुआ। ह० आदम अ० का उल्लेख विभिन्न नामों से वैदिक धर्म में भी मिलता है। लेकिन हम जानते हैं कि मनु (ह० नूह) के जीवन काल में विश्व स्तर बाढ़ में समस्त संसार व मानव जाति का प्रलयंकारी बाढ़ में संहार हो गया था। केवल मनु (ह० नूह) व उन के कुछ अनुयायी ही नौका में सवार होकर बच सके थे। आज समस्त जन जाति उन्हीं की सन्तान है। यहूदी, ईसाई, व मुसलमान 'मनु' को 'नूह' या नोह (NOAH) के नाम से जानते हैं। उन को ईश्वर का दूत मानते हैं। उनका आदर सम्मान करते हैं। हिन्दू 'नूह' या 'नोह' को 'मनु' के नाम से जानते हैं तथा वैदिक धर्म में महाजल प्लावन वाले 'मनु' का बहुत अधिक महत्व है। यह तथ्य विचार करने योग्य है कि **जब सभी इन्सान जल प्रलय के बाद बच रहने वाले मनु व सप्त ऋषियों की सन्तान हैं तो इन में उच्च और निम्न वर्ग कैसे बन गये?**

नकल नहीं नवीनीकरण :

तनिक ठहरिये। कहीं आप के अन्दर वह तर्क तो नहीं पल रहा है जिस ने कभी दो सम्प्रदायों को निष्पक्ष होकर परस्पर कुछ समझने समझाने न दिया। कहीं उन्हीं त्रुटियों ने तो आपको नहीं घेर रखा कि यहूदी, ईसाई व मुसलमानों ने मनु की यह कथा अपने अपने यहाँ आप की प्राचीनतम परम्परा से चुरा कर 'नूह' के नाम से बना ली जैसा कि दूसरे बहुत से हिन्दू विचारक कहते हैं जैसे–

> जल प्रलय की कथा जो शतपथ ब्राह्मण में दी गई है, जिसमें मत्स्यरूपी भगवान के आदेश से मनु ने अपनी नौका उत्तर गिरि के उच्चतम श्रृंग पर (अर्थात सब से ऊंची चोटी पर) बांधी थी उसी को जरथुस्त्र ने दोहराया है और उस में प्रत्येक जीवित प्राणी का जोड़ा एक गढ़े में रखा गया। इसी की नक़ल यहूदी, ईसाई और मुसलमानों

> के *Noah's Arc* अथवा 'नूह की किश्ती' के सम्बन्ध में की गई है। 'मनु' वर्तमान मानव-सृष्टि के आदि पुरुष माने जाते हैं। 'नूह' भी 'मनु' का रूपान्तर है, 'नूह' के दो पुत्र 'साम' और 'हाम' बताये जाते हैं जिनसे 'सामतिक' तथा, 'हामतिक' दो उप-जातियां बनीं। 'मनु' के वंश में भी 'चंन्द्रवंश' व 'सूर्यवंश' हैं। चन्द्र को सोम और सूर्य को हेम भी कहते हैं। आश्चर्य नहीं कि यहूदियों ने 'सोम' का 'साम' और 'हेम' का 'हाम' बना दिया हो।[१]

यहूदियों ने सोम को साम और हेम को हाम कहा, विभिन्न क्षेत्रों मे उच्चारण का इतना अन्तर तो होगा ही। परन्तु यह विचार करना कि धर्म व धर्म परम्पराएं सभी धर्मों ने हिन्दुओं से नक़ल की हैं बहुत बड़ी भ्रान्ति है। जो धर्म आदि काल में ईश्वर ने मानव जाति को दिया उस का जब जब संहार हुआ, नवीनीकरण करने के लिए उस के दूत हर युग मे आते रहे और उसी एक 'ईश्वरीय धर्म'—'सनातन धर्म'—'दीन—ए—क़य्यिम' को याद दिलाते रहे। इन महान् ईशदूतों द्वारा धर्म को पुनः देव-वाणी द्वारा जीवित करने को नक़ल करने का नाम देना ऐसी भोली भाली ग़लती नहीं है कि इस अज्ञानता का खण्डन न किया जाये।

मनु (नूह) की घटना के विवरण के बाद क़ुरआन कहता है—

> यह वर्णन अज्ञात समाचारों में से है। हम ने (हे मोहम्मद) इस को ईश्वाणी अवतरण द्वारा तम तक पहुंचा दिया, इस को इस से पहले न तुम जानते थे और न तुम्हारी जाति। (आरोप लगाने वालों की बातों पर मन छोटा करने के बजाय) तुम धीरज रखो, निश्चय ही ईश्वर से डरते रहने वालों के लिये अच्छा परिणाम है। (क़ु० ११—४९)

क़ुरआन की यह पंक्ति (आयत) जब ह० मोहम्मद स० ने अपनी जाति को सुनाई तो किसी ने यह आपत्ति नहीं की कि यह कथा तो वह पुराने लोगों से सुनते चले आ रहे थे, कोई नई बात नहीं थी। नहीं बल्कि उक्त काल में अरब जाति में मनु की कथा अज्ञात थी और ईश्वर की तरफ़ से उस को याद दिलाना इस लिये आवश्यक था कि मनु की अवज्ञाकारी जाति के अन्त से जो शिक्षा

---

(१) पृ० २४८, 'कल्याण' धर्मांक (संख्या-१)-लेखक श्री इन्द्रजीत जी शर्मा

मिलती है वह न भूलने पाये, और इस लिये भी ज़रूरी था कि जगत के जलमग्न होने के बाद मनु (नूह) ही से सृष्टि का पुनः प्रारम्भ हुआ था। मानव जाति यदि उन को याद रखेगी तो अपने परस्पर भाई-भाई होने, एक कुल एक परिवार होने को याद रखेगी। और घृणा की आग भरी उस बाढ़ से बच सकेगी जो सब से बड़ा प्रकोप है।

मुसलमानों की मान्यता है कि ह० नूह अ० सब से पहली शरीअत (अर्थात धर्म विधान) लाने वाले ईशदूत थे तथा उन के द्वारा ही आदि ग्रन्थों (वेदों) का यह संदेश आदम जाति, मानव जाति तक पहुँचा। ऐसे कुछ संकेत हिन्दू धार्मिक पुस्तकों में भी मिलते हैं जैसे--

> (भगवान मनु से बोले) महापते ! चाक्षक मन्वन्तर के प्रलयकाल में जब इसी प्रकार सारी पृथ्वी जलमग्न होकर एक हो जायेगी और तुम्हारे द्वारा सृष्टि का प्रारम्भ होगा, तब मैं वेदों का प्रवर्तन करूंगा[१]

मनु व नूह का एक होना यह सिद्ध करता है कि हिन्दुओं का धार्मिक इतिहास तथा यहूदी ईसाई व मुसलमानों का धार्मिक इतिहास अलग-अलग नहीं हो सकता। सभी हिन्दू मुसलमान 'मनु' व उन के गिने चुने अनुयायियों की संतान हैं। इतना तो मानना ही होगा कि कम से कम मनु के बाद का धार्मिक इतिहास एक होना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं है घृणा ने हमारी आँखों के आगे परदे डाल दिये हैं, स्वार्थ ने हमें बुद्धि का प्रयोग करने से रोक रखा है। अतीत पर सहमत होना तू दूर, हम अपनी निगाहों के सामने पेश आने वाली घटनाओं का इन्कार किये जा रहे हैं।

ह० नूह अ० में आस्था रखे बिना एक मुसलमान, मुसलमान नहीं रह सकता। उनके लाये ग्रन्थों में आस्था रखे बिना वह मुसलमान नहीं रह सकता। कुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि--

> उसने तुम्हारे लिए वही धर्म नियुक्त किया जिस का उसने नूह को आदेश दिया था तथा जिस को हम ने (हे मोहम्मद) तुम्हारी तरफ़ भेजा

---

(१) (मत्स्य पुराण २:१४, १५)

और (यह वही धर्म है) जिस का आदेश हम ने मूसा व ईसा को दिया था कि इस धर्म नीति को दृढ़तापूर्वक बनाये रखना और इसमें विभाजन न करना..."

(कु० ४२-१३)

१४०० वर्ष पूर्व अरब के मरुस्थल में सारे विश्व से कटे हुये, बिना पढ़े लिखे, ह० मोहम्मद स० अपनी जाति को ईश्वर का यह संदेश दे रहे हैं कि उन का व मनु का धर्म एक ही है, वह मनु से अपरिचित जाति को ईश्वर द्वारा बताया हुआ 'मनु' का परिचय देते हैं और इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय, साम्प्रदायिक व धार्मिक एकता की घोषणा करते हैं।

ह० मोहम्मद स० व मनु के बीच ही समस्त धर्मों के मान्य ईशदूत हैं।[1] और आदि ग्रन्थों अर्थात् वेदों व क़ुरआन के बीच सभी धर्म ग्रन्थ व धर्म हैं। जब यह दोनों एक होंगे तो समस्त संसार का धर्म एक होगा।

इस दिशा में तुलनात्मक अध्ययन की कैसी घोर आवश्यकता है।

"... सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्राम कहता है कि भारत में एक सामूहिक रोग है कि हर धर्म का अनुयायी अपने आप को उत्तम तथा दूसरे को कमतर समझता है। मुसलमान समझते हैं कि अन्तिम सत्य और मोक्ष के मार्ग पर उन का एकमात्र अधिकार है। यही हिन्दू अपने बारे में और सिख अपने बारे में समझते हैं। यही समस्या संसार के हर क्षेत्र में तनाओं की जड़ है..."

(अंग्रेजी पत्रिका हेलान (Haelan Vol. VII. No. 2), डेट्राइट, मिशिगन, अमरीका)

---

(१) याद रहे कि हम उन धर्मों की बात कर रहे हैं जो ईश्वर वाणी रखने के दावेदार हैं।

३

हमारे पूर्वज

इतिहास खो गया :

बात बहुत पुरानी है। इतनी पुरानी कि आधुनिक इतिहास भी मौन है। हां, धार्मिक इतिहास को कुछ कुछ याद है। पृथ्वी पर पहले मनुष्य ने अपनी पत्नी के साथ द्युलोक (स्वर्ग लोक) से आकर क़दम रखा था। उसे प्रभु ने मानव जाति की आधारशिला रखने भेजा था। वह अपने साथ मानव जाति के लिये जीवन व्यतीत करने का संविधान भी लाया था। संविधान का नाम धर्म था जो ईश्वर ने स्वयं उसे देकर भेजा था। युग बीत गये, मानव जाति समस्त संसार में फैल गई। समय बीतने के साथ मौलिक धर्म उन्होंने खो दिया था। धरती अत्याचार से पीड़ित हो गई। तब (महा जल-प्लावन वाले) मनु आये। ईश्वर का सन्देश याद दिलाया। संसार को आदि ग्रन्थ दिये। उनकी बात भी न सुनी गई तो ईश्वर का प्रकोप आया। प्रलयंकारी बाढ़ में सब डूब गये केवल मनु (या नूह) व उनके कुछ अनुयायी शेष रह गये। फिर युग बीते। जनसंख्या फिर बहुत बढ़ गई। जनजाति ने आदिग्रन्थों को त्याग कर अपने आडम्बरों पर फिर चलना शुरू कर दिया। धार्मिक इतिहास को धुंधला सा कुछ याद है कि कभी-कभी कोई सत्पुरुष खड़ा होकर जगत पिता (आदि मानव) का सन्देश, जिस का मनु (नूह) ने नवीनीकरण किया था, याद दिलाता था–.

'एकम ब्रह्म द्वितीय नास्ते, नेह, ना, नास्ते, किन्चन'
अर्थात् ब्रह्म एक ही है, उसके अतिरिक्त कोई दूसरा ब्रह्म नहीं है, नहीं है, नहीं है, अंशभर, नाममात्र भी नहीं है।
और **'एकम एवं अद्वितीयम'**
अर्थात् : वह एक है। 'द्वि' की लाग के बिना एक है।

यह ब्रह्म सूत्र था, वेदों का सार था, धर्म का आधार था। समय बीता, वेद समय की धूल में भुला दिये गये। बहुत से इशदूत आये। सनातम धर्म को जीवन दान

देते रहे। धर्म यूं ही जीता और मरता रहा। धर्म याद कैसे रहता? आदि पुरुष को ही लोग भूल गये। समय और बीता। आधुनिक ऐतिहासिक युग आ गया। धार्मिक इतिहास व आधुनिक इतिहास में मतभेद शुरू हुआ। तब ईश्वर ने फिर कृपा की और आधुनिक इतिहास के युग मे अन्तिम देवदूत को भेजा। उस अन्तिम देवदूत के मुंह से निकला एक-एक शब्द केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि आधुनिक इतिहास के पन्नों पर भी लिखा हुआ है। उसने उन सभी देवदूतों की पुष्टि की जिन को मानने से आधुनिक इतिहास इनकार करता था। उसके आने के समय पर पृथ्वी पर सब ने अपने अलग-अलग पूज्य बना रखे थे तथा मानव जाति एक जाति न होकर अनगिनत जातियों में बंटी हुई थी। उसने ईशवाणी प्राप्त करने के पश्चात अपनी सबसे पहली एक वाक्य पर आधारित घोषणा मे कहा था–

> "**हे मानव मात्र**! तुम सभी का पूज्य एक ही है, तथा तुम सब का पिता-व-पूर्वज भी एक ही है।"

यह सारे मतभेदों तथा झगड़ों का इलाज था। एक पूज्य के उपासकों का धर्म एक होगा तथा एक मनुष्य की सन्तान आपस में भाई-भाई होंगे।

गुरू से शुरू करें :

सर्वप्रथम धर्मग्रन्थ ने भी तो यही आदेश दिया था। एक ही ब्रह्म की उपासना के आदेश के साथ-साथ, यह चेतावनी भी दी थी।

'बहुत से लोग पिता को भूल जाएंगे, इसीलिए उसके लाए हुए आदि धर्म के प्रति अज्ञानी हो जायेंगे। (भावार्थ ऋग्वेद १:१६४:२२)
पृथ्वी पर पधारने वाले प्रथम पुरुष की पहचान आवश्यक होना, स्वाभाविक है क्योंकि वह ही ईश्वर तथा अपनी सन्तान अर्थात जनजाति के बीच ईशधर्म पहुंचाने वाला माध्यम बना था। वही धर्म का सर्वप्रथम साक्षात लक्षण था। उसे खोकर हम यह विचार करें कि सनातन धर्म को हम पूर्णतः बिना कुछ खोये समझ सकते हैं, तो यह हमारा भ्रम ही होगा धर्म नहीं।

आइये हम सभी विश्वास रखने वाले, अपने अपने मान्य धर्मग्रन्थों में पायी जाने

वाली समानताओं के आधार पर जुड़ कर एक हो जायें और थोड़ी सी असमानताओं पर बिखरने न लग जायें। तो चलें, अपने परम शारीरिक पिता, अपने प्रथम पूर्वज, पृथ्वी पर पधारने वाले पहले इनसान की, धार्मिक इतिहास में खोज की ओर--

तीन सर्वप्रथम :

प्रथम शब्द के साथ, तीन अस्तित्व हैं, जिनकी कल्पना मस्तिष्क में आती है।

परब्रह्म: सर्वप्रथम, जो सदा से है, जिस से पूर्व कुछ भी न था।
प्रथम जीवात्मा : परब्रह्म की सर्वप्रथम रचना, जो रचे जाने से पूर्व उसकी कामना थी, उसके विचारों में थी, जिसे उसने अपने अंश से नहीं, मनन शक्ति से उत्पन्न किया। यह प्रथम जीवात्मा जो परब्रह्म के गुणों तथा आचरण का प्रत्यक्ष साक्षात्कार थी, इस को ही उसने सृष्टि रचना के लिये साधन बनाया।
परम मानव : पृथ्वी की पीठ पर पहला मनुष्य जिस से मानव जाति का प्रारम्भ हुआ।

यह तीनों अस्तित्व किसी न किसी रूप में सर्वप्रथम हैं इसलिये अति प्राचीन वैदिक धर्म में इन्हें जिन जिन नामों से पुकारा गया वह सब सगुण नाम होने के कारण इन सभी के लिये प्रयोग किये गये। यह नाम इन तीनों के लिये बोले जाने के कारण यह तीनों अस्तित्व आपस में गडमड हो गये। साधारण व्यक्ति के लिये यह समझना असम्भव हो गया कि कहां किस नाम का अभिप्राय किस अस्तित्व के लिये है। परमात्मा, ब्रह्म, ब्रह्मा, पिता, पितामह, प्रजापति, विराट पुरुष, मनु, ब्रह्मणस्पति, नारायण, स्वयंभू, इन्द्र, अग्नि... आदि कितने ही नाम ऐसे थे जो इन में से किसी एक के लिये ही न होकर दो या तीनों के लिये प्रयुक्त हुये। एक ही नाम से कई को पुकारने में कोई आपत्ति नहीं है, जब तक कि अलग अलग अस्तित्व स्पष्टतः समझ में आते हों। परन्तु ऐसा नहीं रह सका और इससे सब से बड़ा नुकसान यह हुआ कि परब्रह्म जिसे एक मात्र पूज्य होना चाहिये था उसके सिवा बाकी दोनों पर भी पूज्य होने का आभास हो गया और जो स्वयं रचना व सृष्टि थी उस की भी पूजा होने लगी।

पहले इन्सान के सगुण नाम भी वही रखे गये थे जो परब्रह्म के थे, इसका कारण 'तौरत' ने यह बताया कि--

फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनायें... तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उस को उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
(उत्पत्ति-१:२६, २७)

इसी को क़ुरआन ने इस प्रकार कहा–

अल्लाह का स्वभाव, जिस पर उसने इन्सान को बनाया,
(क़ु ३०:३०)

प्रथम मानव को पहचानना है :

बहुत से सामान्य नामो में गड़मड हो जाने वाले, तीनों ही अस्तित्वों को हमें अलग-अला करना है परन्तु इस समय, प्रथम पुरुष, मानव जाति के पूर्वज, आदि मानव को अलग करके उसके व्यक्तित्व को पहचानना है। एक जगह जो ज़रा भी अस्पष्ट होता है, देखिये, कितनी सरलतापूर्वक, वह व्यक्तित्व, धर्म के अन्य भागों की सहायता से स्पष्ट हो जाता है।

बाइबिल व क़ुरआन दोनों ने इस प्रथम मानव का नाम 'आदम' बताया। 'आदम' न तो इबरानी व सुरयानी भाषाओं का शब्द है और न अरबी भाषा का। ह० मूसा, ह० ईसा व हज़रत मोहम्मद स० संस्कृत नहीं जानते थे, फिर भी तीनों ने उस व्यक्तित्व का नाम, आदिधर्म के मानने वालों की भाषा, संस्कृत में (आदम अर्थात् आदि मानव) बताया जबकि पूर्व ग्रन्थ वाले स्वयं इस शब्द का प्रयोग भूल चुके थे, निस्सन्देह इन सभी ईशदूतों को यह नाम ईशवाणी द्वारा स्वयं ईश्वर ने बताया था। अब आइये इन सभी ईशग्रन्थों के सामन्जस्य से आदम को भली प्रकार पहचान लें।

आदम की रचना तथा देवताओं द्वारा वरण :

पृथ्वी पर भेजे जाने से पहले ह० आदम अ० स्वर्ग लोक में थे वहीं से उन का परिचय शुरू करें।

आदम की रचना के विषय में क़ुरआन ने बताया–

(हे मोहम्मद इन से कह दो कि) जब तुम्हारे प्रभु ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं एक इन्सान की, मिट्टी से रचना करने वाला हूं। और फिर जब मैं उसे पूरी तरह तैयार कर लूं और उसके अन्दर अपनी आत्मा में से फूँक दूं तो तुम सब उसके आगे सज्दे (अर्थात् साष्टांग') में गिर जाना। (कु ३८:७१, ७२)

बाइबिल ने आदम की रचना का विवरण यूं किया–

और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम जिन्दा प्राणी बन गया। (उत्पत्ति-२:७)

बाइबिल के वृतांत में फ़रिश्तों द्वारा आदम को नम करना सम्मिलित नहीं है परन्तु वैदिक धर्म मे है।

आदि पुरुष से 'विराट' की उत्पत्ति हुई और ब्रह्माण्ड रूप देह के आश्रय में प्राण रूप 'पुरुष' प्रकट हुये... (ऋग्वेद १०:९०:५)

इस मंत्र में आदि पुरुष प्रथम जीवात्मा को कहा गया है और जिसे परब्रह्म ने विराट या पुरुष की उत्पत्ति का साधन बनाया। 'विराट पुरुष' यहां 'आदम' को कहा गया है। अब आगे देखिए–

प्रजापति के प्राण रूप देवताओं ने 'पुरुष' को मानसिक यज्ञ के प्रारंभिक काल में वरण किया...
(ऋग्वेद १०:९०:१५)

इस मंत्र में 'प्रजापति' उसी प्रथम जीवात्मा को कहा गया है जिसे ऊपर वाले मंत्र में 'आदि पुरुष' कहा था, तथा यहां 'पुरुष' आदम है जो ऊपर वाले मंत्र में 'विराट' या 'प्राण रूप पुरुष' थे। नाम बदल रहे हैं। व्यक्तित्व वही है। आप स्वयं तुलना करके देखें–

आत्मा————————से (सजीव) **आदम** पैदा हुये
आदि पुरुष या प्रजा पति से **विराट या पुरुष** की उत्पत्ति हुई।

फिर देखिए—

फ़रिश्तों को आदेश हुआ कि **आदम को सजदा** (साष्टांग) करें
देवताओं ने ————————**पुरुष का वरण** किया।

आदम की पत्नी, प्रथम नारी :

वैदिक धर्म में आदम के लिये और भी बहुत से नाम आये हैं। १४ 'मनु' माने गये हैं उन में से एक का बयान बिल्कुल आदम जैसा है।

स्वायम्भूव मनु और उसकी पत्नी शतरूपा जिन से मनुष्यों की यह अनुपम सृष्टि हुई, इन दोनों पति पत्नी के धर्म और आचरण बहुत अच्छे थे।

(राम चरित मानस, बालकाड-दो० १४१ चौ०१)

यहां शब्द 'स्वायम्भूव' पर गौर कीजिये। इसका अर्थ है, 'जो बिना माता व पिता के जन्मा।' आदम के लिये क़ुरआन बताता है—

उस (अल्लाह) ने उसे (आदम को) मिट्टी से रचा फिर उस (मिट्टी के बेजान पुतले) से कहा 'हो जा', और वह 'हो गया' (क़ु. ३:५९)

प्रथम पुरुष की पत्नी का नाम वैदिक धर्म ने शतरूपा बताया, अर्थात् 'सैकड़ों रूपों वाली'। बाइबिल व क़ुरआनी धर्म ने आदम की पत्नी को 'हव्वा' कहा, अर्थात् 'बहुत से जीवित मनुष्यों की मां'—

और आदम ने अपनी पत्नी का नाम 'हव्वा' रखा, क्योंकि वह सब जीवित मनुष्यों की मां है (उत्पत्ति-३-२०)

स्वायम्भूव मनु या आदम की पत्नी शतरूपा या हव्वा के जन्म का विवरण सभी ग्रन्थों में देखें। क़ुरआन के अनुसार—

हे मानवमात्र! अपने प्रभु (ही) से डरो जिसने तुम सब की एक ही प्राण

> से उत्पत्ति की और उसी प्राण से उस का जोड़ा पैदा किया तथा उन दोनों से असंख्य नर नारी फैला दिये... (कु ४:१)

बाइबिल में यह घटना विस्तारपूर्वक कुछ इस प्रकार आई है–

> ... परन्तु आदम के लिए कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके। तब परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसुली निकाल कर उसके स्थान पर मांस भर दिया। और परमेश्वर ने उस पसुली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया, और उसको आदम के पास ले आया।... (उत्पत्ति २:२० से २२)

अब देखिये, वैदिक धर्म में इसका संकेत इन शब्दों में मिलता है–

> फिर ब्रह्मा ने अपने शरीर के दो भाग करके आधे से पुरुष बनाया और आधे से स्त्री बनाई... (मनु स्मृति १:३२)

यह याद रहे कि वैदिक धर्म में बहुत से अस्तित्वों को सगुण नामों से पुकारने के कारण नाम आपस में मिल जुल गए हैं। यहां जैसा कि बाइबिल के बयान से प्रकाश मिलता है कि "ब्रह्मा" ईश्वर को नहीं बल्कि "आदम" या "विराट पुरुष" को कहा गया है। ब्रह्मा को "आदम" कुछ हिन्दू विद्वानों ने भी माना है। (देखिए– ***Ancient Raj Yoga of India, Praja Pita Brahma Kumaris Ishwariya Vidyalaya. P. 18)*** और ब्रह्मा नाम के एक नहीं बल्कि दो प्रतीक हैं, यह कल्याण पद्म पुराणांक, अक्तूबर १९४४ के पृष्ठ १०, ११ पर विस्तारपूर्वक बताया गया है।

आदम की अब तक की कथा को दोहरा लें और फिर आगे बढ़ें।

प्रथम जीवात्मा–आदि पुरुष–प्रजापति को साधन बनाते हुए, प्रभु या परब्रह्म ने मिट्टी से आदम की उत्पत्ति की, फिर उसमें प्राण फूंके और आदेश दिया कि–"हो जा"। स्वायम्भूव मनु–विराट–पुरुष–आदम, जीवित प्राणी बन गए। उन से ही उन की पत्नी हव्वा या शतरूपा पैदा हुई। प्रभु ने फरिश्तों–देवताओं

को आदेश दिया कि 'पुरुष'–'आदम' को. सजदा-साष्टांग करें। वह आदम के आगे झुक गए। यह है अब तक की कथा।

आदम को ज्ञान तथा धर्म की प्राप्ति :

अब प्रश्न यह है कि देवताओं या फ़रिश्तों को यह आदेश क्यों दिया गया कि वह आदम के आगे झुकें और फिर आगे क्या हुआ? क्या अभी तक की कहानी की तरह आगे के बयान में भी सभी के यहां सर्वसम्मति है? आइये देखें !पुरुष का स्थान देवताओं से भी ऊंचा था इस का कारण बताते हुये क़ुरआन कहता है–

> और जब तुम्हारे प्रभु ने फरिश्तो से कहा कि मैं पृथ्वी पर एक खलीफा (अर्थात प्रतिनिधि) बनाने वाला हूं... (क़ुरआन २-३०)

पृथ्वी पर अपना प्रतिनिधि–ख़लीफ़ा-वाइसराय-उपराम बनाने का जब प्रभु ने इरादा किया तो इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसने आदम-पुरुष को बनाया।

परब्रह्म के प्रतिनिधि का स्थान उस के बाद सब से ऊंचा होना था। देवताओं अर्थात फ़रिश्तो से भी ऊंचा। प्रतिनिधित्व का कर्तव्य पूरा करने के लिये प्रभु ने आदम को सभी प्रकार के नाम सिखाये और सभी नाम करण की हुई वस्तुओं को उसे दिखाया (अर्थात् हर वस्तु का हर प्रकार का ज्ञान दिया) फिर देवताओं (फ़रिश्तों) से जिन के पास इतना सम्पूर्ण ज्ञान न था. पुरुष–आदम के आगे झुकने को कहा। महादानव के अतिरिक्त सभी ने आदम को साष्टांग किया। दानव को यह भ्रम था कि वह पुरुष–आदम से श्रेष्ठ है। क़ुरआन के शब्दों में इसे देखिये–

> और उस (प्रभु) ने आदम को सारे नामों का ज्ञान दिया। फिर उन (वस्तुओं) को फ़रिशतों को दिखाया और कहा. 'यदि तुम (अपने इस विचार में) सच्चे हो (कि आदम प्रतिनिधित्व के योग्य नहीं है) तो मुझे इनके नाम बताओ।' उन्होंने कहा, '(हे प्रभु) आप पवित्र हैं, आप ने जो कुछ हमें सिखाया हम तो उस के अतिरिक्त कुछ भी ज्ञान नहीं रखते' (प्रभु ने आदम से) कहा, 'हे आदम इन सब के नाम फरिश्तों को बताओ' फिर जब उसने उन्हे उन सभी के नाम बताये तो प्रभु ने कहा, 'क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आस्मानों व ज़मीन के सभी भेद

जानता हूं तथा मैं वह भी जानता हूं जो तुम प्रकट करते हो और वह भी जो तुम छिपाते हो।' और जब हमने फ़रिश्तों से कहा 'आदम को साष्टांग करो' तो सभी झुक गये सिवाये (महादानव) इबलीस के। उसने इनकार किया, और अभिमान किया और वह नकारने वालों में हो गया। (कु २:३१ से ३४)

अब वेद में देखें

बृहस्पति ने सबसे पहले सभी पदार्थों का नामकरण किया। यह उन की शिक्षा की प्रथम सीढ़ी है। इनका जो गोपनीय ज्ञान है वह उनकी कृपा से उत्पन्न होता है। (ऋग्वेद १०:७१:१)

जिस सूक्त में यह मंत्र है उसके लिये स्वामी वेदानन्द जी महाराज कहते हैं—

ऋग्वेद के १०-७१ सूक्त का विषय ज्ञान है। सृष्टि के आरम्भ में भगवान ने मनुष्य को किस प्रकार ज्ञान दिया, इत्यादि का विवरण[१]...

यह सभी पदार्थों का नामकरण या हर प्रकार का ज्ञान जो प्रथम पुरुष को स्वर्गलोक में अपनी उत्पत्ति के पश्चात प्राप्त हुआ, धर्म की आधारशिला थी और इस प्रकार इस्लाम की भाषा में पहला इन्सान, पृथ्वी पर पधारने वाला पहला देवदूत था। इसी ज्ञान के कारण देवताओं (फ़रिश्तों) को प्रथम पुरुष के आगे झुकने का आदेश हुआ था।

वेद बताते हैं—

देवताओं ने मानसिक यज्ञ में जो विराट पुरुष का पूजन किया, उससे संसार के गुण-धर्मों के धारण कर्ता धर्म उत्पन्न हुये... (ऋग १०:९०:१६)

इस प्रकार वेद भी विराट पुरुष के प्रथम देवदूत होने की पुष्टि करते हैं। बाइबिल

---

(१) (पृ. ३०, सुधारक पत्रिका, वेद-प्रवेश विशेषांक मार्च १९६१, गुरुकुल, भज्जर (रोहतक)

में यह नामकरण वृतान्त निम्न है, परन्तु यहां उसे केवल पशु पक्षियों के ज्ञान तक सीमित कर दिया गया है–

> और परमेश्वर भूमि में से सब जाति के जंगली पशुओं और आकाश के सब भांति के पक्षियों को रच कर आदम के पास ले आया कि देखें कि वह उनका क्या नाम रखता है और जिस जिस जीवित प्राणी का जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया (उत्पत्ति २:१९)

यहूदी व ईसाई भाइयों को बाइबिल की उक्त पंक्ति की व्याख्या वेद व कुरआन के विस्तार के प्रकाश में समझनी चाहिए।

स्वर्गलोक से पृथ्वी पर आगमन :

प्रथम पुरुष, यहां तक की कथा के अनुसार अभी भूमि पर नहीं आया है, अभी वह स्वर्गलोक में ही है। अब इस कथा का आगामी भाग सभी ईशग्रन्थों में देखें परन्तु सरलता के लिये, वैदिक धर्म में अलग अलग नामों से पुकारे जाने वाले इस व्यक्तित्व को आगे हम 'आदम' ही कहेंगे क्योंकि एक तो हम जान ही चुके हैं कि बाइबिल व कुरआन मे उस का बाक़ी रखा गया यह नाम उसी भाषा का है जो आदि धर्म की है लेकिन दूसरा इससे अधिक महत्वपूर्ण कारण यह है कि जैसा कि हम आगे देखेंगे, प्रथम पुरुष का नाम वैदिक धर्म ही में 'आदम' भी लिया गया है।
भविष्य पुराण में आदम की कहानी आगे बढ़ती हुई–

> जो आत्मा के ध्यान में ही परायण है, उसने इन्द्रियों का दमन करके उस से यह **'आदम'** नाम वाला पुरुष हुआ और उसकी पत्नी **'हव्यवती'**[1] नाम वाली कही गई है, प्रदान नगर के ही पूर्व भाग में महावन ईश्वर के द्वारा किया गया परम सुन्दर और चार कोस विस्तार वाला कहा गया है। वहां पाप वृक्ष के नीचे जाकर पत्नी के दर्शन में तत्पर था। कलि वहां शीघ्र आ गया जो कि सर्प का रूप किये हुये था। उस धूर्त ने विष्णु की आज्ञा को वंचित कर दिया था और वह भंगता को प्राप्त हो गई। पति ने लोक मार्ग प्रद रम्य फल खाये। उन दोनों ने

(१) इस्लाम धर्म में 'हव्वा'

इन्जीर के पत्तों से वायु का अशन किया था[1]

बाइबिल के अनुसार पत्नी ने सर्प के बहकाने में आकर आदम को वर्जित वृक्ष का फल खाने की प्रेरणा दी और इस प्रकार स्त्री परमेश्वर द्वारा सदा के लिये शापित हो गई। स्त्री को पुरुष से आचरण में नीचा दिखाने वाला यह भाग देववाणी मान्य नहीं हो सकता। इसी प्रकार बाइबिल के बयान में कुछ भाग ऐसे हैं जिन में परमेश्वर के सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक होने पर आंच आती है। यह वेद तथा कुरआन की शिक्षा ही नहीं, स्वयं बाइबिल के अन्य भागों के विरुद्ध पड़ता है इसलिये उन्हें भी ईशवाणी मानना असम्भव है। इन भागों को छोड़ते हुए, बाइबिल में वर्णित आदम की कथा ‹न संबंधित भाग हम नकल करते हैं–

> और परमेश्वर ने पूर्व की ओर 'अदन' में एक बाटिका लगाई और वहां आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया। और परमेश्वर ने भूमि से सब भांति के वृक्ष, जो देखने में मनोहर और जिन के फल खाने में अच्छे हैं, उगाए, और बाटिका के बीच में जीवन के वृक्ष को और भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया... तब परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू बाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है, पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना, क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा। ...सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे। वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे, सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने के लिए चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़ कर खाया और अपने पति को भी दिया और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वह नंगे हैं, सो उन्होंने इन्जीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर लंगोट बना लिए। ....तब परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिसमें से वह लिया (अर्थात् बनाया) गया था।
>
> (उत्पत्ति २:८, ९... १६, १७ ,..३: ४ से ७ ...२३)

---

(१) (भविष्य पुराण प्रतिसर्गपर्व ४:२९ से ३३)

भविष्य पुराण तथा बाइबिल के वर्णन क़रीब-क़रीब एक से ही हैं। केवल संक्षेप तथा विस्तार का अन्तर है। क़रआन ने भी यह घटना दोहराई है। वहां बहकाने वाला दानव है। वही दानव जिसने मानव के आगे झुकने से इनकार कर दिया था। भविष्य पुराण व बाइबिल में उसे 'सर्प' अवश्य ही, अलंकृत भाषा में कहा गया है। क़ुरआन के विवरण के अनुसार केवल स्त्री ही दोषी न थी वरन् आदम और उसकी पत्नी दोनों दानव (शैतान) के बहकाने में आ गए। क़ुरआन ने चार्जशीट भी आदम पर लगाई है, स्त्री पर नहीं। एक मूल स्पष्टीकरण क़ुरआन के बयान में और है–

इन्सान शापित होकर पृथ्वी पर नहीं आया बल्कि पश्चाताप के कारण उसे ईश्वर ने क्षमा किया और दण्ड रूप से नहीं अपितु ईश्वर की योजना के अनुसार उसे पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया। यही उसकी उत्पत्ति का मूल कारण था। क़ुरआन का बयान–

> (शैतान से अल्लाह ने) पूछा कि 'मेरी आज्ञानुसार (आदम को) सजदा (अर्थात् साष्टांग) करने से तुझे किस बात ने रोका'। (वह) बोला 'मैं इस से उत्तम हूं (क्योंकि) मुझे आपने अग्नि से पैदा किया और इसकी मिट्टी से रचना की।' (अल्लाह ने) आदेश किया 'तू इस (स्वर्ग) से नीचे उतर, तू इस योग्य नहीं कि इस स्वर्ग में रह कर अभिमान करे। सो निकल, निस्सन्देह तू नीच वर्ग में से है।' उसने अनुमति मांगी कि 'जब सब उठाए जाएंगे, मुझे उस दिन तक अवकाश दीजिए'। फ़रमाया 'तुझे अवकाश दिया गया'। वह बोला 'कि चूंकि आपने मुझे भटकाया है, मैं भी इन (आदम की सन्तान) की घात में आपके सद्मार्ग पर जा बैठूंगा। फिर मैं उन पर सामने से भी आऊंगा और उनके पीछे से भी और उनके दाएं से भी व बाएं से भी और आप उनमें से अधिकतर को कृतज्ञ न पाएंगे।' (अल्लाह ने) फ़रमाया कि 'तू यहां से तुच्छ होकर निकल। (आदम की सन्तान) में से जो तेरे पीछे चलेगा मैं (उस सहित) तुम सबसे नरक को भर दूंगा' (और फिर आदम से कहा) 'हे आदम तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में रहो। यहां जिस स्थान से चाहो खाओ परन्तु उस विशेष वृक्ष के पास न जाना नहीं तो तुम दोनों भी हिंसा और अन्याय करने वालों में गिने जाओगे।' फिर दानव ने उन दोनों के मन में कुविचार डाला ताकि उन की लज्जा के अंग जो

एक दूसरे से छिपाए गए थे उनके सामने खोल दे। उसने उन से कहा 'तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें जो उस वृक्ष (के फल) से रोका है तो केवल इस कारणवश रोका है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें अमर जीवन न प्राप्त हो जाए' और उसने शपथपूर्वक उनसे कहा कि 'मैं तुम्हारा शुभचिन्तक हूं'। इस प्रकार धोखा देकर दोनों को अपने जाल में फंसा लिया। फिर जब उन्होंने उस वृक्ष का स्वाद लिया तो उनके गुप्त अंग एक दूसरे के सामने खुल गए और वह अपने शरीर को स्वर्ग के पत्तों से ढांकने लगे। तब उनके प्रभु ने पुकारा 'क्या मैंने तुम्हें उस वृक्ष से न रोका था और तुम से न कहा था कि दानव तुम्हारा खुला दुश्मन है?' दोनों बोल उठे 'हे प्रभु हम ने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया, अब यदि आपने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न की तो हम अवश्य ही नष्ट हो जाएंगे'। प्रभु ने फ़रमाया 'तुम अब (पृथ्वी पर) उतर जाओ। (याद रखना कि) तुम और दानव एक दूसरे के दुश्मन हो और एक निश्चित समय तक पृथ्वी पर तुम्हारा ठिकाना व जीवन सामग्री है। वहीं तुम को जीना और वहीं मरना है और उसी में से अन्त में तुम्हें निकाला जाएगा।' (कु ७:१२ से २५)

आदम की क्षमा याचना स्वीकार करने का विवरण क़ुरआन में एक और स्थान पर यूं है–

फिर आदम ने अपने प्रभु ही से क्षमा मांगने के लिए शब्द सीखे। उसने आदम का पश्चाताप स्वीकार किया। वह प्रभु तो है ही अत्यन्त कृपालु व अत्यन्त क्षमाशील। और हमने आदेश दिया कि तुम सब इस स्वर्ग से नीचे उतर जाओ और फिर जब तुम्हें मेरी ओर से मार्गदर्शन प्राप्त हो तो जो उसके पीछे चलेंगे उनके लिए न कोई भय होगा और न शोक। और जो इन्कार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएंगे वह ही नरक वासी होंगे और उस में वह सदा रहेंगे। (कु २:३७ से ३९)

इस प्रकार पृथ्वी पर प्रथम मनुष्य, हम सब के पूर्वज ह० आदम अ०, ईश्वर के पैग़म्बर (देवदूत) के रूप में पधारे।

आदम 'हिन्द' में उतरे थे?

धर्म की एकता व ख़ून की एकता के प्रतीक आदम की कथा अधूरी ही रह जाएगी

यदि धार्मिक इतिहास की एकता को सिद्ध करने वाले इस तथ्य का हम वर्णन न करें कि–

कुरआनी धर्म की परम्परा के अनुसार प्रथम पुरुष आदम को पृथ्वी पर भारतीय उप-महाद्वीप में उतारा गया था।[१]

> सदी का कथन है कि ह० आदम, 'हिन्द' में उत्तरे। आप के साथ 'हजर-ए-असवद'[२] था और स्वर्ग के पेड़ के पत्ते थे जिन्हें हिन्द में फैला दिया और उस से सुगंधित पेड़ पैदा हुए। ह० इब्ने अब्बास कहते हैं कि हिन्द के शहर 'दजना' में उतरे थे। हसन बसरी का कहना है कि आदम हिन्द में और मां 'हव्वा' जिद्दा में उतरीं[३]...

प्रसिद्ध मुसलमान शोधकर्त्ता सैय्यद सुलैमान नदवी अपनी पुस्तक 'अरब-हिन्द ताल्लुक़ात" में लिखते हैं– (अनुवाद उर्दू से हिन्दी)

> अरब वासियों का दावा यह है कि हिन्दुस्तान से उन का सम्बन्ध केवल चन्द हज़ार वर्ष का नहीं वरन उत्पत्ति के प्रारम्भ से ही यह देश उनकी पैतृक भूमि है। हदीसों व कुरआनी भाष्यों में जहां ह० आदम की कथा है, बहुत सी परम्पराओं के अनुसार यह उल्लेख मिलता है कि "आदम जब आसमान की जन्नत से निकाले गए तो वह इसी ज़मीन की जन्नत में जिस का नाम 'हिन्दुस्तान जन्नत निशान' है, उतारे गये। सरान्द्वीप (श्रीलंका) में उन्होंने पहला क़दम रखा जिसका चिन्ह उसके एक पर्वत पर विद्यमान है," 'इब्ने जरीर,'[४] 'इब्ने अबी हातम'[५] और

---

(१) इसकी पुष्टि के लिए हम जो प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं उन्हें इस्लामी शोध सिद्धान्तों की कसौटी के अधार पर 'कमज़ोर प्रमाण' माना जाता है परन्तु यह भी एक हकीक़त है कि इनके विरुद्ध या इन प्रमाणों से टकराता हुआ कोई और दावा भी मुसलमान विद्वान नहीं करते हैं।

(२) हजर-ए-असवद–अर्थात : काला पत्थर जिसे वेद में 'मत्स्य शिला' और 'कृष्ण शिला' कहा गया है

(३) (इब्ने क़सीर-कु २:३५ के भाष्य में)

(४) प्रसिद्ध कुरआनी भाष्य

(५) हदीसों का एक संकलन

'हाकिम'[1] में है कि "हिन्दुस्तान के उस क्षेत्र का नाम जिसमें ह० आदम उतरे, 'दजना' हैं।" क्या यह कहा जा सकता है कि यह 'दजना' – दखन या दख्खन[2] है जो भारत के दक्षिण क्षेत्र का प्रसिद्ध नाम है ?

एकता का एकमात्र आधार :

सभी ईशग्रन्थों के सामन्जस्य पर आधारित यह मानवता की शुरूआत की कथा है। कितने आश्चर्य की बात है। अज्ञात समय बीत जाने के बाद भी उस एक 'मानव' की कथा की समानता आज के सभी लड़ने झगड़ने वालों के यहां ईश्वर के द्वारा सुरक्षित रखी हुई है। हां, उस मानव की कहानी जिससे मानव जाति का प्रारम्भ हुआ और कितने दुख की बात है कि हम तब भी बिखरते टूटते ही चले जा रहे हैं। आपस में भी टूट रहे हैं और ईश्वर से भी टूटे हुए हैं। कैसे न हों? आदम से संबंध टूटेगा तो यही होगा। वह ही तो आदम जाति की एकता का प्रमाण था और साथ ही वह पहला ईश दूत होने के नाते ईश्वर को पहचानने का साधन भी था। दानव, जो मानव का शुत्र है, आदम की सन्तान को यह भुलाता रहा, इन्सान को सद्मार्ग से भटकाता रहा। जब जब धर्म की हानि हुई ईश्वर के देवदूत तब तब आकर पथप्रदर्शन करते रहे। इन्सान को उसका लक्ष्य याद दिलाते रहे कि वह संसार में ईश्वर का प्रतिनिधि है। यहां उसे अपना राज्य नहीं राम राज्य, *Kingdom of God* खुदा की बादशाहत स्थापित करना है। देवदूत यह स्मरण कराते रहे कि सभी का पिता एक है और इसी कारण सभी का धर्म भी एक होना चाहिए। वही धर्म जो आदम ने ईश्वर से प्राप्त करके हमें दिया। देवदूत यह भी याद दिलाते रहे कि सभी का पूज्य एक ही परब्रह्म है, एक ही ईश्वर है। ईश्वर के बाद इन्सान सर्वश्रेष्ठ है। देवताओं तक को ईश्वर ने इन्सान के आगे झुकाया। इन्सान उसका प्रतिनिधि होने के कारण उसके अतिरिक्त सबसे बड़ा है।

एक पूज्य, एक पिता, एक धर्म, एक खून, यह है एकता का एकमात्र आधार।

---

(१) हदीसों का एक संकलन
(२) दख्खन–हिन्दी रूपांतर दक्षिण
(३) (अरब-हिन्द ताल्लुकात, सै० सुलेमान नदवी, पृ. १:२)

४

अग्नि रहस्य

आत्मा लोक में देवदूत ....

एक धर्म की खोज और उस पर सभी की सहमति से पहले धर्म लाने वाले देवदूतों पर सहमति आवश्यक है।

प्रत्यक्ष रूप में ऐसा प्रतीत होता है कि महाजल प्लावन वाले मनु (ह० नूह अ०) वह अन्तिम देवदूत थे जिनमें सभी धर्मों के अनुयायी आस्था रखते हैं और उनके बाद आने वाले अन्य ईशदूतों को वैदिक धर्म वाले स्वीकार नहीं करते। क्या वैदिक धर्म सचमुच अपने बाद में आने वाले ईशदूतों की सूचना नहीं देता? वाद विवाद से बचने के लिए अभी हम धार्मिक इतिहास में मनु(ह० नूह अ०) के आगे नहीं पीछे की ओर लौटते हैं। हम देखते हैं कि उन से पहले मानव जाति के प्रारम्भ में ह० आदम अ० के व्यक्तित्व में भी सभी की आस्था है। परन्तु आदम पृथ्वी लोक पर द्युलोक (आकाश लोक) से ज्ञान लाए थे। वहां आत्माओं के उस लोक में जहां हम सभी की आत्माएं थीं, आदम को ज्ञान किस ने दिया था? क्या स्वयं ईश्वर ने दिया था या किसी गुरु के माध्यम से आदम को ज्ञान मिला था? आदम को ज्ञान देने वाली यदि कोई आत्मा थी तो वह आत्माओं के लोक में ईश्वर की प्रतिनिधि कही जाएगी। पृथ्वी पर देह धारण करने से पहले हम सभी का अस्तित्त्व आत्मा लोक में था, यह विश्व-धर्म का सर्वमान्य सत्य है। वहां यदि ज्ञान का स्रोत कोई एक आत्मा थी तो वह समस्त आस्तिकों की धार्मिक एकता का वास्तविक आधार सिद्ध होगी। आइए देखें कि सभी वर्तमान मूल धर्म इस विषय में कहां तक सहमत हैं।

..... प्रजापति

स्वायंभूव मनु (ह० आदम अ०) को ज्ञान किस ने दिया? वैदिक धर्म के अनुसार–

(क) इस अनश्वर योग को मैं ने "विवस्वत" पर अवतीर्ण किया, "विवस्वत" ने इसे "मनु" को सिखाया और मनु ने "इक्षवाकु" को बता दिया। (गीता ४ : ११)

महाभारत के शान्ति पर्व में इस प्रकार है–

(ख) . "विवस्वत" ने "मनु" को सिखाया तथा मनु ने इक्षवाकु और अन्य जगतवासियों को बताया।

उपनिषदों के अनुसार

(ग) इस आत्म ज्ञान को "ब्रह्मा" ने "प्रजापति" से कहा, प्रजापति ने "मनु" से और मनु ने प्रजाओं को सुनाया...[१]

गीता, महाभारत और उपनिषदों में बताई गई ज्ञान की सीढ़ी को हम सुविधा के लिए यूं भी दर्शा सकते हैं–

	ज्ञा न	
(क)	ज्ञा	→ विवस्वत → मनु → इक्षवाकु
(ख)	।	→ विवस्वत → मनु → इक्षवाकु और अन्यजगत वासी
(ग)	न	→ प्रजापति → मनु → प्रजा

(क), (ख) और (ग) की तुलना करने पर हमें मालूम होता है कि–

१. हम जगत वासियों को ज्ञान मनु से मिला और मनु को विवस्वत या प्रजापति से।

२. गीता या महाभारत के विवस्वत को उपनिषदों में प्रजापति कहा गया है।

३. मनु (ह० आदम अ०) और ईश्वर के बीच ज्ञान की सीढ़ी का नाम प्रजापति है।

---

(१) "छान्दोग्योपनिषद १५:१"—१०८ उपनिषद प० श्री राम शर्मा आचार्य ज्ञान खण्ड संस्कृति संस्थान, बरेली–पृ० ३५६ से लिया गया है।

अर्थात् आदम अ० को ज्ञान ईश्वर ने प्रजापति के माध्यम से दिया था। **इस प्रकार आत्मा लोक में ईश्वर के देवदूत "प्रजापति" हुए।** "प्रजापति" सगुण नाम है। उसके व्यक्तित्व की पहचान अभी बाक़ी है।

'प्रजापति', "आदिपुरुष" हैं

प्रजापति कौन हैं?
ग्रिफ़िथ **(Griffith)** अपने वेद भाष्य में सायण आचार्य के संदर्भ में लिखते हैं–

> ***The Man: The first man or Male, Purusha, Adi Purusha, Praja Pati according to Sayana.***(१)

अर्थात् सायण आचार्य के भाष्य के अनुसार **"आदि पुरुष" और "प्रजापति" एक ही हैं।**

प्रजापति ही इन्द्र हैं

"आदि पुरुष" या "प्रजापति" को इन्द्र भी कहा गया है। ग्रिफ़िथ ऋग मंत्र ४.२१.७ के नीचे फ़ुट नोट (**Foot note**) में 'भार्वर' शब्द को समझाते हुए लिखते हैं– (अंग्रेज़ी से हिन्दी)

> सायण के अनुसार यह "**इन्द्र**" का एक नाम है। संसार का भार उठाने वाला, **अर्थात "प्रजापति"**।

प्रजापति को इन्द्र भी कहा गया है, यह हमें वेदों में दूसरे स्थानों पर भी मिलता है–

> मैं उन सबसे पहले उत्पन्न, सबसे आगे चलने वाले, सर्वरक्षक त्वष्टा (प्रलयकाल में सृष्टि को परमाणु रूप कर देने वाले) को आहूत करता हूं जो सबसे प्रेम भाव से आर्द्र करने वाला "**इन्द्र**" तथा सब दुखों को

---

(१) ग्रिफ़िथ फ़ुट नोट (**Foot Note**) ऋग मन्त्र १०.९३०.२

हर लेने वाला, कामनाओं की वर्षा करने वाला पवित्रात्मा **प्रजापति है।**
(ऋग्वेद ९:५:९)

'इन्द्र', 'अग्नि' हैं

अब प्रश्न यह उठता है कि इन्द्र कौन हैं? वेद बताते हैं--

त्वमग्ने इन्द्रो वृषभः ... (ऋग्वेद २:१:३)
अनुवाद : हे अग्नि, तुम सज्जनों की कामना पूरी करने वाले इन्द्र हो।

हमने देखा कि वेद व्याख्यानुसार--
आदम को ज्ञान प्रदान करने वाले, आदम व ईश्वर के बीच माध्यम, आदि पुरुष, प्रजापति का नाम वेदों में इन्द्र भी है और इन्द्र का नाम अग्नि है। या हम यूं कह लें कि--
आदि मानव, आदम को ज्ञान प्रदान करने वाले "अग्नि" हैं।

आत्मा लोक के देव दूत, 'अग्नि' :

'प्रजापति ही अग्नि हैं', इसी को एक और तरह देखें:

प्राण ही से विराट है, वह अतिदानी है, ऐसे प्राण की सभी सेवा करते हैं। वही सबको प्रेरणा देने वाला सूर्य है, वही सोम है, ज्ञानीजन उस प्राण को ही प्रजापति कहते हैं। (अथर्ववेद ११:४:१२)

मातरिश्वा वायु को प्राण कहते हैं (अथर्ववेद ११:४:१५)

उसी एक अग्नि को विद्वान, मातरिश्वा, यम आदि नामों से पुकारते हैं।
(ऋग्वेद-१० ११४ ५ व अथर्ववेद ९:१०:२८)

ऊपर तीनों मन्त्रों को देखें।

प्रजापति प्राण हैं, प्राण मातरिश्वा है तथा मातरिश्वा अग्नि है। निष्कर्ष वही जो पहले निकला था।
"प्रजापति अग्नि है"

और संतुष्टि करते चलें—

> वृहदारणयक नाम के एक अरण्यक का कहीं कहीं उल्लेख मिलता है . इसमें परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है।[१]

गिरिफ़िथ ने भी ऋग (१०:३१.४) के फुट नोट में लिखा है.

The Eternal Lord : Agni, According to Sayana Prajapati

अर्थात सायण आचार्य के अनुसार भी अविनाशी **अग्नि ही प्रजापति है।** मालूम हुआ कि मनु या आदम या पृथ्वी के पहले इन्सान को आत्म लोक में ज्ञान देने वाले अग्नि हैं। या इसे हम यूं भी कह सकते हैं कि **आत्म लोक में देवदूत अग्नि थे।**

देवदूत अग्नि कौन हैं?

हम देखते हैं कि प्रजापति की खोज हर दिशा से अग्नि पर सम्पन्न होती है। अब **प्रश्न यह** है कि अग्नि कौन हैं?

'अग्नि' कौन है? यह तो ऐसा प्रश्न है जिसे अंग्रेज़ी भाषा में *Million Dollar Question*(दस लाख डालर का प्रश्न) कहते हैं। अग्नि वेदों का मुख्य विषय ही नहीं, मुख्य रहस्य भी है। अग्नि की खोज के आदेश और इस के लिए मन्थन (शोध) की प्रेरणा से वेद भरे हुये हैं। मंथन (शोध) में भी अरणी द्वारा मंथन से **विशेष** रूप से अग्नि का रहस्य खुलने की सूचना दी गई। 'अरणी', मशाल या **सूर्य के लिये** भी प्रयोग होता है और अलंकृत भाषा में इसे ज्ञान का सूचक माना **जा सकता है। अरणी द्वारा मन्थन का अर्थ हुआ,** 'ज्ञान द्वारा शोध'। वेद **भविष्यवाणी करते हैं—**

> भारत पुत्रों ने **इन** धन सम्पन्न **अग्निदेव को मन्थन द्वारा** प्रकट **किया...(ऋग्वेद ३:२३:२१)**

---

(१) 'वृहदारणयक, वैदिक साहित्य, ले० प० रामगोविन्द त्रिवेदी, भारतीय ज्ञानपीठ काशी पृ० १५४ से लिया गया।

यह भी बताया गया कि पहले किसी काल में अग्नि प्रकट हुए थे। फिर अब पुनः प्रकट होंगे और प्रकट शोध द्वारा ही होंगे।

> ....पूर्व काल के समान हम अग्नि को मन्थन द्वारा प्रकट करेंगे।
> (ऋग्वेद ३:२९:११)

सबसे बड़ी बात यह बताई कि अग्नि की खोज तथा उसे प्रकट करने के बाद ही तुम समस्त संसार के मनुष्यों के नायक बनोगे।

> श्रेष्ठ ज्ञानी, अविनाशी कवि, प्रदीप्तीयुक्त देह वाली अग्नि को अरणी मन्थन से प्रकट करो। तुम यज्ञ कर्म में मनुष्यों का नेतृत्व करने वाले हो.... उन्हें प्रारम्भ में प्रकट करो (ऋग्वेद ३:२९:५)

कितने ही नामों की इस भूल भुलइयां में यह न भूलने पाये कि हम प्रथम मनुष्य आदम तथ ईश्वर के मध्य की कड़ी की खोज में हैं। वही जिसने आत्मा लोक में प्रथम मानव को ज्ञान सिखाया। उसी व्यक्तित्व को तलाशतें हुये हम अग्नि तक पहुंचे हैं और अब अपने उद्देश्यानुसार व वेदों के आदेशानुसार, अग्नि को पहचानने का प्रयत्न कर रहे हैं। पहचानने का अर्थ यह है कि उसका अस्तित्व व व्यक्तित्व पूरी तरह स्पष्ट हो जाए।
डा० फ़तेह सिंह का मत है कि–

> अग्नि के प्रतीकवाद को समझने में विद्वानों से इस लिए भूल हुई कि वह यह मान बैठे कि वेद में उस अग्नि की उपासना है जो चूल्हे व वेदि में जलता है, वनों को जलाता है और लकड़ियों को रगड़ कर निकाला जाता है अथवा कभी कभी विदयुत्पात वा पत्थरों के घर्षण आदि से प्रकट हो जाता है।[१]

आर्य समाजी आचार्य दयानन्द सरस्वती वेद भाष्य में ऋग्वेद प्रथम मन्त्र की व्याख्या में लिखते हैं:

---

(१) मानवता को वेदों की देन, डा० फ़तेह सिंह, वेद संस्थान अजमेर, १९८१ पृ० ५४

यास्क मुनि जी ने स्थौलाष्ठीवि ऋषि के मत से अग्नि शब्द का अग्रणी अर्थ किया है।

सनातन धर्मी प० श्री राम शर्मा आचार्य ऋग वेद प्रथम मन्त्र में अग्नि का अनुवाद अग्रणी ही करते हैं।

"अग्रणी" शब्द का अर्थ है, सबसे आगे जिससे आगे या पहले कोई न हो। वेदों मे जब हम अग्नि को देखते है तो अग्नि को कहीं परब्रहम के रूप में पाते हैं, कहीं देव, कहीं आत्मा, कहीं पुरुष, कहीं सूक्ष्म व अदृष्य देह वाला कहीं साक्षात व सामान्य शरीर वाला। कहीं बताया कि अग्नि एक ही है, कहीं कहा गया कि सभी देवता अग्नि हैं, अग्नि कहीं परमेश्वर हैं, कहीं देव कहीं ऋषि... ।

अग्निखोज में सभी भटक रहे हैं :

इतने विभिन्न रूप अग्नि के हैं और फिर यह महत्त्व कि अग्नि को विवेकानुसार खोजो ! अग्नि पर शोध का आदेश ! विद्वानों ने अपनी अपनी समझ के अनुसार अग्नि को समझने का प्रयत्न किया। दर्शन, तत्व ज्ञान, विज्ञान, प्रकृति आदि के आधार पर कई प्रकार से अग्नि की व्याख्या हुई और जो धर्म साधारण जन के लिये बहुत सरल होना चाहिए था उसे समझाने के लिये कितने ही विद्यापीठ खुल गये। हर एक का यह दावा कि उसने अग्नि रहस्य पर से परदा उठा कर वेदों को समझ लिया है। हमारा तात्पर्य यहाँ इन में से सभी ज्ञानियों या विद्वानों का खन्डन करना नहीं है। ब्रहम वाक्य में बहुत गहराई होती है। एक ही वाक्य के अनेकों विद्याओं के प्रकाश में अनेक भाष्य हो सकते हैं परन्तु मूल अर्थ एक ही होगा। अन्य सभी भाष्य यदि मूल अर्थ का विरोध न करते हों तो अपने-अपने स्थान पर सभी ठीक माने जा सकते हैं। अभिप्राय यह है कि एक ब्रहम वाक्य के ऐसे कई प्रकार के भाष्य हो सकते हैं जिनमें से कोई परमाणु शक्ति का उल्लेख करता हो तो कोई मनुष्य के अपने अन्दर की इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने को उसी मन्त्र का विषय प्रमाणित करता हो और उसी [illegible] में किसी अन्य भाष्यकार को सामाजिक अर्थव्यवस्था के कोण दिखाई देते [illegible]। ऐसा सम्भव है कि यह सभी भाष्य एक ही समय में सही हों। ध्यान रहे कि [illegible] का शाब्दिक अर्थ एक ही होगा, अभिप्राय अलग अलग हो सकते हैं शब्द [illegible], प्रभु-वाक्य की इस विशालता के साथ ही उसके देवकृत होने का यह भी आवश्यक आग्रह है कि वह साधारण व्यक्ति के समझने योग्य भी हों। अग्नि पर

दन्त कथाएं बनीं उसे स्थूल अग्नि समझ कर हवन आदि में सामान्य जलने वाली आग की पूजा होने लगी तत्व ज्ञान, दर्शन शास्त्र व सौंख्य दर्शन के विद्वानों ने उसको गूढ़ विषय बना दिया परन्तु क्या किसी ने कभी विचार किया कि अग्नि सम्बन्धी वृतान्त अपने मूल शब्दों के सामान्य अर्थ सहित भी सही होना चाहिए? विचार तो अवश्य किया गया होगा परन्तु एक कमी रह गई।

अग्नि खोज में क्या कमी रह गई?

उन धर्मों में भी जिन्हें अपना नहीं दूसरों का समझते रहे अग्नि को खोजा होता। यदि ऐसा किया होता तो फिर धर्म गूढ़ व कठिन न रहता, सरल हो जाता। विचार करने की बात है कि–
अग्नि वेदों का मुख्य विषय है।
परन्तु यह एक ऐसा रहस्य है जिसे खोजने का आदेश वेदों में भरा पड़ा है। अग्नि को शोध (रिसर्च) द्वारा खोजा जाएगा और उसके बाद ही वेद वाले समस्त विश्व का नेतृत्व करने योग्य होंगे।
ध्यान पूर्वक सोचिए–
वेद सामान्य संस्कृत भाषा में हैं। यह भाषा ऐसी तो नहीं है कि सामान्य संस्कृत जानने वाले उसे समझ न सकें। फिर अग्नि के विषय में इतनी बडी चुनौती क्यों? अग्नि रहस्य पा लेने का इतना बड़ा वरदान क्यों? अवश्य ही किसी असामान्य युगान्तरकारी दिशा में इस भेद का समाधान होगा। यही वह असामान्य दिशा है कि धर्म के अन्य संस्करणों से अग्नि रहस्य के सम्बन्ध में सहायता लीजिये फिर आप देखेंगे कि वेद मन्त्रों के शब्द अपने सामान्य अर्थों में ही समझने योग्य व विश्वास करने योग्य हो जायेंगे।

अग्नि को साक्षात रूप में पहचानें :

वेद हमें बताते हैं कि अग्नि के तीन रूप हैं। पहला रूप वह है जिसमें वह देहधारण नहीं करते, अन्तिम (तीसरा) रूप फिर वह है जिसमें वह अदृश्य होते हैं। हॉं मध्य में उनका एक (दूसरा) रूप ऐसा भी है जब वह साक्षात होते हैं। **बस यही वह अवसर है जब आप उन्हें पहचान सकते हैं। यदि साक्षात अग्नि को न पहचाना तो उनको अदृश्य रूपों में पहचान पाना असम्भव हो जायेगा।**

आइये अग्नि के देहधारी रूप में उनके सारे चिन्ह ढूंढें। यह भी देखें कि धर्म के

अन्य संस्करण उनके साक्षात रूप के विषय में क्या कहते हैं और फिर जब सिरा हाथ आ जाये तो सभी धर्मों में अग्नि के शेष दोनों रहस्यमय रूपों को भी ढूंढेंगे। वेद बताते है–

"जिस अग्नि का व्यापक रूप कभी नष्ट नहीं होता उसे तनूनपात कहते हैं (पहला रूप)
जब वह साक्षात होते हैं तब आसुर और नराशंस कहलाते हैं (दूसरा रूप)
और अन्तरिक्ष में अपने तेज को फैलाते हैं तब मातरिशवा होते हैं, जब वह प्रकट होते हैं तब वायु के समान होते हैं। (तीसरा रूप)
(ऋग्वेद ३-२९:११)

और देखिए

अग्नि का प्रथम जन्म स्वर्ग लोक में विद्युत के रूप में हुआ। (पहला रूप)
उनका द्वितीय जन्म हम मनुष्यों के मध्य हुआ, तब वे जातवेद कहलाये (दूसरा रूप)
उनका तृतीय जन्म जल में हुआ (तीसरा रूप)
मनुष्यों का हित करने वाले अग्नि सदा प्रजवलित होते हैं। उनको स्तुति करने वाले उनकी ही सेवा करते हैं। (ऋग्वेद १०:४५:१)

इन दोनों वेद मन्त्रों पर ध्यान दीजिए। दोनों मन्त्रों में अग्नि के दूसरे रूप के उल्लेख को मिलाकर पढ़ें तो यूं होता है–

उनका द्वितीय जन्म हम मनुष्यों के मध्य हुआ। जब वह साक्षात हुए तो **नराशंस और आसुर और जातवेद** कहलाए।

आशा है आप अग्नि को साक्षात रूप में पहचान गए होंगे। यदि नहीं पहचाने तो पहले एक सिद्धान्त और समझ लें और फिर विचार करें। देव वाणी चूंकि अचूक ज्ञान होती है इसलिए प्रायः भविष्य में पेश आने वाली घटनाएं भूत की भाषा में बयान की जाती हैं। तात्पर्य यह होता है कि भविष्य में पेश आने वाली घटना

इतनी निश्चित है कि उसे घटा हुआ समझो। इस वृतांत शैली के असंख्य उदाहरण सभी ग्रंथों में हैं। इस सिद्धान्त को जानने के बाद जब आप अग्नि के सांसारिक रूप को पहचान की कोशिश करेंगे तो वैदिक काल से पहले नहीं अपितु बाद के काल पर नज़र डालेंगे। वैसे भी जब हम यह जानते हैं कि वेद इस पृथ्वी पर मानव जाति के प्रारम्भ से ही है तो अवश्य ही "मनुष्यों के मध्य जन्म लेने वाला", वैदिक काल के बाद ही जन्म लेगा। **यह भविष्यवाणी है, ना कि बीती हुई घटना।**

अग्नि के लौकिक रूप के नाम–नराशंस, आसुर, जातवेद :

नराशंस, आसुर, जातवेद आदि नाम रखने वाले किस व्यक्तित्व ने हम मनुष्यों के मध्य जन्म लिया? इतिहास से पूछिए मालूम हो जाएगा। **नराशंस** बहुत विचित्र नाम है। नाम से अधिक विशेषण सूचक प्रतीत होता है। नर + आशंस अर्थात 'प्रशंसित नर'। यही नाम १४०० वर्ष पूर्व अरब देश के मरूस्थल में जन्म लेने वाले उस बच्चे का रखा गया था जो मानव इतिहास के महानतम व्यक्तित्वों में गिना गया। उसका नाम ऐसा रखा गया जिसका प्रचलन पहले न था। **"मोहम्मद"**। अर्थात "प्रशंसित"। वह बालक आसुर था। अर्थात सबसे नीचे आने वाला। उसे इस संसार में ईश्वर का अन्तिम देवदूत, सबसे बाद में आने वाला देवदूत होना था। सांसारिक ईशदूतों की सूचि में आदम अ० सबसे ऊपर थे तथा नाराशंस (महोम्मद स०) सबसे अन्त में अथवा आसुर थे। वह बालक जातवेद था। उसने कहीं किसी से शिक्षा प्राप्त नहीं की थी परन्तु फिर भी वह ज्ञानी था। अरबी भाषा में वह "उम्मी" कहलाया। उम्मी, जातवेद का अरबी रूपांतर है। अनादिकाल पूर्व की गई भविष्यवाणी पूरी हुई थी। अग्नि ने हम मनुष्यों के बीच साक्षात रूप में जन्म लिया था।

वेदों में नराशंस सम्बन्धी घटनाएं :

कोई संदेह बाक़ी न रह जाए, इस कारणवश वेदों ने नराशंस की जीवनकाल की महत्वपूर्ण घटनाओं की ओर संकेत कर दिया था :

> **हे मनुष्यों ये आदर से सुनो की नराशंस की बड़ाई की जाएगी। इस कौरम (शरणार्थी) को हम साठ हज़ार नव्वे शत्रुओं से (अपनी शरण**

में) लेते हैं। उसकी सवारी ऊंट है, उसकी बीस ऊंटनियां हैं। उसकी महानता आकाश को झुका देती है।
ईश्वर ने उस मामह ऋषि को सौ दीनार (स्वर्ण मुद्रा) दस मालायें तीन सौ घोड़े और दस हजार गाएं दीं

(अथर्ववेद २०:१२७:१.२.३)

इन वेद मन्त्रों में जो संकेत है उन पर एक एक करके विचार करें।

★
नराशंस की प्रशंसा की जायगी:—पहली बात तो यह स्पष्ट है कि नराशंस को वैदिक काल के बाद में किसी युग में प्रकट होना था। दूसरी भविष्यवाणी इसमें नराशंस की प्रशंसा किये जाने की है। हम देखते हैं कि संसार में किसी व्यक्ति की आज तक इतनी प्रंशसा नहीं हुई जितनी नराशंस की हुई। नराशंस के जीवन काल (१४०० वर्ष पूर्व) से आज तक संसार की जनसंख्या का एक बड़ा भाग नित्य बिना नागा दिन में पांच बार अपनी नमाज़ में नराशंस की प्रशंसा करते हुये ईश्वर से उनके लिये प्रार्थना करता है।

अपने अनुयायियों ही से नहीं बल्कि—
मानव इतिहास में आज तक कोई धार्मिक नायक ऐसा नहीं पैदा हुआ जिसने अन्य धर्मों के अनुयायियों से ऐसी श्रद्धांजलि प्राप्त की हो जैसी नराशंस ने उन लोगों से ली जो उसके धर्म में नहीं थे। उन ग़ैर मुसलिमों की केवल नामों की सूची के लिए एक अलग पुस्तक की आवश्यकता पड़ेगी जिन्होंने नराशंस की प्रशसा की है। निम्न में हम केवल तीन साक्षी प्रस्तुत कर रहे हैं जिनमें से एक हिन्दू है, एक यहूदी तथा एक ईसाई।

प्रोफ़ेसर रामकृष्ण राव लिखते हैं--

> **मोहम्मद के व्यक्तित्त्व की पूरी सच्चाई में उतर पाना सबसे कठिन है। मैं केवल उसकी एक झलक ही पा सकता हूं। सिनेमा के दृष्यों जैसा कितना नाटकीय अनुक्रम है!** ये मोहम्मद हैं, देवदूत—यह मोहम्मद है, जनरल—ये मोहम्मद हैं, बिज़निसमैन—मोहम्मद, प्रचारक—मोहम्मद, दार्शनिक—मोहम्मद, व्यवस्थास्थापक—मोहम्मद, सुवक्ता—मोहम्मद, सुधारक—मोहम्मद, अनाथों का सहारा—मोहम्मद, गुलामों

का संरक्षक—मोहम्मद, स्त्रियों का उद्धारकर्ता—मोहम्मद, न्यायाधीश—मोहम्मद, संत—और इन सभी प्रतापीमान मैदानों में, मानव धमाधमी के इन सभी विभागों में वह एक हीरो के समान हैं।[१]

अब एक यहूदी मनोवैज्ञानिक की गवाही देखें जिस की दृष्टि में नराशंस, मूसा से महान थे।

१५ जुलाई १९८४ की साप्ताहिक अमरीकी पत्रिका "टाइम्स" ने, ***"Who were history's great Leaders?"*** (इतिहास में महान नायक कौन कौन थे?) के विषय पर विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों के विचार छापे थे, **अमरीकी मनोवैज्ञानिक जूल्स माज़रमैन** ***(Jules Masserman)*** ने अपने मत के तीन आधार बनाए। कि उसे

1 जनता के लिए रहन सहन का उत्तम प्रबन्ध करने वाला होना चाहिए।

2 एक ऐसी सामाजिक अर्थव्यवस्था का स्थापक होना चाहिए जिस में लोग अपने को सुरक्षित समझें।

3 एक ही मान्यता पर आधारित मत पर लोगों को चला सकने वाला हो।

श्री माज़रमैन ने निर्णय लिया–

> पास्चर *(Pasteur)* और साक *(Salk)* जैसे लीडर केवल पहली शर्त पूरी करते हैं। गांधी, कन्फ्यूशस *(Confucius)* जैसे लोग एक ओर तथा सिकन्दर *(Alexander)*, क़ैसर *(Caeser)* और हिटलर जैसे लीडर दूसरी ओर हैं जो दूसरी या शायद तीसरी भी शर्त पूरी करते हैं। ईसा तथा बुद्ध केवल तीसरी श्रेणी में हैं। **शायद सभी युगों का महानतम नायक "मोहम्मद" था** जिस में तीनों श्रेणियों की सभी विशेषताएं थीं। **उससे दूसरे नम्बर पर मूसा ने यह सब किया।**

और अन्त में एक ईसाई का मत जो नराशंस को ह० ईसा से महानतर मानता है:

श्री माइकिल हार्ट ***(Michael H. Hart)*** ने जो कि एक अमरीकी ज्योतिष-गणितशास्त्रज्ञ तथा इतिहासकार है, अपनी ५७२ पृष्ठ की पुस्तक ***"The Greatest 100 in History"*** (इतिहास के सब से महान १०० व्यक्ति) में, उन १०० व्यक्तियों का क्रमानुसार उल्लेख किया है जो उन के विचार में

---

(1) *The Prophet of Islam, by prof. Ram Krishna Rao, (then) head of the department of philosophy, Maharani Arts College for Women, Mysore, Crecent Publishing Co. IIIrd edition, 1982- p 17.*

इतिहास के सब से महान थे। **अपनी सूची में ह० मोहम्मद स० को इस विशेषज्ञ ने प्रथम स्थान दिया है जबकि ह० ईसा को उसने तीसरे स्थान पर रखा है।**

★

साठ हज़ार नब्बे शत्रुओं से उसकी सुरक्षा की जाएगी :– नराशंस द्वारा ईश्वर के प्रतिनिधित्व की घोषणा होते ही अधिकतर मक्का वासी उनके शत्रु बन गए। उस समय मक्के की कुल जन संख्या इतनी ही थी।[१] इतिहास से पता चलता है कि ईश्वर ने नराशंस की सभी शत्रुओं के विरूद्ध सहायता की।

★

नराशंस की सवारी ऊँट – नराशंस ने जिस देश में जन्म लिया वहां की साधारण सवारी ऊँट है। इतिहास बताता है कि नराशंस की सवारी जीवन भर ऊँट रही।

★

नराशंस के पास बीस ऊँटनियाँ थीं :– यूरोप के इतिहासकार विलियम म्योर *(Sir William Muir)* ने अपनी पुस्तक LIFE OF MAHOMET (मोहम्मद का जीवन) में लिखा है कि–

> मोहम्मद (स०) की बीस दूध देने वाली ऊँटनियाँ थीं जो अलग़ाबा (की विजय) में हाथ आई थीं। इन (ऊँटनियों) का दूध उनके परिवार के लिए था।[२]

★

उनका एक सांसारिक नाम मामह होगा – इस शब्द का मूल ''मह'' है। जिस का अर्थ है महान्। इतिहास में हमें कोई अन्य ऋषि 'मामह' के नाम का नहीं मिलता जिसकी वेदों की भविष्य वाणी के अनुसार संसार भर में प्रशंसा की गई हो।

★

उसे अपनी मातृ भूमि को त्यागना पड़ा :– हम देखते हैं कि ईशदूतत्त्व की घोषणा के १३ साल बाद नराशंस को मक्के से घर बार त्याग कर निकलना पड़ा और जीवन के शेष १० साल उन्होंने मदीने में बिताये।

---

१. तारीख़े मिस्लुल् कामिल. इब्ने असीर, *Quoted by* कारी बशीरूद्दीन पण्डित, उर्दू पत्रिका बुरहान' फ़रवरी १९७३ देहली

(२) *Life of Mahomet, William Muir, (Abridged edition 1894),* Ch. XXXVII P. 516

★

उसे सौ दीनार (स्वर्ण मुद्रा) प्रदान हुये :— मक्के में नराशंस का संदेश स्वीकार करने वाले बड़ी परीक्षा में पड़ गये। मक्का वासियों ने उन्हें इतना सताया कि वह अपना घर बार, धन, व्यापार सब कुछ त्याग कर मक्के से निकलने को तैयार हो गये, किन्तु उन्होंने नराशंस की दी हुई शिक्षा त्यागना अस्वीकार कर दिया। नराशंस के ईशदूतत्व की घोषणा के छटे साल उनकी अनुमति से ऐसे सौ मतवाले अपना देश त्याग कर खाली हाथ हब्शा *(Abyssinia)* की ओर प्रस्थान कर गये। नराशंस के लिए अपना सब कुछ त्याग देने वाले शरणार्थियों की संख्या १०० थी। बाद में जब स्वयं नराशंस ने मदीने के लिये प्रस्थान किया तो उनमें से अधिकतर मदीने चले आये। नराशंस की दृष्टि में इन १०० शरणार्थियों का बहुत ऊँचा पद था।

★

दस मालाओं से वरद्धांकित :— नराशंस के दस सतसंगी ऐसे थे जिन्हें उन्होंने उनके जीवन काल ही में यह शुभ सूचना दे दी थी कि वह मृत्यु के बाद स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। ये दस सतसंगी 'अशरा मुबश्शिरा' कहलाते थे। हदीस की पुस्तकों में इन दस बहुमूल्य साथियों की विस्तारपूर्वक चर्चा है।

★

तीन सौ घोड़ों वाला :— नराशंस पर उनके शत्रुओं ने जब पहली बार आक्रमण किया तो उन पर प्राण निछावर करने वाले तीन सौ से कुछ अधिक बलिदानियों ने उनका साथ देते हुए शत्रुओं को युद्ध में मार भगाया। यह बलिदानी "असहाबे बदर" कहलाये और जब तक जीवित रहे, नराशंस के आदेशानुसार उनको हर एक से सम्मान मिलता रहा।

★

दस हज़ार गौओं से युक्त :— नराशंस ने जब 'मक्का' नगर पर विजय प्राप्त की तो उनके साथ १०,००० सहयोगी थे। इन्हें इस मन्त्र में गायों से उपमा दी गई है, क्योंकि "गौ" शब्द जिन अर्थों के लिए अलंकार स्वरूप प्रयोग किया जाता है, वह निम्न हैं–

(क) गौ का मूल "गम" है जिसका अर्थ जंग के लिए जाना या निकलना है। चूंकि युद्ध में गौओं को जीत कर लाने का बहुत महत्त्व होता था इसलिये गायें को गौ कहते थे।

(ख) प्रशंसनीय, शुभ, शत्रुओं को उखाड़ फेंकने वाला, बैल के समान शक्तिमान।

(ग) मानव के लिए भी गाए की उपमा दी जाती है, जैसे शतपथ ब्रा० १२-९-१-७ में दी गई है।

(घ) गौ शब्द श्रेष्ठ के लिए भी प्रयोग होता है।

नराशंस के सहयोगियों में ऊपर बयान किए गए सभी गुण थे। नराशंस अपनी मात्र भूमि 'मक्का' से निकाले जाने के आठ साल बाद दस हज़ार सहयोगियों के साथ 'मक्का' की विजय के लिए निकले। बिना किसी ख़ून ख़राबे के ईश्वर ने उनके शत्रुओं को भयभीत करके उनके सामने झुका दिया। नराशंस व उनके १०,००० सहयोगियों ने मानवता का एक मात्र ऐतिहासिक उदाहरण स्थापित करते हुए एक भी शत्रु से बदला न लिया। इन १०,००० सहयोगियों की इन विशेषताओं के कारण इनको गौ कहा गया।

'ईश्वर की वाणी में नराशंस के सहयोगियों को गए से उपमा दी गई है।' नराशंस के जीवन काल में भी इसका एक उदाहरण मिलता है। देश त्यागने के तीन साल बाद (अर्थात् सन ३ हिजरी में) नराशंस के मक्का निवासी शत्रुओं ने मदीने पर आक्रमण किया जहाँ नराशंस शरणार्थी बन कर पहुँचे थे। ''ओहोद'' पर्वत पर दोनो की सेनाओं मे युद्ध हुआ। युद्ध से पहले नराशंस ने स्वप्न में देखा कि गायें काटी जा रही हैं। उसके बाद युद्ध में नराशंस के सहयोगी बड़ी संख्या में शहीद हुए। स्वप्न का अर्थ उन्होंने ये बताया कि सपने में गायों का अभिप्राय उनके सहयोगियों से था।[1]

अथर्व वेद के इस १२७वें सूक्त में नराशंस को भली प्रकार चित्रित कर दिया गया है और इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि **नराशंस और अरब देश के मोहम्मद स० एक ही व्यक्तित्व के अलग अलग भाषाओं में सगुण नाम थे।**

नराशंस अन्य ग्रन्थों में :

नराशंस का वृतान्त वेदों के ३१ वेद मन्त्रों में 'नराशंस' नाम से आया है। इसके अतिरिक्त नाम का प्रयोग न कर के नराशंस की जीवन सम्बन्धी घटनाओं पर बहुत मन्त्र हैं।

नराशंस को इतिहास 'मोहम्मद' नाम से जानता है। यह अग्नि का साक्षात रूप है। अग्नि के इस दूसरे रूप 'नराशंस' से अग्नि के प्रथम व अदृश्य रूप की ओर

(१) *Mohammed in world scriptures*. A.H. Vidyarthi, Deep & Deep Publications, New Delhi 1988, p. 81

वापिस जाकर अभी हमें यह भी देखना है कि मुसलमान व इसाई अग्नि के विषय में क्या मान्यता रखते हैं। परन्तु पहले नराशंस की अन्य ग्रन्थों से सिद्धि–

ईश्वर के सभी दूतों व सभी ग्रन्थों ने नराशंस के संसार में आने की सूचना दी थी। बाईबल में अनेकों स्थानों पर उनके सम्बन्ध में भविष्यवाणियाँ हैं। हम यहाँ केवल दो स्थानों को लेंगे। एक तौरत से तथा एक इन्जील से

★ **तौरेत में :**

> हे मूसा मैं उनके लिये **उनके भाईयों के बीच में से तेरे सम्मान** एक नबी को उत्पन्न करूंगा और **अपना वचन उसक के मुंह में डालूंगा** और जिस-जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूंगा वही वह उन को कह सुनायेगा। (व्यवस्थाविवरण १८-१८)

तौरेत की इस पंक्ति को ईसाई ह० ईसा के सम्बन्ध में भविष्यवाणी समझते हैं परन्तु ऐसा नहीं है। यहाँ तो स्पष्ट रूप से नराशंस का बयान है। इस पंक्ति में निम्न सूत्र उल्लेखनीय हैं

1– उनके (अर्थात् इस्राइलियों के) भाईयों के बीच में से:- ईशदूत इब्राहीम के दो पुत्र थे इस्माईल व इस्हाक़। इस्माईल का वंश इस्माईली कहलाया। तथा इसहाक़ के पुत्र की उपाधि इस्राईल होने के कारण उन की सन्तान इस्राईली कहलाई। इस प्रकार इब्राहिम के दो पुत्रों से दो जातियाँ चलीं। इस्राईली व इस्माईली। मूसा इस्राईली थे, ईसा इस्राईली थे परन्तु मोहम्मद स० (नराशंस) इस्राईलियों के भाईयों अर्थात् इस्माईल्यों में से थे। बाइबिल में भाईयों का शब्द इन्हीं दोनों जातियों के परस्पर भाई होने के अर्थ में बहुत जगह प्रयुक्त हुआ है। (देखें उत्पत्ति १६-१२)

अतः यह भविष्यवाणी ईसा के लिये न होकर नराशंस के लिये थी। जिनका मोहम्मद नाम से भी बाइबिल में जिक्र है।

उदाहरण के लिए मूल इब्रानी *(Hebrew)* भाषा में निम्न पंक्ति को (देवनागरी अक्षरों) में देखें।

'हिक्को ममित्तादिम विकुल्लो महामदेम[१] जेहदूदी बेजेम राई.बनूटे वापुस हलम' (श्रेष्ठ गीत ५।१६)

अनुवाद--उसका मुखड़ा बहुत मधुर है, हाँ वह महामद है। यही मेरा प्रीतम है और यही मेरा मित्र है, यरुशलेम की पुत्रियों।

२- तेरे (अर्थात् मूसा के) समान एक नबी:- ईसा मूसा के समान न थे अपितु नराशंस मूसा के समान थे क्योंकि-

(क) मूसा के माँ व बाप दोनों थे, इसी प्रकार नराशंस का भी साधारण मनुष्यों की तरह जन्म हुआ था और उनके भी माता व पिता थे परन्तु ईसा ने कुंआरी मरियम के पेट से जन्म लिया था जो ईश्वर के चमत्कार से गर्भवती हुई थीं।

(ख) मूसा व नराशंस दोनों ने कई विवाह किये परन्तु ईसा कुंआरे रहे।

(ग) मूसा व नराशंस दोनों संविधान लाये परन्तु ईसा नया संविधान नहीं लाये थे बल्कि उन्होंने मूसा के संविधान को ही लागू करने को कहा था। (मत्ती ५-१७,१८)

(घ) मूसा व नराशंस की मृत्यु साधारण मनुष्यों की तरह हुई थी, परन्तु ईसा का जाना असाधारण था।

इस प्रकार ईसाइयों के तर्क के विपरीत उक्त भविष्यवाणी ईसा के लिये न होकर नराशंस के सम्बन्ध में थी।

यह है नराशंस के लिये तौरेत द्वारा मूसा की गवाही जिस के विषय में कुरआन नकारने वालों को याद दिलाता है--

> **कहो कभी तुम ने सोचा भी कि यदि यह वाणी ईश्वर ही की ओर से हुई (तो तुम्हारा क्या अन्जाम होगा?) और स्वयं अपने जैसे पर तो इस्राईलियों में से एक गवाह (यानी मूसा) गवाही भी दे चुका है (कुरआन ४६:१०)**

---

(१) महामदेम

इबरानी भाषा में नाम के अन्त में "एम" (EM or IM) सम्मान देने के लिये लगाया जाता है। बाइबिल के उपलब्ध अनुवादों में 'महामद' का भी अनुवाद कर दिया गया है जैसे बहुत से वेदों के अनुवादों में "नराशंस" शब्द का भी अनुवाद कर दिया गया है। संयोगवश इबरानी में भी महामद का वही अर्थ है जो अरबी में मोहम्मद तथा संस्कृत में नराशंस का। क्या यह संयोग ही है?

३- **अपनी वाणी उस के मुंह में डालूंगा:--** ऋग्वेद के अनुसार ४० वर्ष की आयु में नराशंस को पर्वतों में ईश दूतत्व प्राप्त हुआ था।

> जिसने ४० वर्ष की आयु में दानव पर पर्वतों के मध्य में विजय प्राप्त की थी, हे लोगो वही इन्द्र है (ऋग्वेद १:१२:११)

स्मरण रहे कि वेदानुसार अग्नि व इन्द्र एक ही हैं

> विद्वान इन्द्र, मित्र, वरुण को अग्नि ही जानते हैं
> (ऋग्वेद १०:११४:५ व अथर्ववेद ९:१०:२८)

और यह भी याद रहे कि अग्नि का मनुष्यों के बीच साक्षात रूप नराशंस है

और बाइबिल में है कि--

> और वही पुस्तक अनपढ़[१] को यह कह कर दी जाये कि "इसे पढ़" और वह कहे, "मैं तो अनपढ़ हूँ।"

अब देखिये कि इस्लामी परम्परा में वेद व बाइबिल की यह दोनों घटनायें यूं बयान हुई हैं--(उर्दू से हिन्दी)

> "जब आप (मोहम्मद स०) की आयु ४० साल ६ महीने हो गयी तो एक दिन रमजान के महीने में अचानक आप पर (जबल-ए-नूर नामक पर्वत की चोटी पर स्थित गुफा गार-ए-हिरा में ईशवाणी अवतरित हुई। और फ़रिश्ते ने आप के सामने आकर आप से कहा 'पढ़ो'....(इस घटना का बयान स्वयं ह० मोहम्मद स० के शब्दों में यूं है कि) मैंने कहा--"मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ" इस पर फ़रिश्ते ने पकड़ कर मुझे

---

(१) अनपढ़ -- यहाँ जो इबरानी शब्द प्रयुक्त हुआ है वह अरबी भाषा के 'उम्मी' या संस्कृत के 'जातवेद' का पर्यायवाची है जिस का अर्थ है "किसी गुरू से न पढ़ा हुआ परन्तु जन्म से ही जानने वाला।" यह भी याद रहे कि ऋग्वेद (१०:४५:२) के अनुसार--

अग्नि का द्वितीय जन्म मनुष्यों के मध्य हुआ तब वह जातवेद कहलाये....

और ऋग्वेद (३:२९:११) में अग्नि को इस दूसरे जन्म में 'नराशंस' कहते हैं।

> भींचा यहाँ तक कि मेरी सहन शक्ति समाप्त होने लगी फिर उसने मुझे छोड़ दिया और कहा—"पढ़ो" मैंने फिर कहा : मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ।....(तीन बार यही हुआ) फिर उसने मुझे छोड़ दिया और कहा "पढ़ो अपने प्रभु के नाम से जिसने पैदा किया, ... "[१]

अब मोहम्मद स० की समझ में आया कि उनसे दोहराने, अभ्यास करने के लिये कहा जा रहा था। और उन्होंने वही वाणी दोहराई जो उनके मुंह में डाली जा रही थी।

> "पढ़ो (हे देवदूत) अपने प्रभु के नाम से जिस ने पैदा किया....."
>
> (कु० ९६:१२)

इस प्रकार कुरआन की यह सब से पहली अवतरित होने वाली पंक्ति है जिस को उन्हीं शब्दों में मोहम्मद स० ने हमें पहुंचा दिया जो उनके मुंह में डाले गये थे। इस वाणी को उन्होंने अपने शब्दों में परिवर्तित नहीं किया अपितु ईश्वर के शब्दों ही में मानव जाति तक पहुंचाया।

यही अर्थ है उस भविष्यवाणी का जिस में कहा गया था कि "अपनी वाणी उसके मुंह में डालूंगा।"

★ इन्जील में :

तौरेत के बाद अब इंजील में देखें—

> यूहन्ना नबी की गवाही यह है कि जब यहूदियोंने यरूशलम से याजकों और लेवियों को उस से (अर्थात यूहन्ना नबी से) यह पूछने के लिये भेजा कि तू कौन है? तो उसने यह मान लिया और इन्कार नहीं किया परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूँ। तब उन्होंने उससे पूछा, "तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है?" उसने कहा "मैं नहीं हूँ।" "तो क्या तू वह नबी है?" उस ने उत्तर दिया कि "नहीं"
>
> (यूहन्ना १:१९ से २१)

---

(१) सीरत सरवर-ए-आलम (उर्दू) भाग २ अबुलआला मौदूदी, प्र० मरकज़ी मकतबा इस्लामी (पहला संस्करण), पृ० १३४

मालूम होता है कि यूहन्ना नबी के समय पर यहूदियों को अपने ज्ञान अनुसार तीन देवदूतों के आने की सूचना थी।

१– मसीह, २– एलिय्याह, ३– वह नबी।

यदि हम किसी ऐसी बाइबिल को देखें जिस में हर पंक्ति के आगे हाशिये में समान अर्थ वाली दूसरी पंक्तियों का हवाला दिया गया हो तो हम देखते हैं कि हाशिये में "वह नबी" के लिये तौरेत की (व्यवस्था १८:१८) का हवाला दिया गया है जिस के विषय में पहले ही सिद्ध किया जा चुका है कि वह नराशंस (मोहम्मद स०) के सम्बन्ध में है।

इस के अतिरिक्त यह भी सोचने की बात है कि ईसा मसीह के जीवन काल तक एलिय्याह नबी तो आ चुके थे परन्तु "वह नबी" आना शेष था।

इन्कार क्यों?

यदि सोचें तो यहा भी वही 'मैं' और 'अहम' की भावना नज़र आयेगी जिस के कारण सभी केवल अपने आप को सत्य पर समझते हुए दूसरों को समझने के लिए भी तैयार नहीं हैं। यह वही त्रुटि है जिसने मुसलमानों को आदि ग्रन्थों को पहचानने से रोका जब कि कुरआन में उन का वृतांत है और संसार की मात्र एक धार्मिक जाति आदि ग्रन्थ रखने का दावा करती थी। नराशंस के मामले में भी यही हुआ कि इन्जील में "वह देवदूत" की भविष्यवाणी मौजूद, ह० ईसा के बाद से आज तक इतिहास में केवल एक व्यक्ति ऐसा है जो "वह देवदूत" होने का दावा कर रहा है, ईसाई यह भी नहीं कहते कि उस दावा करने वाले के अतिरिक्त कोई और व्यक्ति वह देवदूत था, फिर भी दावा करने वाले को समझने के लिए भी तैयार नहीं ! इसे कहते हैं आँखों पर पर्दा पड़ जाना, क्योंकि "वह देवदूत" होने के सारे लक्षण उस में हैं।

गवाहों की कमी नहीं हैः

ज्ञान का कोई विभाग ऐसा नहीं है जिस के विशेषज्ञों ने उस, 'ईश्दूतत्व का दावा करने वाले' की महानता को स्वीकार न किया हो। बरनार्डशा, बरट्रेन्ड रसल जैसे तत्वज्ञानी, नैपोलियन जैसे विजेता, टालिस्टाई और एच० जी० वेल्स जैसे लेखक, गोइटे जैसे कवि फिलिप हित्ती और बाडले जैसे इतिहासकार और

माइकिल किंग तथा एडवेल जैसे पादरी, ईसाइयों की उस असीमित सूची में शामिल हैं जिन्होंने नराशंस की महानता को श्रद्धांजली अर्पित की है। डा० ड्रेपर लिखते हैं–(अंग्रेजी से हिन्दी)

> सन ५६९ ई० में जस्टीनियन की मृत्यु के चार वर्ष बाद अरब देश में 'मक्का' में उस व्यक्ति ने जन्म लिया जिसने पूरी मानवजाति को सभी इन्सानों से अधिक प्रभावित किया[१]

और इटली की प्रोफेसर लारा ने स्वीकार किया– (अंग्रेजी से हिन्दी)

> ऐसी बड़ी राजनीतिक तथा धार्मिक क्रान्ति से घबराकर वे लोग अपने आप से पूछने लगे कि ये कैसे हुआ? लेकिन उनमें से अधिकतर को नज़र नहीं आया या उन्होंने जानबूझकर आंखे बन्द कर ली थीं...वह यह नहीं समझ सके के इतनी विस्तृत क्रान्ति का पहला रेला केवल एक पुनीत शक्ति ही के पास से आ सकता है। वह यह विश्वास नहीं करना चाहते थे कि 'मोहम्मद के मिशन के पीछे केवल ईश्वर की बुद्धि हो सकती है। मोहम्मद, जोकि संविधान देने वाले महान दूतों में अन्तिम थे, जिन्होंने सदा के लिए दूतों के आगमन का अन्त कर दिया...'[२]

नराशंस ने अपने अग्नि रूप की पुष्टि की:

वेदों ने भविष्यवाणी की थी कि महर्षि अग्नि को संसार में मनुष्यों के मध्य 'नराशंस' नाम से जन्म लेना है। स्वाभाविक है कि इस संसार में जन्म लेने के बाद स्वयं महर्षि नराशंस अपने अग्नि रूप की पुष्टि करें। उसके विषय में बताएं। उन्होंने बताया–

---

(१) A History of the intellectual development of Europe, Vol. I by John William Draper, M.D., L.L.D., London, 1875, P. 329

(२) An interpretation of Islam, by Prof. Ms. Laura Veccia Vaglieri, translated from Italian by Dr. Aldo Caselli, Haverford College, Pennsylvania, with a foreword by Dr. Zafrullah Khan, Judge International Court of Justice, published by Anjuman Ahmadia, Qadian P. 21, 22.

...मेरे अनेक नाम हैं। मैं मोहम्मद हूं और मैं अहमद हूं....(बुख़ारी, मुस्लिम)

मुसलमान सूफ़ियों ने विस्तृत किया-

और अहमद, देवदूत (मोहम्मद स०) का एक अन्य नाम है कि आकाश वालों में वह इस नाम से प्रसिद्ध हैं ..और इस पवित्र नाम को उस एक खुदा के साथ बहुत निकटता प्राप्त है और दूसरे नाम (मोहम्मद स०) से एक सीढ़ी अल्लाह से अधिक समीप है।(१)

उसका नाम आकाश में फ़रिश्तों (देवताओं) के नज़दीक अहमद् प्रसिद्ध है और पृथ्वी वालों के नज़दीक मोहम्मद है(२)

उन्होंने अपना अग्निरूपी नाम अरबों की समझ में आने वाली भाषा में बताया। 'अहमद्'। 'अहमद्' उनका नाम आकाशलोक में था। और वैदिक धर्म ने बताया था कि--

अग्निर्वै स्वर्गस्य लोकस्याधिपतिः (ऐ० ३:१०)
अर्थात:- स्वर्गलोक अधिपति अग्नि हैं।

कुरआन बताता है कि इस संसार में आने से पहले आत्मालोक में **ईश्वर ने सभी** आत्माओं से संकल्प *(covenant)* लिया था।

और हे मोहम्मद लोगों को वह समय याद दिलाओ जब तुम्हारे प्रभु ने (आत्मालोक में) आदम की संतान की पीठों से उनकी नस्ल को निकाला था और स्वयं उन्हीं को उन पर गवाह बनाते हुए पूछा था--'क्या मैं तुम्हारा प्रभु नहीं हूं'? उन्होंने कहा 'क्यूं नहीं'? (आप ही हमारे प्रभु हैं) (कुरआन ७:१७२)

---

(१) मक्तूबाते रब्बानी-ह० मुजद्दिद अलफ़सानी, दफ़्तर सोम, भाग दोम, मक्तूब न० ९४
(२)
सीरत मोहम्मदिया (उर्दू अनुवाद 'मवाहिब-ए-लदुन्निया' प्रकाशित, अफ़ज़ल-उल-मताले, हैदराबाद १३४२ हिजरी पृ० १७०

इस आयत (पंक्ति के विषय में सभी मुसलमान विद्वान सहमत है कि यह वचन इन्सान को देह मिलने से पूर्व सभी मानव जाति की आत्माओं से लिया गया था। उस आत्मालोक में सबसे पहले 'क्यूं नहीं'? कहने वाली आत्मा का नाम 'अहमद्' था।

> सहल बिन सालेह हमदानी कहते है कि उन्होंने इमाम मोहम्मद बाक़र से पूछा कि "अल्लाह के रसूल स० को सब देवदूतों पर प्राथमिकता कैसे प्राप्त है जबकि आप सबके अन्त में भेजे गए"। उन्होंने उत्तर दिया कि "जब अल्लाह ने आदम जाति की पीठों से उनकी नस्ल को निकालकर उन सबसे यह संकल्प लिया था कि "क्या मैं तुम्हारा प्रभु नहीं हूं" तो सबसे पहले "क्यूं नहीं"? उत्तर देने वाले मोहम्मद थे...[१]

सबसे पहले "क्यूं नहीं" कहने वाली आत्मा का नाम "अहमद्" था, यह वेदों में भी आया है। वहां यह शब्द "अहमद्" अहम का दान करने वाले के अर्थ में है। अर्थात जिसने सबसे पहले अपनी बलि दी थी। अब ज़रा क़ुरआन के अरबी शब्द "बला" पर विचार करें जो उक्त आयत में आया है और जिसका अर्थ है "क्यूं नहीं"? अर्थात "अवश्य"। यह शब्द लिखने में "बला" (بلٰی) की तरह लिखने की बजाए "बलि" (بلی) लिखा जाता है और इसपर एक छोटी सी मात्रा लगाकर इसी "बलि" (بلٰی) को "बला" (بلٰی) पढ़ा जाता है।
ईशवाक्य पर जितना भी गौर करें नये-नये रहस्य खुलते चले जाते हैं। अरबी भाषा में "बला" का अर्थ किस प्रकार 'बलि' के आकार में लिखा जाने के बाद अहमद् के संस्कृति अर्थ, 'अह्म का दान करने वाला' (अपनी बलि देने वाला), कि ओर संकेत करता है।

'अहमद'	अरबी	भाषा का शब्द तथा	'बला'	अरबी	भाषा का शब्द
'अहमद'	संस्कृत	भाषा में प्रयुक्त तथा	बलि	संस्कृत	भाषा में प्रयुक्त

दोनों भाषाओं में इनके अर्थ अलग-अलग है परन्तु अरबी में अहमद् व बला की संधि का अर्थ वही है जो संस्कृति में अहमद् व बलि के जोड़ का है। और केवल एक शब्द की लिखने की शैली बदल कर अर्थात बला को बलि के आकार में लिखकर ईश्वर ने कितने रमणीय अन्दाज़ में इस तत्व की ओर संकेत कर दिया है।

---

(१) नशरुत्तीब, मौ० अशरफ़ अली थानवी, प्रकाशन मकतबा अशरफ़िया, बम्बई (संस्करण १), पृ० ९

ईश्वर जानता था कि नराशंस को अरब में जन्म लेने के कारण अरबी भाषा में अपना आत्मालोक का नाम "अहमद्" बताना होगा। उसने वेदों में "अहमद्" नाम की भी चर्चा की ताकि हर प्रकार के संदेह का निवारण हो जाए। वेदों ने बताया—

> ....सबसे पहले (बनाने से पहले) जिनका विचार या चिन्तन किया वह अहमद् ही हैं, पिता हैं, उन्होंने सबसे पहले वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया। जिसको प्राप्त करके मैं सूर्य के समान हो गया।
>
> (ऋग्वेद ८:६.९.१०)

ईश्वर ने सबसे पहले जिनका चिन्तन किया था वह सबसे पहली जीवात्मा, उसी की सबसे पहली रचना, सबसे पहली सृष्टि थी। यह आदि पुरुष था। वेद ही में देखें—

> **सृष्टि रचना से पूर्व अन्धकार को आवृत किया हुआ था। सब कुछ अज्ञात था। सब ओर जल ही जल था। वह पूर्व व्याप्त एक ही ब्रह्म, अविद्यमान पदार्थ से ढका था। वही एक तत्व, तप के प्रभाव से विद्यमान था। उस ब्रह्म ने सर्वप्रथम सृष्टि रचना की इच्छा की। उससे सर्वप्रथम बीज का प्राकट्य हुआ। उसी एक ने अपनी बुद्धि के द्वारा विचार करके अप्रकट वस्तु की उत्पत्ति कल्पित की। इस प्रकार आदि पुरुष की उत्पत्ति हुई....** (ऋग्वेद १०:१२९:३ से ५)

यह तो पहले ही सिद्ध हो चुका है कि आदि पुरुष, "महर्षि अग्नि" ही थे। (देखिए पृ०५१ से ५३) **इस प्रकार अब इसमें संदेह नहीं रह जाता कि "अहमद्" तथा "अग्नि" एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं।** अग्नि (अहमद) के साक्षात रूप, नराशंस (मोहम्मद) ने अपनी प्रथम रचना होने की पुष्टि करते हुए कहा—

> अल्लाह ने सभी वस्तुओं से पूर्व मेरा तेज पैदा किया (मवाहिब)

"अग्नि" शब्द के द्योतक दो अस्तित्व हैं:

अग्नि रहस्य, राज़ ही रहेगा यदि यह न समझा गया कि अग्नि शब्द के द्योतक

दो अस्तित्व हैं। इस तथ्य के मस्तिष्क में स्पष्ट न होने से बड़ी समस्यायें उत्पन्न हो गयी हैं। धर्म का वास्तविक स्वरूप ही बदल गया। धर्म का मूल आधार इस के अतिरिक्त क्या है, कि जो पूज्य है केवल उसी की उपासना हो? अग्नि दो अस्तित्वों के लिये प्रयुक्त होने से पूज्य एक न रहा, दो हो गये, और जब 'एक' की शर्त का उल्लंघन हो ही जाता है तो कोई सीमा नहीं रहती।

वह दो अस्तित्व अलग-अलग **कौन से हैं? इस समसया की कुंजी अग्नि के** अग्रिणी होने में है। अग्रिणी, अर्थात सबसे आगे, जिससे आगे और कोई न हो। अग्नि के इसी अर्थ पर ध्यान दें तो बात समझ में आ जाती है। सबसे आगे तो परब्रह्म है, एक मात्र पूज्य, उपासनायोग्य, **एकम एवं अद्वितीयम,** वह सबका रचयिता है। अब जब हम रचानाओं की ओर आते हैं तो सबसे पहली रचना को भी अग्र या अग्रणी कह सकते हैं, क्योंकि रचनाओं में उससे आगे कोई रचना नहीं है। हां यह याद रखना आवश्यक होगा कि पूज्य रचयिता ही होगा, रचना नहीं होगी, पहली रचना को अपना सगुण नाम **"सबसे आगे-सब से पहला"** रचयिता ही ने दिया। ईश्वर ने पहला जीव, पहली आत्मा या पहली जीव आत्मा को रचकर उसे अपने सगुण नाम दिये। वेदों में तो इसके उदाहरण भरे हुये हैं ही कि कहीं अग्नि ईश्वर के लिए आया प्रतीत होता है, कही ईशदूत के लिए। इन दोनों अस्तित्वों को अलग अलग न कर सकने के कारण रचयिता के साथ रचना को भी पूज्य बना लिया गया। **संसार में ईश्वर और जितने भी पूज्य बने उनके पीछे यही भेद था कि ईश्वर व पहली रचना को अलग-अलग नहीं किया गया।**

पहले नम्बर पर अग्नि ब्रह्म के लिए आया

ब्रहम वा अगिन : (कौ० ९:१:५)
अनुवाद—ब्रहम अग्नि है

अग्नि : पृजानां प्रजनयिता (तै० १:७:२:३)
अनुवाद—प्रजाओं को उत्पन्न करने वाला अग्नि है

Behold mortal man, adore your God Agni, with worship due to gods.
(ऋग्वेद ५:२५:४)

अनुवाद—हे नाशवान मानव, अपने भगवान अग्नि की उपासना इस तरह करो जैसी उपासना के देवता, योग्य हैं।

अब देखिए वेदों ने बताया कि अग्नि दो हैं और एक अग्नि ने दूसरी अग्नि को पैदा किया है।

> अग्नि के अग्नि जो पूरे संसार के पालक है उन्हें हम सदा के लिए हवि प्रस्तुत करते हैं– (ऋग्वेद १:१२:२)

ऊपर वाले मन्त्र का अर्थ हुआ कि परब्रह्म जिसने पहली जीवात्मा को रचा, पूरे संसार का पालक एवं पूजनीय है। नाम दोनों के अग्नि हैं। अब देखिए कि ईश्वर ही ने प्रथम जीव आत्मा की रचना की और दोनों का नाम अग्नि हुआ, इसे वेदों ने कितने सुन्दर शब्दों में कहा है।

> मेधावी, ग्रहरक्षक, हविवाहक और जुहू मुख वाले अग्नि को अग्नि से ही प्रजवलित करते है (ऋग्वेद १:१२:६)

क़ुरआन भी इसे प्रमाणित करता है कि अल्लाह ने अपने सगुण नाम अपनी पहली रचना के भी रखे थे।
"रऊफ़" अर्थात "कृपालू", "रहीम" अर्थात "दयालू" क़ुरआन में अल्लाह के गुण बयान हुए है जैसे–

> निःसन्देह मानवमात्र के लिए अल्लाह रऊफ़ व रहीम है (क़ु० २:१४३)

परन्तु यह सगुण नाम अल्लाह ने स्वयं अपनी वाणी में अपनी पहली रचना के भी रखे–

> तुम्हारे पास वह ईश्दूत आ गया है (जो) तुम्हारे अपने प्राणों में से (है)... आस्था रखने वालों के लिए (वह) रऊफ़, रहीम है (क़ु० ९:१२८)

शतपथ, ब्रहमन ने भी इसे स्पष्ट किया है

> अग्नि जो कि अग्नि से पैदा हुआ क्योंकि निःसन्देह अग्नि ही ने अग्नि को पैदा किया। (शतपथ० ७:५:२:२१)

यह दो अस्तित्व परस्पर गड़मड न हो जायें:

एक ईश्वर के ऐश्वर्य को समझने में धोखा जब भी हुआ, अग्नि रहस्य, पहली रचना का राज़ न समझ सकने के कारण हुआ। ईश्वर के ऐश्वर्य में सृष्टियों को साझी यह समझकर बनाया गया कि उस का अंश सभी में है। ऐसा नहीं था। किसी में उसका अंश नहीं है। प्रथम रचना तो उस की कल्पना या इच्छा थी जो उसकी मननशक्ति (will power- کن) से उत्पन्न हुई। उसमें ईश्वर के असीमित गुणों का सीमित, केवल नाम मात्र (अंश नहीं), प्रतिबिम्ब था, न कि उसके अस्तित्व का अंश। वेदों में यह बिलकुल स्पष्ट है।

> उस ब्रहम ने सर्व प्रथम सृष्टि रचना की इच्छा की, उससे सर्वप्रथम बीज का प्राकट्य हुआ। उसी एक ने अपनी बुद्धि के द्वारा विचार करके अप्रकट वस्तु की उत्पत्ति कल्पित की। इस प्रकार आदि पुरुष की उत्पत्ति हुई (ऋग्वेद १०:१२९:४, ५)

सभी रचनाओं में ईश्वर का अंश न होकर उसकी पहली रचना का प्रतिबिम्ब है क्योंकि उसको ही ईश्वर ने सृष्टि रचना में साधन बनाया था।

मुसलमानों को कठिनाई

मुसलमान विद्वानों में इस विषय में बहुत से मत बने हुए हैं। "इब्ने अरबी" ने "वहदतुलवजूद" (सर्व अस्तित्व एक्य" या सभी असितत्वों का एक होना) का सिद्धांत दिया। यह दर्शन की भाषा, साधारण लोग न समझे। उन पर ईश्वर का अंश सभी वस्तुओं में मानने का आरोप लगाकर उनकी मान्यता को इस्लाम के विरुद्ध तक बताया गया। इसी मान्यता को "हम"-औस्त" (हर वस्तु में वह है) के रुप में भी प्रस्तुत किया गया। इस पर भी झगड़े हुए। आज तक हैं। फिर प्रसिद्ध भारतीय मुस्लिम विद्वान ह० मुजद्दिद अल्फ़ सानी (२०) ने इस मान्यता को सरल रूप में समझाने के प्रयत्न में एक सिद्धान्त "वहदुतश्शहूद" (सर्व प्राकट्य एक्य या प्राकट्य का एक होना) प्रस्तुत किया। साधारण बुद्धि तत्व ज्ञान को नहीं समझ सकती। कुरआन तथा वेदों के प्रकाश में देखें तो इस गूढ़ विषय को बहुत आसान शब्दों में पेश किया जा सकता है। **ईश्वर का अन्श किसी में नहीं है। उसकी पहली रचना में भी नहीं। परन्तु उसके गुणों का प्रतिबिम्ब उसकी प्रथम रचना द्वारा हर सृष्टि में है क्योंकि प्रथम रचना के अस्तित्व का अंश सब में है।**

इस को वैदिक धर्म में "अहम ब्रह्मास्मि" के शब्दों में बताया गया था। वहां भी धोखा हुआ। इस का अर्थ समझा गया कि श्री कृष्ण कह रहे है "मैं ब्रह्म हूं" जब कि इसका साफ़ अर्थ है कि " मैं ब्रह्म की मैं हूं" अर्थात ब्रह्म के आगे अपने अहम का दान सब से पहले मैंने किया।

स्वर्गलोक में एक मात्र गुरु--पहली आत्मा:

जब ब्रह्म ने पहली रचना को रचा तो उसका नाम भी अपने नाम पर "अग्नि" रखा। इस प्रथम जीवात्मा को ईश्वर ने समस्त संसार की उत्पत्ति में साधन बनाया। यही जीवात्मा थी जिसने सबसे पहले अपने अहम का दान किया था इस प्रकार वह यज्ञ का कारण मानी गयी।

आत्मैवाग्नि : (शत पथ ब्रह्मन ६:७:१:२०)
अनुवाद--आत्मा ही अग्नि है।

अग्निर्वे योनिर्यज्ञस्य (शत पथ ब्रह्मन १:५:२:११)
अनुवाद – यज्ञ का कारण अग्नि है।

पृथ्वी लोक की उत्पत्ति से पहले स्वर्ग लोक की उत्पत्ति है–

अग्निर्वै स्वर्गस्य लोकस्याधिपतिः (ऐ० ३:४२)

अनुवाद – स्वर्ग लोक अधिपति अग्नि है।

हे अग्ने तुम अविनाशी हो, देवताओं की कामना करने वाले मनुष्य स्तुतियों द्वारा तुम्हारी सेवा करते हैं। तुम देवताओं में आदि देवता हो
(ऋग्वेद ४:११:५)

हे अग्ने तुम देवताओं के स्तोत्रा, सर्वज्ञ, प्रज्ञावान हो। हम इस यज्ञ में तुम्हें "होता" (Priest) मानते हैं (ऋग्वेद ३:१९:१)

यह प्रथम रचना, प्रथम जीवात्मा वही थी जो वहां सभी आत्माओं की गुरु और, ईश्वर का एक मात्र दूत थी। सभी की शिक्षक थी।

अग्निर्वाव पुरोहितः (ऐ० ८:२७)
अनुवाद--अग्नि पुरोहित है।

मुसलमान विद्वानों की गवाही इस सम्बन्ध में देखें (उर्दू से हिन्दी)–

और कुछ ज्ञानी भक्तों ने लिखा है कि हज़रत मोहम्मद (स०) की पुनीत आत्मा, आत्मा लोक में सर्व आत्माओं की शिक्षा दीक्षा का कार्य करती थी। जैसा कि इस दुनिया में पधारने के बाद आप का पवित्र अस्तित्व शरीर धारी मानवों का शिक्षक सिद्ध हुआ। और निः सन्देह यह बात सर्व सिद्ध है कि सर्व आत्माएं अपने शरीर की रचना से बहुत पहले अस्तित्व को प्राप्त हो चुकी थीं।(१)

पृथ्वी लोक में भी गुरु:

आत्माओं की रचना के बाद ही शरीर, देह बनाये गये। सबसे पहले आदम अ० (पहले मनु) का शरीर बना और उसमें आत्मा या प्राण फूंके गये। इस प्रकार अग्नि (अहमद) हम सभी के आध्यात्मिक पितामह हैं तथा आदम, शारीरिक पिता। शारीरिक रूप में अग्नि (अहमद) को सब दूतों के अन्त में आदम की सन्तान में जन्म लेना था।

पहले अग्नि, आत्मा थी। अब अग्नि पुरुष है, नर है।

पुरुषोऽग्निः (शत० १०:४:१:६)
अनुवाद–पुरुष अग्नि है।

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं (ऋग्वेद १:३१:१५)
अनुवाद–अग्नि वह इन्सान (है) जो तपस्वियों से प्रसन्न होता है।

पहले अग्नि आत्मालोक में दूत थे अब उन्हें पृथ्वी लोक में दूत बनकर आना था--

---

(१) मजाहिर–ए–हक जदीद (भाग ५), अल्लामा नवाब कुतुब उद्दीन ख़ाँ दहलवी प्रका० दारूल-इशाअत किराची १९८३ पृ० ३२३

अग्नि दूतं वृणीमहे (ऋग्वेद १:१२:१)
अनुवाद—हम अग्नि को दूत चुनते है।

....वे शीघ्र गमन करने वाले दूत बन जाते हैं (ऋग्वेद ४:७:११)

हे अग्ने.... ! तुम मनु के वंशजों द्वारा किए जाने वाले यज्ञ में देवताओं द्वारा "होता" (Priest) बनाए गये हो.... (ऋग्वेद ६:१६:१)

उस समय उनका नाम नराशंस था

प्रतापी विख्यात 'नराशंस' को मैंने देखा है जैसा क वह स्वर्ग में सभी के होता (Priest) थे। (ऋग्वेद १:१८:९)

प्रिय नराशंस को इस यज्ञ स्थान में बुलाता हूं। वह मधुजिह्व और हवि के सम्पादक हैं (ऋग्वेद १:१३:३)

विद्वानों ने देखा, लेकिन....

ऐसा भी नहीं माना जा सकता कि उन अनुवादकों और भाष्यकारों को वेद में अहमद या मोहम्मद के व्यक्तित्व का आभास ही नहीं हुआ परन्तु जब तक सम्पूर्ण धर्म पर उनकी दृष्टि न हो उनका इन स्थानों पर गलत विचार स्वाभाविक ही है। डा० फ़तेह सिंह की गवाही इस सम्बन्ध में देखें। उन्होंने अहमद व मोहम्मद के उल्लेख तो देखे परन्तु साधारण व सरल अर्थ को छोड़कर तत्वज्ञान पर आधारित व्याख्या उनको ऐसे सभी स्थानों पर करनी पड़ी।

अहिंसा अथवा अहि के आत्मसाती करण से मानव व्यक्तित्व में जो परिवर्तन आता है उसी को वेद की भाषा में अहम से मह होना भी कहते हैं। अहम् शब्द के वर्णविपरयय (अक्षरों के उलट फेर) से बना महः शब्द संकेत देता है कि इस परिवर्तन से मानवता की पूरी तरह काया पलट हो जाती है। परिवर्तन होने की इस पहली स्थिति में अहम् (मैं) की कल्पना में सुधार होता है और मनुष्य यह समझने लगता है कि

अहम् (मैं), शरीर नहीं है। अब वह अहम् को छोड़कर अहः नाम ग्रहण करता है। ...**ऐसे व्यक्ति का नाम है "अहस्मत"।**

...मानव व्यक्तित्व सप्त काष्ठाओं के स्थान पर अष्टम काष्ठा पर केन्द्रित हो जाता है। इसी परिवर्तन को अहम से महः होना कहतेहैं। **अहस्मत व्यक्तित्व अब महस्मत हो जाता है।**..

...अरबी परम्परा में इन्हीं दोनों को अहमद और मोहम्मद की कल्पनाओं में देखा जा सकता है।[१]

अहमद की एक और सिद्धि:

अहमद का जिन वेद मंत्रों में नाम आया है, इनमें से यजुर्वेद के 'आदि पुरुषसूक्त' का एक और मंत्र देखें–

वेदाहमेतं पुरुष महान्तमादित्तयवर्णं तमसः प्रस्तात
.... यनाय

(यर्जुवेद ३१:१८)

अनुवाद–वेद अहमद महान्तम पुरुष हैं, सूर्य के समान अन्धेरों को परास्त करने वाले हैं। उन्हीं को जानकर मृत्यु को पार किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त लक्ष्य तक पहुंचने के लिये और कोई रास्ता नहीं है।

क़ुरआन शरीफ़ में भी अन्तिम देवदूत को चमकता हुआ सूर्य कहा गया है।[२]वेद अनुवादकार अहमद नाम से परिचित न होने के कारण इस शब्द की सन्धि-विच्छेद करके मंत्रों का अनुवाद करते हैं। फिर भी हम देखते हैं कि उनके अनुवादों मे अहमद का नाम तो ग़ायब हुआ परन्तु अनुवाद पर नज़र डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद मंत्र में किस पौरुष्य की चर्चा चल रही है।

---

(१) मानवता को वेदों की देन, डा० फ़तेह सिंह, वेद संस्थान अजमेर, १९८१ पृ० ६७

(२) देखिए क़ुरआन ३३:४६

संकल्प का दूत (*Prophet of The Covenant*)

इन महानतम पुरुष, महर्षि अग्नि (अहमद) के लिये वेदों ने बताया कि उन्हें न केवल नराशंस बनकर आना था बल्कि नरांशस के रूप में उन्हें ईश्वर का अन्तिम दूत होना था।

> अग्निर्वै देवानामनवम : (ऐ० १:१)
> अनुवाद—अग्नि देवों में अवम अर्थात् निचला है।

यही अर्थ नराशंस के 'आसुर' होने का भी है, जैसा कि वेद मंत्रों (३:२९:११) में आ चुका है। फिर देख लें—

> जिस अग्नि का व्यापक रूप कभी नष्ट नहीं होता, उसे तनूनपात कहते हैं। जब वह साक्षात होते हैं तब आसुर और नराशंस कहलाते हैं....

उन्हें क्योंकि "अन्तिम देवदूत" होकर आना था, इसलिए इन महानतम ऋषि के लिए संसार में पधारने वाले सभी देवदूतों से आत्मा लोक में संकल्प (*Covenant*) लिया गयाथा। ऊपर लिखित मंत्र में "तनूनपात" उसी को कहा गया है जिसके लिए संकल्प लिया गया था। शतपथ ब्रह्मण में देखें—

> देवों ने अपने प्रिय रूपों और इच्छित शक्तियों या गुणों को एकत्रित कर दिया और कहा... हमारे इस संकल्प पत्र का जो कोई भी उल्लंघन करेगा वह हमसे दूर (बहिष्कृत) कर दिया जाएगा... हां, अवश्य ही वह संकल्प पत्र, तनूनपात पर आधारित संकल्प (*Covenant*) ऐसा ही है... (शत० ३:४:२:८)

इसी संकल्प (*covenant*) का ज़िक्र कुरआन शरीफ़ में इस प्रकार है—

> और (यादकरो) जब हमने सभी देवदूतों से संकल्प (*Covenant*) लिया। और तुम से भी (हे मोहम्मद) और नूह (मनु) और इब्राहीम और मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से भी, और हमने उनसे दृढ़ संकल्प लिया ताकि उन सच्चों से उनके सच्च के विषय में पूछें और इनकार

करने वालों के लिए दुखदपूर्ण प्रकोप तैयार कर रखा है। (कु ३३:७, ८)

Prophet of The Covenant (संकल्प का दूत) का वृतान्त बाइबिल में भी कई स्थान पर है जैसे–

> **देखो मैं अपने दूत को भेजता हूं और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा... हां *Covenant* (संकल्प) का वह दूत जिसे तुम चाहते हो**
> **(मलाकी ३:१)**

अग्नि जब नराशंस रूप में प्रकट हुये तो स्वयं उन्होंने इसकी पुष्टि की–

> एक व्यक्ति ने पूछा, "हे अल्लाह के दूत आप दूत कब चुने गये?" आपने फरमाया कि "जब मुझसे संकल्प ***(covenant)*** लिया गया तो आदम उस समय आत्मा व देह के मध्य की अवस्था में थे।[५]

महर्षि अग्नि की महर्षि मनु द्वारा पुष्टि:

पृथ्वी पर ईशदूतत्व का क्रम तो पहले मनु (आदम अ०) से ही शुरू हो गया था **परन्तु जल प्लावन** वाले मनु के काल में नौका सवारों के अतिरिक्त सभी जीवों के संहार के बाद मनु द्वारा जीवन का पुनः प्रारम्भ हुआ। तभी मनु द्वारा वेदों का **प्रवर्तन हुआ। वैदिक** धर्म में तो इसी लिए जल प्लावन वाले मनु का अत्यन्त महत्त्व है ही इस्लामी परम्परा में भी उन्हें "आदम-ए-सानी" (दूसरे आदम) कहा जाता है। वैदिक धर्म में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्व 'अग्नि' व मनु' के ही हैं।

मनु क्योंकि मानव जाति के साथ शारीरिक रूप में पहले पधारे इसलिये अग्नि का समाचार देना व पुष्टि करना उन्हीं का काम था। वेदों में देखें–

> मनु ने जिन अग्नि को तेजस्वी किया वह दोनो लोकों के दूत हैं और असुर (अर्थात सबसे पीछे आने वाले) हैं सदा सत्य बोलने वाले, हम

---

(५) मवाहिब *Quoted by* मौ० अशरफ अली थानवी, नशरुत्तीब, मकतबा अशरफिया, मोहम्मद अली रोड, बम्बई, १९८१ पृ ८

यजमानों की तरह यज्ञ में उन को अति प्रशंसा करेंगे(ऋग्वेद ७:२:३)

हे हमारे द्वारा स्तुत्य अग्ने। तुम इस यज्ञ में मनु द्वारा होता **(Priest)** नियुक्त किये गये हो (ऋग्वेद १:१३:४)

हे अग्ने, तुम देव की पूजा के साधन, होता, पुरोहित ज्ञानी, तेज़ चलने वाले दूत और अविनाशी हो। मनु के समान हम भी तुम्हें स्थापित करते हैं। (ऋग्वेद १:४४:११)

हे ज्योतिमान अग्ने तुम्हें मनुष्यों के लिये मनु ने स्थापित किया (ऋग्वेद १:३६:१९)

हे अग्ने हम तुम्हें मनु के समान स्थापित करते हुये प्रज्जवलित करते हैं। तुम देवताओं की कामना करने वाले मनुष्य के निमित्त देव यज्ञ को सम्पन्न करो.. (ऋग्वेद ५:२१:१,२)

..हे अग्ने.. तुम मनु के वंशजों द्वारा किये जाने वाले यज्ञ में देवताओं द्वारा होता बनाये गये हो (ऋग्वेद ६:१६:१)

बाइबिल में भी देखें:

अग्नि के तीन रूप हैं। यह पहले भी हम देख चुके हैं। इस लेख में हमारा विषय अग्नि के प्रथम व द्वितीय पद हैं। पृथ्वी पर मानव के जन्म लेने से पूर्व हमारे एक मात्र होता **(Priest)** गुरु तथा हमारे लिये ईश्वर के दूत और प्रतिनिधि महर्षि अग्नि थे। उस समय महर्षि अग्नि अपने प्रथम पद पर थे। फिर महर्षि अग्नि पृथ्वी लोक में हम मनुष्यों के मध्य जन्म लेकर साक्षात् हुये। पृथ्वी पर ईश्वर के अन्तिम देवदूत के रूप में उस समय महर्षि अग्नि को नराशंस, जातवेद, इत्यादि नामों के साथ अपने दूसरे पद पर आना था। फिर साधारण मनुष्यों की तरह ही महर्षि नराशंस की मृत्यु हुई और महर्षि अग्नि अपने तीसरे पद पर विराजमान हुये। वह तीसरा पद क्या है? सभी ईशग्रन्थ उस को किस रूप में मानते हैं और उसकी क्या व्याख्या करते हैं? यह इस लेख में हमारा विषय नहीं है।

इस विषय को सम्पन्न करने से पूर्व हम यह अवश्य देखेंगे कि अग्नि के इन दोनों

रूपों के विषय में बाइबिल क्या कहती है। इसके पश्चात् ही सभी ईश ग्रन्थों की गवाही पूर्ण होगी।

ईसाइयों की कठिनाई:

अग्नि रहस्य या अहमद की हक़ीक़त न समझ सकने से बाइबिल में कितना उलझाव प्रतीत होने लगा और केवल सिद्धांत में ही नहीं वरन व्यावहारिक रूप में भी कितनी परस्पर विरोधी मान्यताएं बन गयीं।
स्वामी कहीं एक है कहीं तीन !
एकेश्वर-वाद के उदाहरण देखिए–

> यीशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, **और केवल उसी की उपासना कर...**" (लूका ४:८)

> और शास्त्रियों में से एक ने... यीशु (ईसा) से पूछा, "सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?" यीशु ने उसे उत्तर दिया, "सब आज्ञाओं में से यह मुख्य हैं,हे इस्राईल सुन, **प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है**"
> (मरकुस १२:२८,२९)

> जो स्वर्गदूत मुझे यह बातें दिखाता था, मै उसके पावों पर दण्डवत करने के लिए गिर पड़ा और उसने मुझसे कहा, "देख ऐसा मत कर, क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई ईशदूतों और इस पुस्तक की बातों के मानने वालों का संगी दास हूं, **परमेश्वर ही को दण्डवत कर**
> (प्रकाशित वाक्य २२:८, ९)

अब तीन–ईश्वर वाद की मिसाल (पिता, पुत्र, पवित्र–आत्मा)–

> यीशु ने... कहा, "कि क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है"? उस ने उत्तर दिया कि "हे प्रभु, वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूँ"? यीशु ने उससे कहा, "तूने उसे देखा भी है, और जो तेरे साथ बाते कर रहा है वही है" ! उसने कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं ! **और उसे (यीशू को !) दण्डवत किया।** (यूहन्ना ९:३५ से ३८)

> यीशु ने उन (अपने ग्यारह चेलों) के पास आकर कहा, कि "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इस लिए तुम जाकर सब

जातियों के लोगों को चेला बनाओ और **उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो...**" (मत्ती २८:१८, १९)

परमेश्वर एक भी हो और तीन भी हों ! यह कैसे हो उकता है? ईसाइयों को इसका समाधान न मिला तो उनहोंने अपनी "ईशवाणी" में थोड़ा सा परिवर्तन और कर लिया। उन्होंने अपनी बाइबिल में यह पंक्ति बढ़ा ली कि–

> और स्वर्ग में गवाही देने वाले तीन हैं, बाप, शब्द,[१] **तथा** पवित्रआत्मा। और यह तीनों एक ही हैं।

ना जाने कितनी शताब्दियों से यह पंक्ति बाइबिल के नये नियम **(यूहन्ना ५:७) में** लिखी चली आ रही थी। १९५२ में (ह० ईसा के करीबी काल के बाद पहली बार) उपलब्ध प्राचीनतम यूनानी भाषा की हस्तलिपियों में लिखित मूल शब्दों से बाइबिल की तुलना की गई। उक्त पंक्ति उस यूनानी मूल में नहीं है। १९५२ के बाद की प्रकाशित जितनी प्रोटेस्टैंट बाइबिलें अब आप देखेंगे उनमें यह शब्द नहीं मिलेंगे।[२]

"**परमेश्वर पवित्र** आत्मा और ह० ईसा, तीनों एक ही व्यक्तित्व के नाम हैं", यह **बात उक्त पंक्ति** के सिवाये बाइबिल में कहीं नहीं थी और अब छान बीन के बाद **यह पंक्ति भी** हटानी पड़ी। तीनों अस्तित्व अलग अलग हैं, इसके प्रमाणों से **बाइबिल** भरी पडी है। जैसे, बाइबिल की यह पंक्ति–

> जो कोई मनुष्य के पुत्र (ईसा) के विरोध में कोई बात कहेगा उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र-आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाऐगा (मत्ती १२:३२)

यहां यह स्पष्ट है कि न केवल ह० ईसा और पवित्र आत्मा अलग–**अलग अस्तित्व है बल्कि** पवित्र–आत्मा का स्थान ह० ईसा से ऊंचा है।

---

(१) **यूहन्ना** १:१ में रहस्यमय ढंग से "शब्द" *(word)* का प्रयोग हुआ है। वह **समझ में न आया** तो उससे अभिप्राय हज़रत ईसा को मान लिया गया। उक्त पंक्ति की सही व्याख्या पृष्ठ पर आ रही है।

(२) रोमन कैथोलिक बाइबिल में यह पंक्ति अब भी है, क्योंकि उसे मूल से मिलाने का कष्ट नहीं किया गया है वरन वह यूनानी से लातीनी भाषा में अनुवादित लिपियों पर आधारित है।

बाइबिल में अग्नि रहस्य:

परमेश्वर व ईसा के बीच पवित्र आत्मा, ईश्वर के दूत अग्नि हैं। पितामह हैं या **Fater-in-Heaven** हैं जो सभी आत्माओं की उत्पत्ति के मूल कारण हैं। जैसे अग्नि दो हैं। एक जो पूज्य है और दूसरा उपासक, ऐसे ही पूज्य तो केवल ईश्वर है जैसा कि स्वयं यीशु बार बार बताते हैं। "पवित्र-आत्मा" उपासक है। उसकी उपासना नहीं की जा सकती। यह पहली आत्मा पहली रचना है, अहमद है, अग्नि हैं। सर्व आत्माओं का सामूहिक रूप हैं। सभी आत्माओं की उत्पत्ति में परमेश्वर ने पहली आत्मा को साधन बनाया। ईसा के जन्म में परमेश्वर का चमत्कार अवश्य था कि बिना पिता के उनकी माता मरियम गर्भवती हो गयीं परन्तु वह परमेश्वर के पुत्र न थे। परमेश्वर का कोई पुत्र नहीं है। बाइबिल के अनुसार पवित्र--आत्मा के मरियम पर अवतरण से मरियम गर्भवती हुयीं (आत्मा का अवतरण जिसमानी मिलाप नहीं है) बाइबिल में देखिये--

> छटवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल फ़रिश्ता गलील के नासरत नगर में एक कुँवारी के पास भेजा गया। जिस की मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी उस कुँवारी का नाम मरियम था। और फरिश्तों ने उसके पास भीतर आकर कहा, "सलाम तुझको, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है"। वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी, कि यह किस प्रकार का अभिवादन है? फ़रिश्ते ने उससे कहा, "हे मरियम भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख तू गर्भवती होगी और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परम प्रधान का पुत्र कहलायेगा, और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा"... ...ृम ने फ़रिशते से कहा, "यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।" फ़रिशते ने उसको उत्तर दिया कि "पवित्र-आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, **परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा**।" (लूका १.२६ से ३२ व ३४, ३५)

"परमेश्वर का पुत्र" **होने नहीं, कहलाने** का अर्थ भी अग्नि रहस्य के खुलने ही से समझ में आता है। ह० **ईसा को बाइबिल में अनेकों स्थानों पर** "परमेश्वर का

पुत्र'' कहा गया और जगह जगह ''मनुष्य का पुत्र'' भी, जब कि वह न परमेश्वर के पुत्र थे और न मनुष्य के पुत्र। याद कीजिए, 'अग्नि' कभी परमेश्वर को कहा गया था और कहीं पहली जीवात्मा को। सगुण नाम एक होने के कारण पहली जीवात्मा, आदि पुरुष को संसार ने हर युग में परमेश्वर समझ लेने की गलती की। आदि पुरुष, जो पितामह हैं, ह० ईसा के नहीं, हम सभी के पितामह थे। पूरी मानव जाति के आदि कारण थे। पवित्र आत्मा के अस्तित्व को न समझ पाने से ईसाई मत में उलझाव है। यदि मध्य ग्रन्थ, बाइबिल के अध्ययन में आदि ग्रन्थ वेदों तथा अन्तिम ग्रन्थ, कुरआन, से भी सहायता ली गई होती तो यह गुत्थी सुलझ जाती। स्वयं बाइबिल में बहुत जगह सभी मनुष्यों को स्वर्ग लोक में मौजूद किसी ''पिता'' के बेटे कहा गया है। **अच्छी प्रकार पहचान लीजिए। यह पितामह, महर्षि 'अग्नि' हैं जिन्हें न समझ पाने से ईसाई मत उलझ गया।**

> परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो जिससे **तुम अपने पिता के, जो स्वर्ग में है, बेटे ठहरो...** इसलिए चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, **जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।** (मत्ती ५:४४, ४५, ४८)

मरियम से जिब्रील फ़रिश्ते की भेंट और वार्ता का उल्लेख, कुरआन में देखिए।

> ... फिर हमने उनके पास अपने फ़रिश्ते (जिब्रील) को भेजा वह उनके सामने भला चंगा मनुष्य बनकर प्रकट हुआ। यह बोला, ''मैं तो बस तुम्हारे प्रभु का एक दूत हूं ताकि तुम्हें एक पवित्र लड़का दूं।'' वह बोलीं ''मेरे पुत्र कैसे हो जायेगा जब कि न मुझे किसी मनुष्य ने हाथ लगाया है और न ही मैं बदचलन हूं''। उसने कहा, ''यूं ही होगा। तुम्हारे प्रभु ने कहा है कि यह मेरे लिये आसान है और यह इसलिये भी ताकि हम उसे लोगों के लिये एक निशानी और अपनी ओर से अनुग्रह का प्रतीक बना दें और यह तय हो चुका है''। फिर वह गर्भवती हो गयीं.......। यह हैं मरियम के पुत्र ईसा (और यह है वह) सच्ची बात जिसमें यह लोग झगड़ रहे हैं। और अल्लाह के यह योग्य ही नहीं कि वह पुत्र ग्रहण करे वह पवित्र है। वह तो जब किसी काम का निर्णय कर लेता है तो उसके लिए केवल इतना कह देता है कि ''हो जा'', सो

वह हो जाता है और निस्सन्देह अल्लाह मेरा भी प्रभु है और तुम्हारा भी प्रभु है सो उसी की उपासना करो। यही सीधा रास्ता है।

(कु० १९:१७ ता २२ व ३४ ता ३६)

एक और स्थान पर क़ुरआन स्पष्ट करता है--

> और जब अल्लाह ने कहा, "हे मरियम के पुत्र ईसा, अपने व अपनी माता पर मेरा वरदान याद करो जब कि मैंने तुम्हें पवित्र—आत्मा के माध्यम से पुष्ट किया था......" (कु० ५:११०)

इसमें आश्चर्य न होना चाहिये कि बाइबिल व क़ुरआन दोनों ने यहां ईसा की उत्पत्ति का साधन जिसे बताया उसका नामकरण दोनों ही ने पवित्र-आत्मा किया है। यह पवित्र—आत्मा वह सीढ़ी है जिसे समझे बिना ईसा को परमेश्वर का पुत्र समझ कर उनकी उपासना शुरू हो गयी। पवित्र-आत्मा की चर्चा चूंकि बड़ी महत्ता के साथ ऐसे ही आयी कि उसका भी कुछ भाग ईसा के जन्म में प्रतीत हुआ इसलिए उसे भी पूज्यों की त्रिमूर्ति में जोड़ना पड़ा। धर्म के पिछले संस्करण, वर्तमान वैदिक धर्म को यदि ईसाइयों ने त्याग न दिया होता तो उनकी यह उलझन बाक़ी न रहती।

बाइबिल में अग्नि का स्पष्ट वृतांत:

पवित्र-आत्मा के अग्नि होने के बहुत स्पष्ट संकेत इन्जील में हैं। यूहन्ना नबी ने कहा था कि–

> मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं परन्तु वह जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझसे शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने योग्य नहीं, वह तुम्हें **पवित्र-आत्मा और अग्नि से बपतिस्मा देगा।"** (मत्ती ३:११)

ईसाई इस भविष्यवाणी को ईसा मसीह के सम्बन्ध में समझते हैं परन्तु यह नहीं समझा सकते कि ईसा मसीह अग्नि से बपतिस्मा कैसे व कब देते थे? और देखें–

> फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे

> तो क्या **आत्माओं के पिता** के और भी अधीन न रहें? जिससे जीवित रहें। वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। (इबरानियों १२:९:१०)

आत्माओं के पिता, पितामह की सुस्पष्ट कल्पना है परन्तु कल्पना ही रह गयी। स्पष्टीकरण बाइबिल ही में विद्यमान हैं परन्तु अग्नि रहस्य व अहमद की हकीकत मस्तिष्क में रहे बिना पवित्र-आत्मा को नहीं समझा जा सकता। संकेत आप देखेंगे तो तुरन्त समझ जायेंगे। समझने में त्रुटियां होने का एक कारण यह भी है कि मूल शब्द सामने न होकर अनुवाद ही उपलब्ध हैं। यदि वेद और कुरआन की तरह मूल भाषा के शब्द भी अनुवाद के साथ लिखे हुए उपलब्ध होते तो बहुत सी ग़लतियों का सुधार हो जाता। अनुवाद में ग़लती इसलिए भी हो जाती है कि कभी कभी असली अर्थ स्वयं अनुवादकर्ता नहीं समझ पाते। उनकी त्रुटियां, उनके अनुवाद के रूप में लोगों में प्रचलित होकर मान्यताएं बन जाती हैं। देखिए अग्नि रहस्य न जानने के कारण अनुवाद कर्ताओं ने निम्न पंक्ति में क्या किया–

> आदि में "शब्द" था और "शब्द" **परमेश्वर** के साथ था और "शब्द" **परमेश्वर** था। (यूहन्ना १:१)

इस पंक्ति में प्राचिनतम उपलब्ध यूनानी हस्तलिपियों में, **परमेश्वर** के लिए दोनों जगह अलग अलग यूनानी शब्दों का प्रयोग हुआ है। पहली बार यूनानी शब्द "होथिओस" *(Hotheos)* आया है। और दूसरी बार यूनानी भाषा में टोनथिओस *(Tontheos)* शब्द का प्रयोग हुआ है। होथिओस *(Hotheos)* का अर्थ है "परमेश्वर" *(God)* जब कि टोनथिओस *(Tontheos)* शब्द का अर्थ है "देव शक्तियों से युक्त" *(god or a god)* आप स्वयं देख लें कि कितना अन्याय हुआ। आज तक जितने अनुवाद उपलब्ध हैं उन सब में यूहन्ना की इन्जील की इस प्रथम पंक्ति का अनुवाद ग़लत है। आप समझ ही गए होंगे कि "शब्द" यहां पर प्रथम सृष्टि, महर्षि अग्नि (अहमद) को कहा गया है। अपने जन्म के बाद वह आदि में परमेश्वर के साथ थे। और वह देव शक्तियों से युक्त थे। वह चूंकि परमेश्वर की मनन शक्ति *(will power- كن)* से उत्पन्न हुए इस कारण "शब्द" भी कहे गए।

अग्नि का साक्षात रूप में आना-बाइबिल का बयान:

पवित्र आत्मा यदि परमेश्वर के दूत अग्नि हैं तो उन्हें संसार में हम मनुष्यों के मध्य साक्षात रूप में भी आना था जैसा कि वेदों ने बताया था, क्योंकि-इसी रूप मे उनकी ऐतिहासिक पुष्टि हो सकती है। इस सम्बन्ध में इन्जील की गवाही देखें (ईसा मसीह कह रहे हैं)--

> मैंने यह बातें तुम्हारे साथ रहकर तुम से कहीं परन्तु 'सहायक' अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा
> (यूहन्ना १४:२५, २६)

> परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात **सत्य-आत्मा** जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। (यूहन्ना १५:२६)

ऊपर की दो पंक्तियों में कुछ विशेष संकेत है–

★ पवित्र आत्मा के साक्षात रूप में आने की सूचना ईसा मसीह ने दी थी।
★ पवित्र आत्मा व ईसा मसीह एक ही अस्तित्व के दो नाम नहीं है जैसा कि कुछ ईसाई विद्वानों का विचार है।
★ पवित्र आत्मा का नाम जब वह साक्षात प्रकट होंगे, "सहायक" होगा।
★ पवित्र आत्मा को आने के पश्चात ईसा मसीह की पुष्टि करना थी।

यहां पवित्र-आत्मा के साक्षात रूप का नाम "सहायक" बताया जा रहा है जब कि अग्नि या अहमद के साक्षात रूप का नाम नराशंस या मोहम्मद बताया गया था।

"सहायक" का अर्थ: [१]

'सहायक' शब्द मूल इन्जील में नहीं आया है अपितु यह असल शब्द का हिन्दी

---

(१) इस शीर्षक के अन्तर्गत पंक्तियों के लिखने में मौ० सै० अ० मौदूदी के कु (६१:६) के भाष्य में टिप्पणी संख्या ८ से विशेष सहायता ली गई है।

अनुवाद है। अंग्रेज़ी-इन्जील में यह शब्द कम्फ़र्टर (comforter) है। परन्तु वह भी अंग्रेजी अनुवाद ही है। फिर मूल शब्द क्या है जिस का अनुवाद 'सहायक' किया गया? आज उपलब्ध प्राचीनतम यूहन्ना की इन्जील ह० ईसा की भाषा सुरयानी में नहीं बल्कि यूनानी भाषा में है। जिसके बारे में ईसाई बताते हैं कि उसमें पवित्र-आत्मा के लिये पैराक्लीटस (paracletus) शब्द है। इन्जीलों के भी बहुत से रूपान्तर (versions) हैं और इस शब्द का अर्थ स्वयं ईसाई अनुवादकर्ता भिन्न भिन्न करते रहे हैं। दूसरे पाठान्तरों (versions) में इसके अनुवाद *consolator* (आश्वासन देने वाला), *Deprecator* (पछताने वाला), *Teacher* (अध्यापक), *advocate* (वकील), *Assistant* (सहायक), *Comforter* (तसल्ली देने वाला) तथा *Consoler* (सुखदायी) हैं।

हमारे पास यह जानने का कोई प्रमाण नहीं है कि यह शब्द (Paracletus) पैराक्लीटस ही था। यूहन्ना की लिखी हुयी मूल प्रति आज है नहीं और ईसाई विद्वान हर काल में अपनी समझ व इच्छा अनुसार इन्जीलों में घटाते, बढ़ाते तथा बदलते रहे हैं[१]

अब ज़रा यह भी देखें कि यूनानी भाषा ही में एक शब्द **पेरीक्लाईटास** (Periclytos) **भी है जिसका अर्थ है "नराशंस", "मोहम्मद", "प्रशंसित नर"!** यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी यदि किसी काल में पैराक्लीटस को बदलकर पेरीक्लाईटास कर दिया गया हो जब कि बाइबिल के अनुवादों में

---

(१) बाइबिल में हर युग में अपनी इच्छा के अनुसार ईसाई विद्वान परिवर्तन करते रहे हैं, इस के पर्याप्त प्रमाण स्वयं ईसाई शोधकर्ताओं ने प्रस्तुत किए हैं। किसी भी ऐसी बाइबिल की भूमिका पर आप एक दृष्टि डाल लें जिस में अनुवाद के साथ टिप्पणियां भी हों। आप को भी प्रमाण मिल जाएंगे। यह अलग से एक पूरी पुस्तक का विषय है परन्तु कुछ प्रमाण नमूने में हम पेश कर रहे हैं– (अंग्रेज़ी से हिन्दी)

> "विभिन्न हस्तलिपियों के बीच बड़ी संख्या में अन्तरों और मत भेदों में से (जॉन मिल ने १७०७ में ३०,००० का अंदाज़ा किया था), अधिकतर केवल नक़ल करने में भूल होने के कारण हैं। इनसे अधिक गम्भीर वह जानबूझकर किये गये परिवर्तन हैं जो लिपि बनाने वाली और उनसे पहले हस्तलिपियों के स्वामियों द्वारा किये गये। (यह वह व्यक्ति थे) जो अपने मूल शब्दों को किसी दूसरी अपनी पसन्द की हस्तलिपि या किसी मूल शब्द (Text) को किसी जाने पहचाने कथन, या विशेषकर किसी जाने पहचाने पाठान्तर (version) जैसे यूनानी सुरयानी या पुराने मिस्री इत्यादि के आधार पर ठीक करना या बेहतर करना चाहते थे.. ....।"
>
> *(Encylopedia Americana 1988 P. 698)*

घटाने बढ़ाने का क्रम चर्च द्वारा आज भी जारी है।

यूनानी भाषा में यह शब्द क्या था जिसे यूहन्ना ने अपनी इन्जील में लिखा था इसका सही अनुमान लगाने का एक उपाय और भी है। यूनानी भाषा हज़रत ईसा की भाषा न थी। उन्होंने जो शब्द बोला, वह सुरयानी में था जिसका अनुवाद यूनानी भाषा में करके यूहन्ना ने लिखा। यदि कोई प्रमाण सुरयानी भाषा के मूल शब्द का मिले तो वह अधिक मान्य होगा। सुरयानी भाषा फ़िलिस्तीन *(Palestine)* मे नवीं शताब्दी तक साधारण रूप से बोली जाती रही। और आठवीं शताब्दी के इतिहासकार इब्ने इस्हाक़ ने इस स्थान पर सुरयानी शब्द "मुनहमन्ना" लिखा है, जिसका अर्थ है "नराशंस", "मोहम्मद", "प्रशंसित"। नौवीं शताब्दी के इतिहासकार इब्नेहश्शाम ने यह व्याख्या की है कि "मुनहमन्ना" शब्द का अरबी परयायवाची "मोहम्मद" तथा यूनानी परयायवाची "पेरीक्लाईटास" *(Periclytos)* है। (स्पष्ट रहे कि नौवीं शताब्दी में लाखों की संख्या में यूनानी बोलने वाले भी मुसलमानों की प्रजा में थे और उनसे मुसलमान इतिहासकारों तक यह व्याख्या पहुँचना बिल्कुल स्वाभाविक है।

यह भी विचाराधीन रहे कि पैराक्लीटस *(Paracletus)* शब्द के तो स्वयं ईसाई विद्वानों ने अनेकों अर्थ बताये हैं जो कि हम पहले पेश कर चुके हैं परन्तु पेरीक्लाईटास *(Periclytos)* शब्द का एक ही अर्थ होता है और यह है "नराशंस", "मोहम्मद", "प्रशंसित नर"। स्वाभाविक यही मालूम होता है कि इन्जील में वही शब्द प्रयुक्त हुआ होगा जिसका एक अर्थ हो, न कि अनेकों अर्थों वाला शब्द पैराक्लीटस।

इससे यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि यूहन्ना ने अपनी इन्जील में, पेरीक्लाईटास अर्थात "नराशंस" के आने की घोषणा नक़ल की थी जो बाद में बदलकर पैराक्लीटस हो गया तथा अनुवादों में बहुत से शब्दों से बदलने के बाद तो उस का रूप पूर्णतयः बदल गया।

ईसा की "यह बात":

अग्नि (अहमद) के आने की सूचना ईसा मसीह ने दी थी, यह क़ुरआन बताता है–

और याद करो मरियम के पुत्र ईसा की यह बात जो उसने कही थी कि

"इस्राईल के पुत्रों मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का दूत हूं। मैं उस तौरेत की जो मुझसे पहले आयी, पुष्टि करने वाला हूं और मैं एक दूत का शुभ समाचार देने वाला हूं जो मेरे बाद आयेगा। उसका नाम "अहमद" है (कु० ६१:६)

ईसा मसीह की "यह बात" जो कुरआन याद दिला रहा है आप इन्जील में देख चुके हैं। पुनः देख लें। परन्तु इस बार "सहायक" शब्द के स्थान पर "नराशंस" पढ़ लीजियेगा।

और मैंने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है कि जब वह हो जाये तो तुम विश्वास करो। मैं अब से तुम्हारे साथ और बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझमें उसका कुछ नहीं"। (यूहन्ना १४:२९ व ३०)

परन्तु नराशंस (सहायक) अर्थात अग्नि (पवित्र-आत्मा) जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। (यूहन्ना १४:२६)

परन्तु जब वह नराशंस (सहायक) आऐगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात अग्नि (सत्य-आत्मा) जो पिता की ओर से निकलता है तो वह मेरी गवाही देगा। (यूहन्ना १५:२६)

तो भी मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह नराशंस (सहायक) तुम्हारे पास न आयेगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेजदूंगा। और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। (यूहन्ना १६:७:८,९)

मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात अग्नि (सत्य-आत्मा) आयेगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बतायेगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा। और आने वाली बातें तुम्हें बतायेगा। (यूहन्ना १६:१२,१३)

महर्षि अग्नि का तीसरा पद

यह भी प्रलय है:

--क्या आप को भूँचालों से पृथ्वी का दहलना प्रतीत नहीं हो रहा है?
--क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि मानव जाति के पापों के भार को अब यह भूमि और सहन न कर पाने के कारण फट पड़ने को है?
--क्या आप को चारों ओर से हा-हा कार का शोर नहीं सुनाई दे रहा और सभी की यह भयभीत आवाज़ें आप के कानों तक नहीं पहुँच रही है कि भागने के सभी रास्ते बन्द है?
--क्या आप को इन्सान के कर्मों के फल चारों दिशाओं में साक्षात रूप में नज़र नहीं आ रहे हैं?

यदि आप का चेतन बिल्कुल ही सोया नहीं हुआ है तो अवश्य ही आप ये सब सुन और देख रहे होंगे।
मनु के काल में जल प्रलय आई थी। वर्तमान युग में हम चारों ओर उस आग व ख़ून के तूफान से घिरे हुए हैं जिसकी सभी ग्रन्थों ने सूचना दी थी। धर्म की भाषा में इस का नाम नैमित्तिक प्रलय या क़यामत-ए-सुग़रा है यह सबी चिन्ह इस के प्रतीक हैं कि इस समय महर्षि अग्नि अपने तीसरे रहस्यमय रूप में परम पद् आसीन हो चुके हैं।

अग्नि का तीसरा पद:

वेदों ने बताया था कि अग्नि रहस्य खुलने के बाद वैदिक जाति, संसार का नेतृत्व करने के लिये फिर उसी प्रकार उठ खड़ी होगी, जैसे सृष्टि के आरम्भ में वह विश्व की नायक थी। अपनी इस पुस्तक में हम ने अग्नि रहस्य पर से परदा उठाने की कोशिश की है परन्तु अग्नि का सब से क्रान्तिकारी रूप, अग्नि का तीसरा सब से रहस्यमय रूप अभी अंधेरे में हैं। जब तक यह तीसरा रूप भी पूरी तरह प्रकाशित नहीं हो जाएगा, अग्नि का राज़, राज़ ही रहेगा। अपनी किसी आगामी पुस्तक में हम अग्नि के तीसरे रूप पर विस्तार पूर्वक चिन्तन करेंगे।

विस्तार तथा प्रमाण तो तब ही सामने आ सकेंगे परन्तु उस समय तक महर्षि अग्नि के तीसरे पद से सम्बंधित कुछ संकेत (बिना विस्तृत प्रमाणों के ही) प्रस्तुत हैं।[1]

महर्षि अग्नि के इस तीसरे पद का नाम उन का "परम पद" है। क़ुरआन में इसे "मक़ाम-ए-महमूद" कहा गया है।

अपने पहले पद पर अग्नि सृष्टि की उत्पत्ति का साधन बने।
अपने दूसरे पद पर, साक्षात रूप में प्रकट होकर, उन्होंने संसार को सद्‌मार्ग दिखलाया।
लेकिन......
शक्ति का प्रयोग अभी तक नहीं हुआ था।

उन के ही हाथों पुरस्कार व दण्ड मिलेंगे:

ईश्वर की ओर से सभी प्रमाण पूरे हो जाने के बाद भी यदि मानव जाति सत्यधर्म को समझने के लिए तैयार न हो तो यह भली प्रकार समझ लें कि वह महा दयावान होने के साथ साथ सर्वशक्तिमान भी है। शक्ति के प्रयोग के लिये ही उसने अग्नि को उस के तीसरे पद पर स्थापित किया है।

महर्षि अग्नि ईश्वर की प्रदान की हुई अलौकिक शक्तियों सहित, इस समय अपने परम पद पर विराजमान हैं।
अब राम राज्य स्थापित होगा।
अब ख़ुदा की बादशाहत क़ायम होगी।
अब ***Kingdom of God*** आएगी।
कलियुग अवश्य जाएगा। यह क्रान्ति अवश्य आएगी।
आदिग्रन्थों से अन्तिम ग्रन्थों तक सभी ने इस की सूचना दी है।

वास्तविक 'महाभारत' जिसे हदीस में "गज़वा-ए-हिन्द" कहा गया है, अभी होना शेष है। यह देवासुर संग्राम, सत्य-असत्य का अन्तिम युद्ध अभी होना बाक़ी है।

(१) स्पष्ट रहे कि ये संकेत, अग्नि के तीसरे पद, के वेदों में वर्णन पर आधारित हैं। क़ुरआन के प्रकाश में हम आइन्दा इन का निरीक्षण करेंगे।

इस क्रान्ति की ओर क़दम बढ़ाने के लिए
महाभारत में सत्य की सेनाओं की ओर से भाग लेने के लिए, और—रामराज्य स्थापित करने वालों में सम्मिलित होने के लिए आप को चारों ओर से आमन्त्रित किया जा रहा है।
चेतना को जागृत करके सुनने की चेष्टा कीजिए।

वेदों की आवाज़ आप को आ रही होगी।
तौरेत की पुकार आप सुन रहे होंगे।
इण्जील निमन्त्रण दे रही है।
क़ुरआन दावत दे रहा है।
इस सौभाग्यपूर्ण निमन्त्रण को हँसी ख़ुशी स्वीकार कर लीजिए। वरना—महर्षि अग्नि ही को उन के परम पद से ईश्वर उन लोगों के नाश का साधन बनाएगा जो अवज्ञाकारी होंगे। वैसे ही जैसे कभी, अपने प्रथम पद पर, अग्नि ही उन की उत्पत्ति का साधन बने थे।

वेद	क़ुरआन
परमेश्वर ने सत्य, असत्य को समझकर सत्य को असत्य से पृथक कर दिया और आदेश दिया कि सत्य को मान लो और असत्य को न मानो (यजुर्वेद १७:१९)	....हिदायत (सदमार्ग), गुमराही (अंधकार) से स्पष्टतः अलग हो चुकी है तो जो कोई असत्य का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान लाए उस ने बड़ी मज़बूत रस्सी थाम ली (क़ु० २-२५६)
ईश्वर के नियम नहीं बदलते ऋग्वेद (१:२४:१०)	और तुम अल्लाह के क़ानून में कोई तबदीली नहीं पाओगे (क़ु० ४७ २३)

६
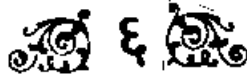
सर्व-धर्म समान– झूठ युद्धविराम

धर्म के नाम पर घृणा फैली, हिंसा बढ़ी, मानव जाति विभाजित हुई। घबराकर कुछ लोग पुकार उठे "लड़ाई बन्द करो। सभी धर्म समान हैं" एक त्रुटि पर परदा डालने के लिये यह एक और भ्रान्ति को जन्म देना है। "सर्व धर्म–समान" का नारा सबसे बड़ा झूठ है। यह तो घृणाओं के मध्य हर उस आशा को थपक कर सुला देगा जो सभी मतों का खण्डन करके एक सतधर्म स्थापित करने के लिये जागेगी। धर्म दो नहीं हो सकते। धर्म अनेक नहीं हो सकते। अनेक धर्म समान तो कभी नहीं हो सकते। ईश्वर एक है तो धर्म एक ही होगा। सर्वधर्म समान झूठी जंगबन्दी है। जंग का मूल कारण समाप्त करना होगा। यह समझना होगा कि यदि धर्म एक नहीं है तो युद्ध इन्सानों व इन्सानों में नहीं बलिक खुदा व इन्सान के बीच हो रहा है। मनुष्य को ईश्वर से युद्ध समाप्त करना होगा। मां बाप से सीखे हुये धर्म को त्यागना होगा। ईश्वर के धर्म को स्थापित करना होगा। वही एक धर्म जिसकी सभी ईश ग्रन्थ गवाही देते हैं

यदि कुरआन वेदों की गवाही देता है तो मुसलमान को उसमें आस्था रखने में आपत्ति क्यों है?

यदि वेद अन्तिम देवदूत की पुष्टि करते हैं तो हिन्दू को इन्कार क्यों है?

यदि तौरेत व इन्जील भी वेद व क़ुरआन दोनों के मान्य एक ईश को सिद्ध करते हों तो वेद व क़ुरआन के अनुयायियों का विश्वास और दृढ़ क्यों नहीं हो जाता?

तुलनात्मक अध्ययन की पहली किस्त हम यहां सम्पन्न कर रहे हैं। सभी धर्मों में मान्यताओं की तुलना अभी हम ने नहीं की है। इस शृंखला के अगले भाग में करेंगे :-धर्म लाने वाले, देवदूतों को जब सभी मान रहे हैं तो धर्म भिन्न भिन्न कैसे

हो सकते हैं?

प्रथम जीवात्मा, अग्नि, अहमद, पवित्र-आत्मा, हम सभी के पितामह, आत्मा लोक में हमारे गुरु थे। हमारे पास ईश्वर के देव दूत थे। सभी ईश ग्रन्थ उन्हें मानते हैं।

पृथ्वी पर पधारने वाले पहले मनुष्य हम सब के पिता आदम को सभी ईश ग्रन्थ पहला देवदूत मानते हैं।

संसार के जल प्लावन में संहार के बाद सृष्टि का मनु, (नूह, NOAH) व उनके साथियों द्वारा पुनः प्रारम्भ हुआ। मनु में सभी ईश ग्रन्थों की समान आस्था है। अन्तिम देव दूत नराशंस, ह० मोहम्मद स०, वह नबी, *Periclytos* की सभी ईश ग्रन्थ पुष्टि करते हैं। उनके आने की सभी को प्रतीक्षा थी। वह आये, चले गये। प्रतीक्षा करने वालों ने उन्हें न पहचाना। अब पश्चाताप करें। अपने अपने मान्य ईश ग्रन्थों में वर्णित चिन्हों से उन्हें पहचान कर उन्हें स्वीकार करें।

ह० मोहम्मद स० ने ह० मूसा व ह० ईसा की गवाही दी थी, उनकी पुष्टि की थी। यह घोषणा की थी कि मूसा व ईसा में आस्था न रखने वाला ह० मोहम्मद स० का अनुयायी नहीं रह सकेगा। सभी के मान्य देव दूत की गवाही सब के लिए पर्याप्त होनी चाहिए।

पुरखों से सुनते आ रहे थे, वेद हिन्दुओं के हैं। जब कुरआन उन की ओर भेजता है तो वह केवल हिन्दुओं के नहीं, इन दो धर्मों के बीच सभी धर्मों के मानने वालों के हैं। पूरे विश्व के हैं।

हिन्दुओं ने वेदों को अपने घरों से निकाल दिया है। मुसलमानो आगे बढ़ो। ईशवाणी को नष्ट न होने दो। यह कुरआन के परवरदिगार की ही वाणी का बन्द खजाना हैं। यह ख़ज़ाना खोज निकालो, इसे धूल भूल से शुद्ध करो। यहां मेरा तेरा का भेद कैसा?

पुरखों ही से सुनते आ रहे थे ह० मोहम्मद स० मुसलमानों के हैं। मुसलमान जाति तो मोहम्मद स० के संसार में आने के पश्चात अस्तित्व में आई। ह० मोहम्मद स०, अहमद के रूप में, अग्नि के रूप में पहले भी थे। मुसलमानों से पहले वह हिन्दुओं के थे। पितामह थे, सारी मानव जाति के थे। यदि मुसलमान आज उन को विभाजित करना चाहता है, तो हे हिन्दुओ आगे बढ़ो। पितामः का विभाजन न होने दो। वह तो अति प्राचीन वेदों का मुख्य विषय हैं। यहां कुरआन व वेद का मत एक हैं। मेरा या तेरा मत भेद कैसा?